॥ श्रीः ॥

डबलबीबी

(एक हिन्दूगार्हस्थ्यरोचक उपन्यास.)

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस--खेतवाड़ी,

बंबई.

श्रीः ।

डबल बीबी ।

(एक हिन्दूगार्हस्थ्यरोचक उपन्यास)

जिसको

गहमरनिवासी बाबू गोपालरामद्वारा निर्मित कराय,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई .

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया.

पौष संवत् १९५८, शके १८२३.

भूमिका।

आजकल जगत्में लड़का होनेकी आशासे बहुतसी माता अपने लड़के का और बहुतसी सती स्त्रियाँ अपने स्वामीका दूसरा विवाह करके अपने ऊपर आफत लाती हैं। इसमें भी उसीका एक उपदेशपूर्ण आख्यान है। इसको पढ़कर ऐसे अनर्थ करनेवालोंमें से कुछ भी सुधरेंगे तो हम अपना परिश्रम सफल समझेंगे।

१-८-९९ } गोपालराम गहमरनिवासी
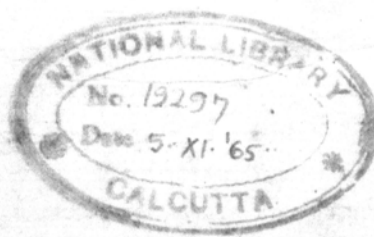
श्रीगणेशाय नमः ।

डबल बीबी ।

पहिला अध्याय ।

इतना करके भी गिरजा सासको खुश न करसकी । उमरमें गिरजा छब्बीस बरसकी थी, लेकिन देखने से कोई उसे सोलहसे अधिकका नहीं कह सकता । गाँवकी बहुतसी सुन्दरियाँ गिरिजा के रूपसे डाह करती थीं । टोला महल्लाकी रमणीमण्डलीमें गिरिजाकी सुघराई बखानी जाती थी । सर्वत्र इसके रूपकी बड़ी समालोचना हुआ करती थी । लेकिन इस बड़ी समालोचनासे गिरिजाका रूप मलीन नहीं बरन् और उज्ज्वल होताजाता था ।

गिरजा सिर्फ रूपवतीही नहीं थी । उसकेऐसी गुणवती नारी भी संसार में दुर्लभ है । गिरजा घरका काम काज अकेले करती है । जगत्में नारी जातिको जो कुछ जानना चाहिये गिरजा सब जानती है । केवल झगड़ा कलह किसको कहते हैं यह गिरजाको नहीं मालूम था ॥

देवता ब्राह्मण और गुरुजनों में गिरजाकी अचला भक्ति थी । उसका स्नेह और दया इतनी असाधारण थी कि, कभी कभी वह अयोग्य पात्रमें भी पड़जाती थी । गरज कि, गिरजा रूपमें लक्ष्मी, गुणमें सरस्वती, पतिभक्तिमें सावित्री, भोजनकार्य्यमें अन्नपूर्णा थी । लेकिन हम पहलेही कह आयेहैं इतना गुण होते भी वह सास महारानी को खुश नहीं करसकती । इसका सबब यह कि, गिरजा बन्ध्याथी उसको लड़का बच्चा नहीं होताथा । गिरजाके स्वामीका नाम था रामप्रसाद—नारायणसिंह यह एक कुलीन क्षत्रीथे इलाहाबादमें ह्वनहार्ट कम्पनीके यहाँ इनकी नौकरीथी अस्सी रुपये तनख्वाह पर किरानीका काम करतेथे अपने गाँवमें इनको कुछ जर-

जमीदारीभी थी घरमें खरचबरचकी कुछ तङ्गीथी नहीं, संसारका सब काम काज सुखसे चलाजाताथा यदि गिरजा यथासमय पुत्रवती होजाती ।

पुत्रकेलिये रामप्रसाद उतने लालायित नहीं थे जितनी उनकी माताने इसकेलिये देवी देव मनायेथे, कितने देवालयों और मन्दिरोंमें नक-दारियाँ की थीं कितने भँडेरिये और ज्योतिषियोंके पास ठगीगयीथी गिर-जाको कितने साधु फकीर और संन्यासियोंकी खाक भभूतखिलायीथी, इसका हिसाब नहीं था लेकिन जब इतना करकेभी कुछ फल नहीं हुआ तब माताका सब कोप उसी आदरकी पतोहूपर झड़ने लगा बेटेका स्नेह सब भूलकर वह पतोहूपरही तरहतरहके तानेबाने और कटूक्ति करनेलगी । यहाँतक कि, बेटेको दूसरा व्याह करनेकी बातभी उठायी ।

बेटा रामप्रसाद–नारायण अंग्रेजी पढे हैं फिर वह अपनी प्यारी गिरजाको प्राणसेभी अधिक चाहतेहैं इस कारण वह माताकी बातपर किसीतरह राजी नहीं हुए इसबातपर अक्सर मा बेटेमें झगड़ा कलह और कहासुनी होनेलगी ।

रामप्रसाद का मकान इलाहाबाद के पासही करचना स्टेशन के नजदीक एक गाँवमें था । घर पासहोने के कारण वह सदा रोटी खाकर आफिस जाते और आफिस बन्द होनेपर शामको चले आते थे । एक दिन रविवारको सन्ध्यासमय वह घरमें बैठे थे । न जाने उनकी मा कहां से आकर कहने लगी–"अहारे ? उस महल्ले के राव साहब की छोटी पतोहू को कैसा सुन्दर लड़का हुआहै कि, देखेसे आँख जुडाजाती हैं । एक हमारा कर्म है कि, पतोहू बूढी बहिला होगयी नातीका मुहँ देख-नाही नसीब नहीं हुआ ऐसी बांझके साथ बेटाका हमने व्याह किया कि, एक भी साध नहीं पूजी । यह बँझेलवा मरती भी नहीं कि, बेटाका दूसरा व्याह करके साध मिटाती । अरे फाँसी लगाके काहे नहीं मरजाती रे बँझिया ! फाँसी लगाके मर जा नहीं जहरखाके मर जा । "

इसी तरह मुहँ बनाबनाकर पतोहूपर वचनबाण बरसाने लगीं ऐसी

बरता बहुधा अब रामप्रसाद के आगे ही हुआ करती है । रामप्रसादने बहुत सहा है लेकिन् सहने की भी एकसीमा होती है । आज न जाने क्यों रामप्रसाद की सहनशीलता की सीमासे बात बाहर होपड़ी । और नलकर बोले-"अरे माई ! यह तेरी कैसी अक्लहै । अगर वह बाँझहै तो इसमें उसका क्या गुनह है ? इसके वास्ते उसको इसतरह बार बार गाली देना अच्छा नहीं है । अगर उसका कुछ कसूर हो तो उसे गाली दे लेकिन् बेगुनाह नाहक किसीको गाली आली देना क्या ?"

रामप्रसादने इसके पहले स्त्रीकी ओरसे माताको जाहिरातकी बात नहीं कहीथी आज अकस्मात् बेटेके मुहँसे ऐसी बात सुनकर मा पहिले कुछ देरतक चुपरहीं । लेकिन थोड़ेही देरपर पतोहू को छोड बडे गरजसे बेटे पर पड़ी । बेटेने जहाँतक बना माताका मान रखनेकी तदबीर की मातासे जितना बना बेटेकेलिये खूब कुवचन कहे । लेकिन उससेभी माका कोप नहीं गया अन्तमें अपना सब रक्खा हुआ रुपयां पैसा गरमकपड़ा लेकर उसी शामको अपने मायके जानेको तैयारहुई । गिरजाने सासका पाँव पकड़ कर बहुत रोका और रोरोकर मुआफी माँगी लेकिन उनकी गरमी नहीं गई वह सब कुछ लेकर बाहर होगयीं । गिरजा उनके पीछे २ कुछ दूरतक गयी लेकिन सासको तोभी लौटा न सकी तब जल्दीसे घर लौटकर स्वामीको कहा " बैठनेसे नहीं बनेगा जल्दी जाव, गुस्सा होनेपर माजीका चित्त ठिकाने नहीं रहता यह बात तो जानतेहीहो ? "

रामप्रसादने कहा-" सब जानतेहैं लेकिन हमको अब यह बातें अच्छी नहीं लगतीं फिर इस श्यामको वह जावेगीही कहाँ ? "

गिरजा-"रातहोनेहीसे ऐसा समझकर चुप नहीं रहा जाता हजारहुआ मा ही तो हैं । तुम जल्दी जाव देर नहीं करो । "

निदान रामप्रसाद माकी तलासमें चले यहाँ गिरिजा बैठे २ न जाने क्या सोचनेलगी । सोचते सोचते न जाने कहाँसे अन्धकारने आकर उसके हृदयमें घर किया इधर घरमेंभी धीरे२अन्धकार बढनेलगा लेकिन गिरजा

का इनबातोंकी ओर खयाल नहीं थी, वह दुःखी मनसे अपने नसीबकी बात सोचरही थी । इतनेमें ठाकुरबाड़ीकी आरतीकी आवाज आयी । गिरजा चौंक उठी । अबतक उसके घरमें सँझवत नहीं दीगई थी । दो बूँद आँसू गिराकर गिरजा सँझवत देनेचली ।

चिराग जलाने पीछे रामप्रसाद लौट आये। उन्होंने आतेही कहा "वह हमारे कहनेसे नहीं लौटी । हमने बहुत मनाया जोनाया वह किसी तरह नहीं मानती । "

गिरजाने आग्रहसे पूछा—"तो क्या इसीरातको वह मायके चलीगयी?"

रामप्रसाद—" नहीं, वहाँ नहीं गयी । रेखा फूआके यहां ठहरीहै ।"

यह" रेखा फूआ" रामरेखा मिसराइनका अपभ्रंश है यह एक मिश्र-बंशकी विधवा बुढ़िया हैं इनको गाँवके सबलोग रेखा फूआ कहके पुकारते हैं उसका मकान रामप्रसादके मकानसे थोड़ी दूर था । इसीकारण गिरजा कुछ बेफिक्रसी होकर सांसारिक काममें लगी ।

दूसरा अध्याय ।

रातको नवबजते २ गिरजाने स्वामीको भोजन करादिया । रामप्रसाद बिछौनेपर लेटकर गुड़गड़ी बजाने लगे । माताके साथ कहासुनी करने बाद बेटेका मन बहुतही दुःखी हुआहै । पतोहू भी बहुत उदास है । इसीसे आज स्त्री पुरुषमें कुछ आमोद प्रमोदकी बात नहीं हुई । दोनों चुप चाप रहे थोड़ीदेरबाद गिरजाने कहा—" तुमसे मैं एक बात कहूँगी । "

रामप्रसादने उसकी बातपर आग्रह करके कहा—" क्या बातहै कहो ?"

गिरजा—" कहें तब जब हमारी बात रक्खो ।"

राम०—' रखनेकी बात होगी तो जरूर रक्खेंगे । काहे तुम्हारी बात क्या कभी हमने टालीहै ?"

गिरजा स्वामीके चरणोंमें पड़कर रोते २ बोली—' तुम एक और व्याह करलो । माजीका दुःख अब नहीं देखाजाता ।"

रामप्रसादने धीरे २ गिरजाको छातीसे लगाकर कहा—" नहीं उससे तुमको बड़ा दुःख होगा।"

गिरजा—" जब माजी खुश होजायँगी और पहलेकी तरह हँसी खुशी से बोलने लगेंगीं तो मैं वह सब दुःख सहलूँगी।"

राम०—" नहीं! तुमको लड़का नहीं होता इसबातपर मा जो तुमको बकती झकतीहै यह बहुत अनुचित बातहै। मैं इसे नहीं सहसकता। इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं है।"

गिरजाने स्वामीकी गोदसे शिर उठाकर आँसू पोंछा और कहा—"नहीं माजी जो हमको बकती हैं उसमें हमारे नसीबका सब दोष है माजीका कुछ कसूर नहीं है। जब मैं अढ़ाई बरस कीथी तभी मेरी मा मरगयी। माका प्यार मुझे नसीब नहीं हुआ। लेकिन तुम्हारेसाथ व्याह होनेही से मेरा वह दुःख जातारहा। आज मानों मा मेरे नसीब दोषसे मुझे ऐसा बकती है लेकिन इस बारह बरससे जो उन्होंने मुझे पालाहै और जिसतरह से जतन कियाहै वह मैं नहीं भूल सकती।"

राम०—" वह सब माका स्वभाव क्या मैं नहीं जानता? लेकिन आज कल लड़का नहीं हुआ—लड़का नहीं हुआ करते २ उसका मगज इतना खराब होगयाहै कि, कुछ कहते नहीं बनता।"

गिरजा—" मैं तो इसीवास्ते कहतीहूँ कि, एक और व्याह करलो।"

रामप्रसादने इसबार गिरजाके मुँहकी ओर कुछ देरतक देखकर कहा-" नहीं प्यारी! तुम जैसी स्त्री घरमें रहते मैं और व्याह करूँगा? लड़का नहीं हुआ तो न सही हमें लड़का नहीं चाहिये।"

गिरजा—" तुमको नहीं चाहिये लेकिन मा तो चाहतीहैं माका चाहना भी तो पूरा करना तुम्हें चाहिये।"

राम०-" और तुम्हारे लिये भी तो मुझे दुःख नहीं सिरजना चाहिये?"

इतना कहते कहते रामप्रसाद की आँखें अँसुआ गयीं। कण्ठ भारी

हो आया मुँहसे और कहते नहीं बना तब गिरजाने कहा—" माकी बरा-बरी में हमें क्यों लेतेहो ? मैं तो उनकी दासीहूँ । तुम तो आजही चाहो तो तुम्हारेवास्ते बीसों स्त्रियाँ तैयार हैं मैं उनम से एक दासी हूँ । शास्त्रमें लिखाहै कि, माता पिताको खुश करनेसे सब देवता खुश होतेहैं । जो बेटा मा बापको खुश नहीं कर सकता वह और किसी पुण्य कर्मका फलभागी नहीं होता । उसका कभी भला नहीं होता । जबतक माको खुश नहीं करोगे तबतक मङ्गल नहीं है । जब तुम्हारे अमङ्गलकी बात है तब मैं भला क्यों चुपरहूं ?"

रामप्रसादसे अब न रहागया । रोकर कहनेलगे—" तुमको हमारे अमङ्गलका सोचहै और मुझे तुम्हारे अमङ्गलका नहीं ? क्या मैं ऐसा पाखण्डीहूं ? "

स्वामीका आँसू पोंछकर डबडबयीं आँखोंसे देखतीहुई गिरजाने कहा—" माका दुःख तो देखना चाहिये ? "

राम०—" मा बेअक्लहै उसको समझ होती तो तुम्हारे साथ ऐसा काहे को करती ? "

गिरजा—" वह हमारे नसीबकी बात है उसे मत उमाडो । बात यह कि, तुमको एक लड़का होगा तो माही नहीं हमकोभी तो खुशीहोगी । तुम माजीके एकही लड़केहो । तुमको लड़का नहीं हुआ तो मानों ससुरजीका वंशही नहीं रहेगा माजी कुछ अनुचित नहीं कहती हमको खाली अपने सुखकी ओर नहीं देखना चाहिये । "

राम—" वंश नहीं रहनेसे नुकसान क्या है । "

गिरजा—अकचकायी और आँसू पोंछकर बोली " क्या ? ऐसीभी कोई बात कहता है ? पितरोंको पानी कौन देगा ? "

रामप्रसादने मुसकुराकर कहा—" अगर उसस्त्रीसेभी लड़का नहीं होतो पितरोंकी क्या हालत होगी ? "

इसबातसेभी गिरजा चुप न रही उसी वक्त उसने कहा आगे क्या होगा सो कोई नहीं जानता। पुत्र हुए बिन किसीका पितृऋणसे उद्धार नहीं होता तुमको उसके वास्ते तदबीर करके अपने भरसक तो देखना जरूर चाहिये।"

इस जवाबसे रामप्रसाद चुप होगये। थोड़ी देरतक न जाने क्या सोचते रहे फिर लम्बी सांस लेकर बोले "अगर दूसरा व्याह करनेसे तुमकोभी खुशी है तो खैर तुम्हारी खुशीसे हम करलेंगे लेकिन यह व्याह स्त्रीलाभके लिये नहीं केवल पुत्रलाभके लिये होगा। किसी जन्ममें हमको तुम्हारे सिवाय कोई दूसरी नारीकी कामना न हो हम सदा परमेश्वरसे यही माँगतेहैं?"

गिरजाने आनन्दके मारे गद्गद होकर कहा—"मुझे अपनी दासी समझकर सेवामें तुम राखियो एक नहीं सौ व्याह करलो तो भी हमको कुछ चिन्ता नहीं है।"

रामप्रसादसे अब रहा नहीं गया। बारबार स्त्रीका मुहँ चूमने लगे। और खुशी मनसे बोले "प्यारी तुम्हारे इन्हीं गुणोंमें पितरों के पिण्डलोप वा नरकको नहीं डरता। न माताके बकने झकने और रोने गानेकी परवाह करता।"

इसी तरह वह रात कटी सबेरा होतेही गिरजा स्वामीको सासके यहाँ जानेकी बात कहकर घरके कामकाजमें लगी।

आज सोमवारहै सबेरेही खा पीकर रामप्रसादको कामपर जाना चाहिये प्रातःक्रिया करतेही उनको आठ बजगये। इसकारण वह माताको बुलाने नहीं जासके। जल्दी जल्दी भोजन करके स्टेसनपर आये और गाडीमें बैठकर इलाहाबाद आफिसको रवानाहुए।

गिरजा काम काजसे फुरसत पायी और सासको बुलानेके लिये पहिले एक नौकरानीको भेजा। थोड़ी देरबाद उसने आतेही गरजकर कहना शुरूअ किया—"काहें बबुई? हमन कां गरीब आदिमी हई तेहीं सें कां बांपरे बांप,। हमें देखां केऊतों खंखुँओं दौरीं। कांहमनीं कां ईजत नाई हँउएं कां

दां दां ! अच्छा सूरंजनारांयन जानें हँमकें ऐसें नहींन गूंनलीं हंतं उनकरं गुंमान नाहीं रहीं । "

नोकरानीसे और कुछ पूछते नहीं बना तौभी वह अपना गला तेजही करतीगयी । गिरजाने रोकर कहा–"अरे चुपरे झुनियाँ चुप रह इतना चिचियाती काहे ? माजी नाराज होके गयी हैं उनको बुलाने गयीथी इसीसे वह दिकिया दौड़ी होगी गुस्सामें कुछ कहीं तोका तेरे शरीरमें फोड़ा पड़गया जो इतना गरजनेलगी । "

दासीका नाम झुनियाँथा । सब शब्दोंको नाककी सानपर चढ़ाकर बोलना उसका स्वाभाविक था अबकी सुरबढातीहुई फिर निनिनाकर बोली–"हँ होहँ हँस जाँनीऊँ हिंहनीहँ बीसंजो तोहरोंमनें आवेंत देतहँ । गरींब पँर संब केंहूं चोट करेलाँ "

गिरजा–"चाहे तुम जौनीसमझो मैं तुम्हें कुछ ओनइस नहीं कहती।"

हाथहीलातीहुई मुनिया फिरबोली–" आँनाहींकें कहेंना तूँत इमीरींत छिनकंत बाँटूं केंहूकं पेंट कुंलकुंलाकेई जुंरुंगे । "

गिरजा–"अच्छारे अच्छा तोको भूख लगीहै तो सीधे काहे नहीं कहती। आ भात देतीहूँ खाले । "

झुनियाँ मालकिन के आगे बहुत मुँह नहीं चला सकती थी क्योंकि एक बात कहनेपर वह दश सुना देती थी लेकिन झुनियाँ भी चुप रहनेवाली चीज नहीं है वह सास का बदला पतोहू से मय सूदके चुकालेती थी । इसी तरह आज झुनियाँका इस घर में तीन चार बरससे गुजारा होरहाहै । ऐसाए हो तो इसका किसी घरमें एक महीने अधिक रहना नहीं होता ।

लेकिन आज झुनियाँ अपने अपमान का पूरा बदला गिरजा से पाये बिना भी शांत होगयी । क्योंकि पेटमें भूखदेवी का चिराग जल रहाथा इससे अपमान न जाने कहाँ डर कर भागगया । झुना आदि सब को खिला पिला कर ठीक दुपहरियामें गिरजा सासकी खोज में चली ।

तीसरा अध्याय।

गाँवकी दक्षिण सीमापर रेखा मिसराइनका घर है रेखाका जगत्में कोई जीता नहीं है लेकिन वह अपने एक बहन बेटेकी बात सदा कहाकरती है। सुनते हैं रेखाकी बहनके लड़के इलाहाबादके मुट्ठी गञ्ज में रहतेहैं लेकिन हम लोगों ने इलाहाबादमें उनको कभी नहीं देखा सुना न उनके धनसम्पत्तिका पता पाया। मिसराइन एक छोटेसे घरमें खाना बनातीथी और उसीसे लगे एक खँडहरमें लिया पातफेंकतीथी रेखाको धननामें कठवत और बंसनापें फूका जो जो कुछ कहिये सो नहींथा। खरीद विक्री दर दलाली अगुआई वगैरः सब काम रेखा करती थी। और इन्हीं सब रोजगारों से उसका गुजारा होताचला जाताथा। रेखामें एक मोहनी शक्तिथी उससे वह बाल वृद्ध वनिता सबको हाथमें रखती थी। एक अनाथा विधवा होनेपर भी गाँवमें उसकी अच्छी चलतीथी। लेकिन रेखा किसी गरीब दुखियाकी दो स्त्री नहीं रखती थी जिनके घरमें लक्ष्मी है उन्हींके साथ रेखाका स्नेह सौहृद्यहै।

इसीकारण रामप्रसादकी मा से रेखाकी गाढ़ी मिताई थी। जब वह बेटे से बिगड़कर रेखाके घर आयी तब उसने बड़े आदरसे उनका स्वागत किया था उनका मुहँ देखतेही चतुरा रेखा ताड़गयीं थी कि यह घर से बिगड़कर आयी है। जब माताके पीछे लगे रामप्रसाद पहुँचे और मा बेटे में जो वहाँ खुल्लमखुल्ला बातें हुई उनसे माता पुत्र के बिगाड़का कारण भी रेखाने अच्छी तरहसे समझलिया था बहुत कुछ विनय करके भी जब रामप्रसाद मा को घर न लौटासके तब उस दिन वह रेखाहीके घर रही।

दूसरेदिन दो पहरको रेखाके घर गाँवकी अनेक रमणियों का समागम हुआ। उनमें नवीना, प्रवीणा और वृद्धा सब तरहकी स्त्रियाँ थीं। भोजन के बाद रेखाके घर सदा इसतरह स्त्रीरत्नोंका समाज लगता था। घर किसी मरद मानुसके न रहनेसे मानों गाँवभरकी रमणियोंकी यह श्रद्धा होगईथी।

गाँवके स्त्रीमहल की समालोचना इसी सभामें होतीथी। आजभी उसीतरह की बातें चलने लगीं। समागता स्त्रियोंमें कोई २ यहाँ भी काममें लगी हैं। कोई बुढ़िया रूई नीछतीहुई गप्पकर रही है। कोई प्रवीणा सीतीहुई चित्त देकर उसे सुनरही है। एक नवीना गुलूबन्द बीनरही है। उसके पासही बैठकर एक बुढ़िया उसकी शिल्प चतुराई निहार रही है। और एक प्रौढ़ा अपने लड़केको स्तनपान कराती हुई गाँवके एक क्षुद्र पारिवारिक घटनाको पहाड़ बनाकर बातका बतंगड़ कररही है। लेकिन अबोध शिशु उस घटनाको न समझ कर बीच बीच में उसे विघ्नकर रहाहै। और इसकारण वह स्नेहमयी मातासे ताड़ना और हलका पतरा थप्पड़भी भोगकर रहाथा। और स्त्रियोंमें एक बीचमें बैठी सुपारी कतर रहीथी बाकी सब बेकाम बैठीथीं।

इतनेमें एक और प्रवीणा रोती २ यहां आपहुँची। उसके आतेही गृहकर्म्म, कथा कहानी और समालोचना सब बन्द होगई। सबकी सब चुपचाप प्रवीणीकी ओर देखने लगीं। रेखाने सबसे पहले सवाल किया— "काहे खेदुकी मा काहे ?" .

इस सवालके बाद सभासे सवालपर सवाल होनेलगे "अरे खेदुकी महतारी काहे रोती है ?" "खेदू अच्छा तो है न ?" "खेदुवोको कुछ हुआ?"—"जानपड़ाहै होतेही मरगयाहै ?" "कि मराही निकलाहै ?"

खेदूकी माने समझा अब किसका २ जवाब देना चलो रोनेहीकी मात्रा दूनी करदो। बस अब क्या था उसके रोनेसेही सबका जवाब होगया। सबने समझ लिया कि, कोई दुःखदायी घटना घटी है।

चारों ओर से "ओहोरे !" "अरे रामरे !" "भगवान् ऐसा निर्दयी है रे ?"—"रो मत रो मत।"—"क्या करो बहन सब सहनाही होताहै" इत्यादि सम्बोधन वाक्य बरसने लगे। किसी किसीने खेदुकी माके साथ अपनी आँखों से भी आँसू बहा दिखाये। लेकिन अबतक खेदूकी मा के रोनेका ठीक सबब किसीने नहीं जानाथा।

कुछ देरतक रोने का सुर पूरा करके उसी आवाज में खेदूकी मानें शुरूअ किया। "अरे बहन देख तो नसीब अबकी भी बेटीही आयी है।

इतना कहने पीछे फिर हों हों करके रोउठी। रेखा विपद् जान शङ्कित हो सुर मिलाकर बोली– " अरे! दो हो चुकी थीं फिर उसपर भी बेटी हायरे काम जहाँ जहां लात लाई तहां तहां नरम। "

पाठक! रेखाने जिस सुर में कहा उसको हम लिखने में समर्थ नहीं हैं लेकिन इतना कह सकते हैं कि किसी अपने के मरेपर भी उसको ऐसा दुःख न होता जैसा इस वक्त उसने जताया। क्याहो तभी तो वह सबको अपनाये रहती थी।

खेदूकी माको रेखा की बातें ऐसे मनकी हुई कि, उनका शोकसागर फिर लहरा उठा। अब रोरोकर कहने लगी–" इतनी दवा। खिलायीं इतने देवी देवके यहां नकदरियाँ कीं तौभी लड़का नहीं हुआ। या भगवान् ऐसा नसीब किसका होगा! "

इतना करतेही रुनिया नामकी एकप्रौढा बोल उठी–"हाँ रे बहन हाँ! पहलेही बेटी भयेसे कमर भसकजाती है फिर तो ऊपर तीन तीन बेटी होगयीं अब भला इस विपद्‌का क्या ठिकानां है? "

रूनाका सुर थम्हतेही थम्हते उसीके पासकी बैठीहुई कदमा फूआ बोली–"अरे काहेहो? बेटी का माहुरहै। आजकालके जमानामें बेटासे को सुख पावेहै। हमारेही तो लड़का है कौन सुख मिलताहै भला मरते २ भगवान्‌ने भगियाको हमारे पेटमें उपजायाथा जिससे आजतक जिनगी कटीजाती है और जातबची है नहीं न जाने कवना कवना जातिका भातखाती। "

खेदूकी माने फिर आंसूपोंछकर कहा–"ओ फुआ? कहां की बात करतीहो? तुम्हारे जैसा नसीब हमारा कहाँ इन तीनको व्याहते व्याहते ता खानपर कराइन नहीं बची। घर भीत सब बिकजाई। "

इतनी देरतक रामप्रसादकी मा अपना दुःख दबाये बैठीथी अब

उन्होंने अपना पुरान उघारा और कहने लगी—" अरे रामरे ! हमारे राम प्रसादको एकठोबेटियो होजाती तो मैं उसीसे सन्तोष करती । "

रेखाने तुरंत लम्बी साँसलेकर कहा—" नहीं रे बहन नहीं । बेटीके वास्ते वर न मांगियो ! जब रामप्रसादके हाथमें लड़का लिखाहै तब फिकर क्या है । लड़केका व्याह करदे देख बरस दिनबाद नाती पाती है कि नहीं? "

खेदूकी माने अब आँसूका सोता छोडदिया और साथ ही साथ अपनी लम्बी कथा कहनेलगी—" अहारे ? हमारी पतोहूको कितना दुःख हुआ एकबार पँडितजीने पत्रा देखके कहाथा कि, लड़का जरूर होगा सो उसको भी हम लोगोंकी तरह पक्का विश्वास था। लड़केभी मिठाई बँटनेका भरोसा करके दालानमें दौड़ते कूदतेथे, खेदू बेटेका मुँह देखनेको खनभीतर आताथा खन बाहर जाताथा खन आँगनमें पहुँचताथा इतनेमें बच्चा गिरादयी। बड़ी सेयानीन ! उसने जाना कि बेटी कहनेसे क्या जाने पतोहू बेहोश होजाय झटकहदिया बेटा हुआ । बस लड़कोंने सच्च जानकर शंखबजादिया । बाहर सोहर उठनेलगा । खेदू मारे खुशीके फूलगया बचवा खुशी खुशी भीतर आया । मुझे सुनकर जो खुशीहुई वह मैं क्या कहूँ । दौड़कर भीतर गयी । रामराम ? वहाँ गयी तो वही फूटानसीब फिर बेटीकी बेटी । खेदूबो बेटा जानके आँख फाड़ फाड़ देखरहीथी । हमारे जातेही पूँछनेलगी काहे माह का हुआ हमको तो ठीकनहीं मालूम भया मैं बोलउठी तेरा जैसा नसीबहै वैसाही हुआहै । इतना कहतेही सरबनास होगया दादा ! "

रेखा—" अरे फिर सरवनास कैसा बहना इससे बढके और सरवनास क्या होगा ? "

खेदूकी माने आंसू पोंछकर फिर शुरूअ किया—" काकहींबहन ! खेदू बोले सुनतेही अचेत होगयी हमसे तो कुछबना नहीं बोही इसे अपाने मुँहपर पानीओनी डालकर चेतकराया । सबकी खुशीपर पत्थरपड़ा । सब अपने अपने घरचली गयीं । तब खेदूका सूखमुँहे देखके बहन वहाँ रहते नहीं बना इसीसे भागती आयी हूँ । "

रेखाने प्रबोध देकर कहा—"अरेरे ! वह दुःख का बहन देखाजाता है ? अच्छी बातकरी जो चली आयी ऐसी विपत्तमें बहन घरदुआर अच्छा नहीं लगता। रेखाने रामप्रसादकी मा दुःखकेमारे घरसेनिकल आयी कलसे यहीं पड़ीहै। "

इतनेमें धीरे एकनयी स्त्री आकर वहाँ खड़ीहुई । उस समय सबकी आँखउसपर पड़ी। उसके साथमें एक और स्त्रीथी। लेकिन वह घरमें न आकर बाहरही खड़ी रही।

यहनयी आगन्तुका और कोई नहीं हमारे पाठकोंकी अपरिचिता वही गिरजाहै साथमें वही मुखरा झुनियाँ है।

पतोहूको देखकर रामप्रसादकी माका मुँह गम्भीर हुआ रेखाने "आवे-टीआ" कहकर गिरजाका आदर किया। यहाँ स्त्रियोंका बड़ाझमेला देखकर गिरजा बहुत सकुचायी। गृहस्थकी कुल वधू होकर इतनी अपरचिता स्त्रियोंके कैसे आकर खड़ी होगी सबके सामने कैसे क्या कहकर साससे क्षमा माँगेगी गिरजा सिर नीचे करके यही विचारनेलगी कुछ देरबाद और बात छोड़कर गिरजाबोली "माजी! घरेंचलीं! बहुत बेराभयी रसोई जुड़ारही है। "

रामप्रसादकी माने अपना गम्भीर मुँह और गम्भीर करके कहा "हमारे वास्ते किसीको रसोई जुड़वानेका क्या कामहै ? हमको एक पेटका को नहीं होगा तो भीख माँगके भरलूँगी मैं जिसके भलेको करतीहूँ जब वही नहीं समझे तो उनके साथ रहकर संसारी बननेसे का कामहै ? "

इतना कहतेही सासकी आँखोंमें पानी आया। गिरजासे अब रहानहीं गया। सासका पाँव पकड़कर रोनेलगी। यह देखकर बहुतोंको दया आयी। कदमीने कहा—"जाबहन! पतोहू मनाने आयीहै अब तुम नाराज नहीं होना चाहिये घरजावा "

रामप्रसादकी मा—" नहीं बहन! अब हमें उस घर दुआरसे मतलब नहीं है"

गिरजाने अपने आँचलसे आँसू पाछकर कहा—"माजी ! मैं बहुत विनती करके उनको दूसराव्याहकरनेपर कलराजी कियाहै। माजी कनिया ठीक करके एहीमहीनामें व्याहकरदो।"

सासने इतनी देरवाद पतोहूके मुँहकी ओर देखा गिरजाकी बात सुन कर और सब स्त्रियाँभी उसीकी ओर देखनेलगीं। अब रेखाका मुँह फूटा—"देख बहन ! मैं कहतीथी कि नहीं कि तुम्हारी पतोहूसीलछिमी किसीके नसीब नहीं होती। हजार हुआ तो क्या आखिर कुलीनकी बेटीतो है। अच्छा बेटी तुम ने राजी किया है तो कनियाकी कमी नहीं है कहोतो मैं आजही लाकर खड़ी करदूँ।"

अब सासका गंभीर मुँह कुछ प्रसन्न हुआ। राहुग्रस्त पूर्णचन्द्रमानो ग्राससे छूटा। गिरजाने रेखासे कहा—"तो फूआजी जल्दी कनिया ठीक करलो।"

सासके होठोंपर हँसीकी रेखा दीखपड़ी। अब उनसे रहानहीं गया चटबोलउठी—"अरे उसदिनवाली बात ठीक करदो तो फिर और कहीं ढूँढ़ने का काम नहीं है। वैसी सुंन्दर पतोहू हमको और नहीं मिलेगी"

रेखाने सिर और हाथ एकसाथ हिलाकर कहा—"अरे हाँ बहन अच्छी याद दिलायी। कहा ! लड़की क्याहै मानोछ्छात देवीहै। और वह सब भी व्याहके वास्ते हाप धुनते हैं। यहबात सुनके तो वह फूले नहीं समायँ गे। काहे कि, कुछ करज गुलाम नहीं करना पड़ेगा। बहन आजके जमा नामें बेटी बियाहना हँसी खेल नहीं है। कपालके बाल बाल बिकजाते हैं। आजही मैं खबर लाऊँगी।"

कदमी इतनी देरतक चुपचाप सुनती थी। रेखाकी बात पूरी होतेही बोली—"अरे लड़का या नहो बहन ! ऐसी सोनेकी पतोहू रहते तुम और पतोहू काहेको चाहती हो? फिर दूसरे विवाहपर नातीका मुँह देखने को मिले चाहे नहीं मिले लेकिन दोनों सौतका झगड़ा तो रोज सिरपर सवार रहेगा। सौतके जलनसे यह लछिमी पतोहू भी काँटा होजायगी। नजाने रामप्रसादकी मा ! तुमको किसने ऐसी अक्लदी है?"

रामप्रसादकी माका मुँह फिर भारी होआया । कदमीने इतनी बातें कहकर मानो रेखाके रोजगारमें भाँजी मारी । उसने मुँह फिराकर कहा " जिसको जो अच्छा लगताहै वह वही करेगा । इसमें बारह आदमियों के बात करनेका क्या काम है ?"

बात उसने कदमीपरही कहीथी लेकिन रेखियाका जवाब देनेको फिर कदमीने साहस नहीं किया। रेखाको जो पहँचानताहै वही उससे डरताहै ।

कदमीको उसबारेमें बेजवाब होते देखकर रेखाने फिर नहीं उजाडा और रामप्रसादकी मासे कहा—" जान पडताहै अभी इसने खाया नहीं है ऐसी पतोहूको अब मत दिककरो । तुरंत घर चली जाव ।"

रेखाको अकेलेमें लेजाकर बहुतसी बातें कहने पीछे सास पतोहूको लेकर अपने घर लौटगयी ।

चौथा अध्याय ।

रामप्रसादकी माकी मनसा पूरी हुईहै । आज बेटेकी दूसरी शादीहै कन्याभी मनके अनुसारही ठीकहुई है । आज रामप्रसादकी माके आनन्द की सीमा नहीं है ।

रेखाही इस व्याहकी अगनुवाइन और सब जोड़ तोड़ मिलाने वाली है । आज उसका पांव जमीनपर नहीं पड़ता । गिरजा आज बहुतही व्यग्र है । व्याहकी सब तैयारी अपने हाथसे करती है । उसके मनमें भी सरसों भर शोकका निशान नहीं है । घर में लोगोंकी आवाजाहीके मारे खडा होनेको जगह नहीं मिलती आज आने जानेवाले भी बडे आनन्दित हैं। गाँवकी स्त्रियोंसे आज रामप्रसादका घर गुलजार होरहाहै । उनकी खुशी देखकर आज रञ्ज जमुनापार भाग गयाहै ।

हिन्दूके लिये विवाहके उत्सव समान और उत्सवही क्या है ? रामप्रसाद को एक सद्गृणी भार्य्या मौजूद है तो भी दूसरी शादी करेंगे

इसीके आनन्द में आज गाँवके लोग फूले नहीं समाते सबका मन आज प्रसन्न है केवल जिसका व्याह उसी को खाँडाबारा की मसल देखकर हम चकित हैं आज जिसकी शादी है उसीका मुँह इतना विषन्न क्यों है ?

रामप्रसाद के मन में आज कुछभी खुशी नहीं है । दुखीमन से अपनी दशा का सोच कररहेहैं । आज उनके अनेक सङ्गी साथी उनके घर आये हैं वह आज खुशी के मारे तरह तरह की हँसी दिल्लगी कर रहे हैं । रामप्रसाद बाहरी उन दिल्लगीयोंपर नाखुश नहोकर भी भीतर से बहुत नाराज हैं समय समय बाहरी हँसी हँसनेपर भी जीमें एन्हें बडे दुःखके पाले पडे हैं ।

सन्ध्याको ही व्याह का मुहूर्त है। समय समीप जान वह सब दुःख मन ही में दबाये हुए रामप्रसाद दूलहका साज पहनने को भीतरगये ।

लेकिन भीतर जाकर उन्हों ने जो कुछ देखा उससे उनकी आँखोंके आँसू नहीं थम्भे । उन्होंने देखा कि, गिरजा अपने हाथसे उनके व्याह का डलवा वगैरह सब खुशीमनसे सजा रही है । रामप्रसाद को देखते ही दूलह का साज पहनाने चली । हा ! वह हाल देखकर रामप्रसाद अधीर होउठे । आँखोंसे बेटाके आँसू बहचला ।

रामप्रसादकी आंखोंका आँसू देखतेही भीतरकी स्त्री मण्डलीका आनन्द तरङ्ग थम्हगया । हम सच्चीबात नहीं छिपावेंगे । रामप्रसादका आँसू देखकर गिरजाकी आंखोंमें भी आँसूके बूँद हमने देखे । लेकिन उसे और किसी ने नहीं देखा । बेटाकी यह हालत देखकर माता बहुत रंजहुई । मारे कोपके फूलकर कहने लगीं—“ बहुत बेटा जहानमें हैं लेकिन ऐसा तो नहीं देखा दादा । हँसी खुसीकी समइयामें कोई आँसू गिराताहै ? भला हमारा तो शादी बियाहका साध पूज गयाहै लेकिन जिसकी लड़की लाना है उसको यही पहली शादी बिवाहका मंगल दिनहै, फिर गांवके गोंयडे समधियानहै । बरात कुछ बडीदूर नहीं है यहबात थोडे छिपीरहेगी । मैं किसकी किसकी जीभ बन्द करूंगी । वह लोग सुनेंगे तो क्या कहैंगे ।”

रामप्रसादने सकुचाकर कहा—"क्या करूं मा ! मैं जानके थोड़े आँसू गिराताहूँ । आज न जाने काहे मेरी आँखका आँसू थम्हताही नहीं" ।

रेखा फूआने जवाब के खेतमें उत्तर कहा—" क्या कहीं बेबोले तो रहा नहीं जाता । बेटा तुमतो पढ़े लिखे हो कुलीन क्षत्रीहो व्याह जितने चाहो व्याह कर सकतेहो कुछ रफीकों का कामतो है नहीं । तुम्हें कोई कैद थोड़े करताहै ? ।

रामप्रसादने मनमें कहा" कैद करना तो इससे अच्छा फिर प्रगटरूप से कहा—" अच्छा फूआ अब मैं आँसू नहीं गिराऊँगा जोकाम करना हो जल्दी हमसे कराली । "

अब फिर किसीने कुछ नहीं कहा । सबकाम जिसमें जल्दी हो इसीका सबको ख्याल रहा लेकिन स्त्रियोंमें फिर वैसीखुशी नहीं देखनेमें आयी ।

बारात गयी, मीलभरभी दूर जाना नहीं था । सबकुछ रीतिके अनुसार होकर शुभलग्नमें कि, अशुभ में सो भगवान् जाने, रामप्रसादका व्याह उसी रातको होगया । दूसरेदिन नयी दूल्हिन लेकर रामप्रसाद घर आये । गिरजा ताबडतोड कन्या उतारने दौड़ी लेकिन रेखाकी बात सुनकर थथ म गयी और अलग खडी रही ।

रेखाकीबात और कुछ नहीं थी उसने गिरजाको जाते देखकर कहा—" अरे तू कहा काठिया उतारने जाती है ? नहीं जानती सौतला दुश्मन दुनियामें और कोई नहीं होता ? तूं तो सौतहै तुझे कन्या नहीं उतारना रहने दे सास उतार लेगी ।"

रेखाकी बातसे गिरजाको बड़ी पीड़ा जान पड़ी । जो बडे साधसे कनिया उतारने जाती थी रेखाके वचनबाणसे विद्ध होकर रुकगयी रातभर कामकेमारे उसे नींद नसीब नहीं हुई थी तौ भी सबेरेसे उठकर बर कन्याके स्वागतकी तैयारीमें बैठीथी ।

जो हो रामप्रसाद की माने ही वरकन्या को उतारा लेकिन किसी तरह कन्या को गोदमें न लेसकीं । क्योंकि कन्या तेरह बरसकी थी

और सब अंगभी भरा पूराथा । निदान उसको सवारी से उतारकर पैदलही भीतर जाना पडा— लेकिन गिरजा से यह देखा नहीं गया । उसने दौडकर गोदमें लेलिया और सब काम यथारीति होने पीछे बरकन्या घरमें लायी गयीं ।

यथासमय फूलशय्या पाकस्पर्श प्रभृति शुभ कार्य समाप्त होगये जैदिनतक नयी दूल्हन सासरे रही, गिरजाने खातिर मान करने में कुछ भी उठा नहीं रक्खा । इन दिन वस्तुतः गिरजाने सब काम काज छोड कर नयी दूल्हनकी सेवा शुश्रूषा की लेकिन नसीब की कौन कहे इसपर भी रेखा आदिने कई तरह की बातें उडायीं । क्योंकि सौतको ऐसा आदर करना भी उनकी आंखों मैं बुरा लगा ।

व्याह के बाद रामप्रसाद की माको भी बडा आनन्द हुआ । पहले व्याह में जोखुशी उनको हुई थी इनमें उससे भी बढ चढ के खुशी हुई । रामप्रसाद की आंखोंमें भी अब आंसू नहीं है । लेकिन हृदय में कुछ आनन्दका तरङ्ग भी नहीं है । वह मानो पहले से कुछ गम्भीर हो उठे हैं । और सदा गुम सुम रहते हैं । आँधी तूफान आने के पहले जैसे जगत् में शान्तिछाजाती है रामप्रसाद भी वैसेही शान्त हो रहे हैं ।

पाँचवाँ अध्याय ।

समयकिसीकी इन्तिजारी नहीं करता उसको विरामहै न विश्राम । वह सदा एक भारसे बीतता जाता है चाहे कोई राजासे रङ्क हो चाहे भिखुआ तेलीसे राजाभोजहो उसको किसीकी कुछ परवा नहीं । चाहें अन्धेरा हो चाहे उजेला गरमीहो चाहे बरसात समयको कोई रोक नहीं सकता । दाम देकर जगत्में सब खरीदा जासकताहै, लेकिन समयको कोई नहीं खरीद सकता । आज एक आदमी मररहा है । प्राण शरीर पञ्जरसे निकला चाहता है जगत् नहीं हजार जगतका धन देदो कोई एकमिनटभी नहीं रोकसकता ।

समय अनन्तहैं समय अपारहैं। दिनजाताहै महीनेपर महीना भरता है बरसपीछे बरस बीतताहै युगपर युग बरतकर जो समय कितनेही चौकडी पीछे छोड़आया है उसकी गणना कौनकरे? सत्य त्रेता और द्वापर बीतगयेहैं। कलि वर्त्तमान समयमें बीतरहाहै। इस कलिपर फिर साथ त्रेता, द्वापर आवेंगे और कलि चढ़ेगा फिर इसी तरह चौकड़ियाँ बीताकरेंगी हम लोग सृष्टि फिनगे उसका अन्त कहाँ पावेंगे?

समय अनन्त कालसे द्रुतवेगपूर्व्वक चल रहा है। एकबारभी पीछे फिरकर नहीं देखता। चलाजाता है यह हम कहते हैं. लेकिन् उसका पदचिह्न कभी देखने नहीं पाते। धन्य समय! धन्य तुम्हारी महिमा!।

इसीतरह हमारे रामप्रसादके व्याहको आज दोबरस होगये रामप्रसादकी दूसरी स्त्री चमेलीको पाकर उनकी मा खुशीकेमारे फूली नहीं समाती आनन्द सागरमें अधीरा हो उठी है। घरका काम काज कुछनहीं देखतीं सदा उसी नयी पतोहूमें लगी रहती हैं।

पहले नयी पतोहू चमेलीके अहारादिमें उनका बड़ा ध्यान है बेटेसेभी अधिक चाहके साथ इसका वह प्रबन्ध करतीहैं। फिर वह भोजन उसको सदा समयपर मिले इसकेलिये उनकी बड़ी डाँटहै। नयी पतोहूके कपड़ेभी गिरजासे अच्छेरहतेहैं। सास उसकेलिये अपने चोरीका (सञ्चित) धनसे तरहतरहके कपड़े खरीदने लगीं।

इतना करकेभी सासकी श्रद्धा नहीं मिटी उन्होंने अपने गहने से उसके लिये सब अच्छे २ अलङ्कार बनवादिये। इसीतरह बढ चढके आदरसे भूषण बसन और भोजनसे नयी पतोहू दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी एकबात इसकेसाथ और है। मालकिन इस नयी पतोहूको घरका खन्हतक नहीं टालनेदेतीं न चिरागकी बत्ती उसे करनेका कामसौंपती कोई इस बारेमें कुछ कहे तो वह कहतीहैं कि"—बापरेबाप! बड़ी कमाई बड़ी तपस्या परतो मुझे यह लछिमी मिलीहै। जिसको इतनी नकरादिया पर पायाहै इसको मैं घरका काम काज करनेदूँगी?"

इधर गिरजाभी सौतके सन्मानमें कुछ उठानहीं रखती। सहोदराछोटी बहनको लाकर बड़ी जैसे खुशहोती है गिरजाकोभी चमेलीके पानेसे वैसी ही खुशी है। मालकिनका वह सब अन्यायभी गिरजाके मनको कुछभी दुखानेकीशक्ति नहीं रखता। बरन् वह सासकी आज्ञासे चमेलीके भोजन आदिकी विशेषता वह अपने हाथसे करती है सास कोई उत्तम वस्तु खरीदती है तो गिरजा अपने हाथसे उसी सौतको पहनाती है। इसके सिवाय वह अपने अच्छे २ कपडेभी उसके लिये सदा तैयार रखती है। सासके दिये हुए गहने गिरजा हँस हँसकर अपने हाथोंसे सौत चमेलीको पहनाती है। यदि अपने किसी गहनेसे उसकी शोभा समझती है तो झट उतारकर गिरजा चमेलीको उससे सजातीहै।

लेकिन सौतका यह सब आदरसत्कार किसीको देखा नहीं गया। हम पहलेही कह चुकेहैं गिरजाकी यह सब करनी रेखियाके पेटमें सूलसीबेध तीथी इसीकारण उसने इसमें काँटा बोना शुरूअ किया चलतीमुसाफिरीकी सड़कमें उसने पाँवमें चुभनेवाले कण्टक रोपने शुरूअ किये।

चमेलीको अकेली पाकर रेखा उपदेश करतीहै–“ देखबेटी ! सौतका कभी विश्वास नहीं करना। हमको बड़ाडरहै कहीं एक दिन तुमको खानेमें जहर देकर मार न डाले। बडी चालाकहै। देखो नहीं सासके आगे तुम्हें कितना खातिरमान करती है ? भलासौतका कोई इतना आदर करता है ? ” ओहो रेखाके उपदेश कैसे मीठे हैं। किसतरह परा येके हितको उधार खाये फिरतीहै ?

सौतियाडाह जगत्में प्रसिद्ध है खासकर हमारे भारतकी तो कहनाही क्याहै जहाँ कुलीनताके मारे घर घर डबल बीबी मौजूद हैं। रेखाके उप- देश वटमें फल लगते देर नहीं हुई। चमेली गिरजाको घृणाकी दृष्टि से देखने लगी। और सदा इसबातकी तदबीर करने लगी कि, उसके साथ नरहैं। उधर मालकिनके पक्षपात और अन्यायका विषभरा फल भी निकल नेलगा। जो हमारे पाठक आगे समझेंगे।

इसवक्त हम रामप्रसादके बारेमें कुछ कहेंगे। वह माताके इस अन्यायसे मनहीमन रंज होतेथे। लेकिन झगड़ा कलहके डरसे उसे जाहिर नहीं करते। फिर जब मा अपने दामसे यह सब कररही थीं तब उनको कुछ बोलना भी उचित नहीं जानपड़ा।

लेकिन रामप्रसाद दोनोंको एकभावसे देखने मानने की सदा चेष्टा करते थे जब कभी कोई चीजलाते तब समान दाम के दो लाते और दोनों को देतेथे। किसीतरह का कुछ बड़ी छोटीसे भेद नहीं रखते, लेकिन माता को यह सहानहीं जाता। वह जाहिरा इसबातको नहीं कहसकी लेकिन तुरंत एकबात ऐसीहुई जिससे मा बेटे में फरक आगया। वह बात यहथी कि, चमेलीकी अलङ्कार राशिमें उसका चन्द्रहार चाँदीका था। लेकिन ऐसे घरकी घरनी होकर चाँदीका गहना पहनना अपमानकी बातहै। पहले रूपेके गहनोंका जो आदर था उसका अबके जमाने में शतांशभी नहीं रहा। पहले लखपती करोडपती की स्त्रीभी रूपेकी पहुँची रूपेका हयकल रूपेका पछुआ पायजेब पहनकर अपने को धन्य समझतीथीं। लेकिन आजकलकी स्त्रियाँ सोनेका गहना पहनकेभी सन्तुष्ट नहीं होतीं। आजकल भारतमहिलाओं का यह अलङ्कार प्रेम हिन्दू गृहस्थके क्रियाकलापका क्रमशःलोपकर रहाहै।

जब चमेलीके गहनोंकी स्त्रीमण्डलीमें समालोचना चलतीथी तब उसके चाँदीका चन्द्रहारही असङ्गत समावेश कहकर निन्दाके साँचेमें ढालाजाता था। जब चमेली किसीके घर नेवतेमें जातीथी तब वहाँभी असंख्य महिला समाजमें यहीबात उठतीथी इससे लज्जाके मारे चमेलीका मरन होजा-ताथा। अतएव चमेलीने वह चन्द्रहार पहननाही छोडदिया। और चन्द्रहारबिना किसीके घर निमंत्रण जानाभी बन्द किया।

यह बात मालकिनको बहुतही बुरी लगी लेकिन उनके पास अब कौडीभी नहींथी। इसकारण नयी पतोहूके चन्द्रहार बनवानेका भार बेटेपर सौंपागया।

रामप्रसाद बडे असमञ्जसमें पड़े । छोटीको चन्द्रहार देनाहै तो बड़ीकोभी जरूर देनाचाहिये इसके वास्ते कमसे कम १९००) हुए बिना काम नहीं बनेगा । लेकिन रामप्रसादकेपास रुपयातो था नहीं इसीकारण वह माताका कहना पूरा न करसके इसी बातपर मा बेटेमें एक दिन बडी कहा सुनीहुई ।

माने कहा—" दो चन्द्रहारका क्या कामहै छोटीके लिये एक बनवादो लड़की जातहै सोनाका चनरहार पहननेकी सरधाहुई है—" विनादिये कैसे बनेगा ? "

बेटेनेकहा—" सुनो मा चाहे एक गढ़ाकर जिसको मने आवे देकसती हो लेकिन् हमारीतो दोनोंही स्त्रीहैं हम बिना दो गढ़ाये एकतो घर में लाभी नहीं सकता ।"

माता—" हमारे हाथमें रुपया होता तो तोसे कहतीक्या ? "

रामप्र०—" तो हमारे पासभी इतना रुपया नहीं है कि, सोनेका चन्द्रहार गढ़ा दूं । "

माता०—" तो एक गहनाभी तू गढ़ा नहीं सकता तो बड़े आदमी की लड़कीके साथ काहेको व्याह किया । "

रामप्र०—" मैं अपने मनसे थोड़े किया है तूनेही जोर करके किया है।"

अबतो माको सहा नहीं गया—" मैंने अपने मनसे नहीं किया तुमने जोर करके किया है " यह बात बेटेकी माको नहीं सहीगयी । अब तरह तरहके कुवचन बेटेको कहती हुई मा घरसे चलीगयीं । कोप होनेपर घर छोड़देना उनकी सदाकी रीतिथी ।

आधे घंटे बाद रेखा पहुँची और उन्होंने वकालती करना शुरूअ कर दिया पहुँचतेही पेशीपर चढ़कर बोली—" अरे काहे बेटा ! तुम्हारा कैसा जीव है ? अभी कनिया बेचारी एकठो चीजके वास्ते अड़ी है तो क्या छोटी बड़ी दोनों को हिसकाकरे बिना नहीं चलेगा ? बड़ीको अब कौन सोनेका चन्द्रहार पहननेकी उमर है । उसको भगवान बूझता तो अबतक

नाती नतिनी होजाती उसको इस उमर में चनरहारका हिसका क्या करना ?"

रामप्रसाद ने कुछ भी जवाब नहीं दिया इतने में गिरजा ने धीरेसे रेखा को बुलाकर कहा—"नहीं फूआजी ! हम हिसका नहीं करती । उनको चनरहार गढाने पर तो मैं जीसे खुशी हूंगी । तुम उनको कहो अगर उनके हाथ में रुपया नहीं है तो मैं अपने हाथ का कडा गले का गुजुरू और कानका करनफूलदेती हूँ इसको तुडवाकर चनरहार उनके वास्ते बनवादें"

रेखाने रामप्रसाद को पुकार कर कहा—"काहे बेटा ! सुना आखिर तो भले आदमीकी बेटी है । वह समझती है कि, उमर किसका कैसाहै अहा चमेली को देखतेही सब का जी ऐसाकरने को चाहता है । देखो जेठरी भी उसके वास्ते अपना सब गहना देनेको तैयारहै । अब तुम फिकर काहे को करतेहो गढादो जब रुपयाहो तब इसका यह सब बनवादेना।"

रामप्रसाद ने मनमें कहा—"चमेली जरूर कुछ जादू जानती है।" और प्रगटरूपसे रेखा को कहा—"अच्छा फूआ ! जावो माको भेजदो मैं चन्द्रहार गढाये देताहूं" सुनकर रेखा बहुत खुशहुई और चमेलीको शुभसम्वाद देकर घरगयीं माता आयीं लेकिन जैदिन तक चन्द्रहार नहीं बन पाया तैदिन तक बेटे से उन्होंने सीधी बातें नहीं कीं रामप्रसादने गिरजाका गहना तुड़वाये बिनाही चन्द्रहार गढादिया। रेखा को इसतरह चन्द्रहार बनना वैसा आनन्ददायी नहीं हुआ।

छठा अध्याय।

ऊपर के कहेहुए दोतरहके आदर सत्कार और रेखाके उपदेशसे चमेली का स्वभाव धीरे २ फिर चला । वह अब समझने लगी कि, इस वक्त जगत्में उसीके सुखको सब मर रहे हैं । अतएव सुखभोग के

सिवाय उसको स्वामीके घरमें रहनेका और कुछभी उद्देश नहीं है । सासके इतना आदर मान करने परभी चमेलीके जीमें सासके प्रति कुछ श्रद्धा नहीं जन्मी । आश्चर्य यह कि, सासभी नयी पतोहूसे इस बारे में कुछ आशा नहीं करती । एक मालकिनकेही स्वभावदोषसे परिवार में जो अघटित घटनाएँ होती हैं रामप्रसादकी मा उसका उज्ज्वल उदाहरण है । वह यदि पक्की गृहस्थिनी होती तो एक क्षुद्रबुद्धिबालिकाको इसतरह नहीं फेरतीं । आज रामप्रसादकी माने अपने हाथसे जो बीज बोया है थोडेही समयमें उनको इसका फलभोग करना होगा ।

सन्ध्यासमय रामप्रसादने ऑफिससे आकर देखा कि, उनकी नयी दूल्हन चमेली श्रृंगार पटारकरके खट्टपर बैठी पुस्तक पढ़रही है । गोधुली वेलामें इसतरह आलसी बनकर पड़ना उनको बड़ा बुरा लगा । और मनहीमन नाराज होकर बोले-" अरे ! का करत है ? "

चमेलीने शिर उठाया और बङ्किमकटाक्षसे स्वामीकी ओर देखकर आधी हँसी हँसदी । बस रामप्रसाद का सब रंज न जाने कहाँ चलागया । चमेलीकी मोहिनी शक्ति और ओठोंपर हँसीकी रेख देखकर रामप्रसादका जी पानी २ होगया । थथमकर कहा-" इसवक्त कोई सोताहै ?"

रामप्रसादकी बात पूरी होनेके पहलेही चमेलीने कहा-" वाह ! मैं क्या सोतीहूँ पोथी तो बाँच रहीहूँ । "

रामप्र०-" पोथी बाँचने को कोई मने नहीं करता इस बेलामें सोना नहीं चाहिये । "

चमे०-" तो तुम ऑफिससे आकर साँझको काहे सोतेहो ! "

राम०-" मैं तो थका माँदा आताहूँ इससे थोड़ा आराम करताहूँ ।

चमे०-" हमाराभी तो वही हाल है ! दिनभर माजी मुझे सुला रखती हैं सो इस वक्त बदन टूटने लगता है इससे पड़ी रहतीहूँ । "

राम०-" मा तो तुम्हारा सत्यानाश कररही है । "

चमे०-" काहे ? "

राम०-" तुम्हें कोई कामकाज नहीं करने देती । "

च०-" काम काहेको करूँ ? "

राम०-" काहेको क्या ? सब लोग काहेको करते हैं ? "

इसबार आँख घुमाकर चमेलीने कहा-" मैंतो तुम्हारी छोटी स्त्रीहूँ।" रामप्रसादका वह भाव बदला उन्होंने कुछ हँसकर कहा-" छोटी होनेसे कामकाज नहीं करना यह किसने बतलाया ? "

चमे०-" बतलाया कोईने नहीं । सासजीसे रोज मैं किस्सा कहानी सुनतीहूँ उनमें सब राजाओंकी दो रानी रहती हैं उनमें बड़ी तो धान कूटती गेहूँ पीसती सब काम लौंड़ीसी करती है छोटी पाँवपर पाँव देकर राजभोग करती है । "

इतना कहते २ देखा कि, रामप्रसादका मन कुछ खिन्न हुआ झट चमेलीने उठकर उनकी ठड्ढी पकडी और कहा--"काहे राजाजी ! मैंभी तो तुम्हारी वही छोटी रानीहूँ । "

इतना सुनतेही रामप्रसाद खुलके हँसपड़े। बाहर बहुतेरी खुशी जाहिर की लेकिन भीतर न जाने कैसी एक तरह की चिन्ता हुई । मनमें सोचने लगे " तो क्या यह हमारी प्यारी उस किस्से वाले राजाकी बडी रानी हुई ! " और प्रगट चमेलीसे कहा--" देखो बड़ी तुमको बहुत चाहती और मानती है । जैसे बड़ी बहन "

बात काटकर चमेलीने कहा--" काहे वह हमको माने जानेगी काहे नहीं ? वह सब मानना जानना उसीके भलेको तो है ? "

राम०--" तुम्हेंभी तो उसे मानना चाहिये ? "

इतना सुनकर चमेलीका मुँह गम्भीर होउठा थोडी देर बाद उसकी आँखें रंगीन होउठीं । और रंज होकर बोली--" मैं डाइनकी माया नहीं दिखाना चाहती-"

रामप्रसाद सुनकर अवाक् होगये । चमेली क्या बहुरूपिनी है इसका यह मुँह इतना सुकर क्यों दीख पड़ता है ? लेकिन रामप्रसाद इस सुन्दरतामें भूल नसके । उन्होंने पूंछा—" डाइनकी माया कैसी ? "

चमेलीने अपना सुन्दर मुँह और सुन्दर करके कहा—" डाइनकी माया नहीं जानते ! सौत होकर सौतका प्यार करना डाइनकी माया नहीं तो और क्या है ? "

रामप्रसादभी सुनकर गम्भीर होउठे। न जाने मनमें कौनसी चिन्ता ने घेर किया। लेकिन चमेलीने उनको देरतक इस दशामें रहने नहीं दिया । झट अपनी सन्दूकमेंसे एक जोड़ा करनफूल निकालकर उनके आगे रक्खा और पूँछा देखो तो यह करनफूल कैसा सुन्दर है ? "

रामप्रसाद ने नीचेसे सिर ऊपर उठाया अबकी देखा तो चमेली मुसकुराती थी । इस मुसकुराहटमें क्या मोहनी शक्ति है सो हम नहीं जानते लेकिन इस हँसीने तुरन्त रामप्रसादकी गम्भीरता खोदी । शशधरने मानो राहुको ग्रस लिया ॥

रामप्रसादने धीरे २ कहा—" यह करनफूल कहांसे आया ? "

चमे०—" आया कहाँसे ? एक आदमी बेंचता है तुम खरीददो । "

रामप्र०—" क्या दाम है ? "

च०—" पचास रुपया । "

राम०—" ऐसा एक जोड़ा और है ? "

चमेली बिजलीकी तरह चमककर बोली—" और एक जोड़ा क्या होगा ? "

रामप्रसाद थथम गये देखा तो चमेली की वह हास्यमयी मूर्त्ति अब नहीं है । वह उसका क्रोधअभिमानपूर्ण मुखभी नहीं है । चमेलीने अब भयंकररूप धारण कियाहै। यह मूर्त्ति प्रलयकारिणी सर्वरसातलदायिनीहै।

खबरदार रामप्रसाद ! खबरदार ! लेकिन रामप्रसाद डरके मारे सिकड़कर सोंठ होगये हैं वह खबरदार क्या होंगे ? हमभी लिखते

लजाते हैं. इतने बड़े लिखे पढ़े पण्डित रामप्रसाद नारीप्रसाद होगये। अपनी बातके समर्थनका और उपाय न देखकर झूठ बोले और कहा— "दोनों जोड़ा तुम्हारेही वास्ते चाहते हैं।"

लेकिन बात कहतेही एक मूर्त्ति बिजलीसी चमककर रामप्रसाद के हृदयमें पहुँची और एक भयानक चोट पहुँचाकर न जाने कहां चली गयी। छिः रामप्रसाद धिक्कार तेरे हृदयको! तूने इतना जल्द सत छोड़ दिया।

रामप्रसाद अब वह रामप्रसाद नहीं है। अपनी छोटी दूल्हन चमेलीके सुखके लियेही अब उसका जीवन धारण है। नये कपड़े नये गहने नये फल फलहरी नित्त नयी भोगकी चीजें सब चमेलीको उपहार देते हैं गिरजा को कोई नहीं पूँछता। जैसे नया घोड़ा खरीदतेही पुराने पर बोझा लादनेका काम रहजाता है वैसेही गिरजाकी दशा है पहले जो प्यारी लक्ष्मी बरनीथी अब वह पिसनी कुटनी और रसोइयादारन होगयी है।

आगमें घी देनेसे जैसे आगका दर्प्प बढ़ताहै रामप्रसाद के इन रोजाना उपहारोंसे भी चमेलीका दर्प्प वैसाही बढ़ने लगा। लेकिन तौभी रामप्रसाद के उपहारोंकी इति नहीं है। अब गिरजाकी यादभी रामप्रसादको नहीं आती। अब गिरजासे देखादेखी होतेही रामप्रसादका मुँह उतर जाता है। वह अपराधीकी तरह सकपका जाता है। इससे अब वह इसबात की सदा फिकर रखते हैं कि, उनसे गिरजाकी भेंट न हो। अब गिरजा का अतुलनीय सह्य गुण अन्त सीमाको पहुँच गया है। हैं! गिरजा यह क्या! तुम्हारी आँखोंमें यह आँसू कैसा! भो भगवन्! अब हमसे रहा नहीं जाता। गिरजाकी आँखोंमें आँसू तो हम देख नहीं सकते।

सातवाँ अध्याय।

सचमुच क्या गिरजा की आखों में आँसू आया है! यह तो बडे आश्चर्य्य की बात है! इतना जल्द यह घटना क्यों कर घटी! उस चिर

प्रफुल्ल सदा प्रसन्न वदन और चिरज्योतिमय नयनों को इतना जल्द आँसू से भरादेखेंगे यह हमने सपने में भी नहीं विचारा था। फिर क्यों ऐसा हुआ! जरूर किसी भयानक असम्भव घटना के साथ इसका सम्बन्ध है रामप्रसाद के मन परिवर्तन से इसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं होसकता।

लेकिन जो गिरजा प्रसन्न मन से इतने जुल्म इतना पक्षपात सहती आती थी उसका सहनगुण एकदम कहाँ चला गया! इसकी हृदयका गूढ रहस्य कौन जाने!

लोग कहते हैं गदहा सब कुछ बोझ लेजासकता लेकिन भातकी हाँडी नहीं ले जासकता। स्त्रीका हृदयभी ठीक वैसाही है। यह हृदय सब जुल्म सब शारीरिक और मानसिक कष्ट सह सकता है किन्तु स्वामी के स्नेहसे वञ्चित होना नहीं सह सकता। जबतक गिरजा जानती थी कि, उसका स्वामी उसको स्नेह करता है तबतक वह प्रसन्न मनसे सब जुल्म सह लेती थी। लेकिन भाग्यकी बातहै गिरजा का वह विश्वास अब नहीं है। और यही कारणहै कि, आज हम लोगोंने उसकी आँखोंमें आँसू देखा है।

गिरजाके इस आँसूका अर्थ समझना बड़ा कठिन है। उसके हृदयमें हिंसाहै न द्वेष है न उसका हृदय सासके पक्षपातसे विचलित होता वह सदा खुशी मनसे सासका शासन ताड़न अत्याचार अन्याय सब सहती आयी है। स्वामी तरह तरहकी चीजेंलाकर उसके सामने ही सौतको रोज उपहार देते हैं इन बातोंको अपनी आँखों देखकर गिरजाने एक दिन लम्बी साँस भी नहीं ली है। जिस गिरजाके हृदयमें इतना बल है उसकी आँखोंमें आज अकस्मात् आँसू क्यों ? एक बात और है जिस गिरजाने स्वामीको हाथ जोड़कर कहा था—" तुम ब्याहकरो। सैकड़ो दासियोंमें मुझे भी एक दासी समझोगे तो इतनेहीसे मैं सुखी होऊँगी।" आज यह रहरहकर लम्बी साँसें और आँखोंमें आँसू क्या उसी सुखकों परिचय है ? उसीसे हम कहते हैं गिरजाके अश्रुजलका अर्थ समझना कोई सहज काम नहीं है।

हमने यह क्या किया ? निस्वार्थ प्रणयका सुन्दर चित्र उतारने बैठकर हमने गिरजाकी आँखोंमें आँसू क्यों सजाया । ऐसे समय जब देशमें निष्काम धर्म्मकी नहरें चारों ओरसे छूटी हैं हमारे बहुत से पाठक निष्काम धर्म्मावलम्बी हमको अबतक बहुत कुछ कोसम कोस चुके होंगे। लेकिन करें क्या यह सब जानकर भी बहुत कुछ उद्योग करनेपर हम गिरजाकी आँखोंका आँसू नहीं रोकसके ।

जिस गिरजाने अपने पांवमें आप कुल्हाड़ी मारी है वह क्या अपने हियेका बल समझ सकती है ? एक बात और है उसने स्वामीके स्नेहसे वञ्चित होनेकी बात सपनेमें भी नहीं बिचारीथी । न ऐसी बात होनेका उसे विश्वासथा । उसने स्वामीके स्नेहमें अटल विश्वास करकेही आजतक सब सहे हैं लेकिन आज उसके विश्वासपर पत्थर पड़ा है । इसी कारण उसकी आँखोंमें आंसू आया है । उसका अपराध यही है कि, वह निष्काम नहीं है । प्राण से मनसे स्वामीको चाहती है । स्वामीमें अटलप्रेम रखती है । और उस प्रेमके प्रतिदानकी कामना करती है । जिसमें इतने गुण हैं वह निष्काम होकर स्वामीको क्यों नहीं चाहती है ? इसका जवाब यह है कि, वह पहलेही स्वामीके प्रेमका स्वाद पाचुकी है । जो स्त्री प्रेमका एकबार स्वाद पाचुकी वह क्या प्रेमसे वञ्चित रहसकती है? रमणी हृदयका गूढ़रहस्य जो जानते हैं वही गिरजाके अश्रुजलका मर्म समझ सकेंगे।

चमेलीने धीरे २ अब रामप्रसादके हृदय में दखल पाया है । यह बात अब रामप्रसादको भी समझनेमें बाकी नहीं है । पहले रामप्रसाद इसबात से खुद रंज थे । और उनका यह काम अन्यायका है सो आपभी मंजूर करते थे गिरजाको सामने पातेही अपने जुल्म और अन्याय पर लजाते थे । लेकिन होते २ वह लज्जाभी अब जाती रही है । अब रामप्रसादको जो कुछ है सो चमेली है रामप्रसाद उसीमें भरे फूले हैं ।

अब रामप्रसादके महलमें सर्वत्र चमेलीकी चलती है । हरबातपर

चमेलीका राज्यहै । हर बातमें चमेली, हरकाममें चमेली, जब देखो तब चमेली, जिधर देखो उधर चमेली जैसे पूछो वैसे चमेली गरजकि, अब चमेलीकी राय बिना रामप्रसाद एक पत्ता नहीं हिला सकते । चमेलीके पूछे परखे बिना रामप्रसाद के परिवारमें अब कुछ कामही नहीं होता ।

अरीवाहरी चमेली ! अब तो वह गिरजाको रामप्रसादके आगे जाने तक नहीं देती । गिरिजा अपने हाथसे सब करती धरती पकाती बनाती है । चमेली उसे सज सजाकर अपने एक निर्मित स्थानमें लेजाती और वहीं स्वामीको खिलाती है । जो घर गिरजाको मिला है अब उसमें राम-प्रसाद को कदम रखनेका भी चमेलीका आर्डर नहीं है । इस कारण यह उधर जा नहीं सकते । अगर भूलसे चले जाते तो चमेली चिढ़ चिढ़ाकर वह बातोंका चाबुक लगाती कि रामप्रसाद छठीका दूध याद करते और साथही गिरजा भी बे गुनाह कोसी मकोसी जाती ।

रामप्रसादके व्यैाहारही सब चीजें अब चमेलीके फाइलमें लटकती हैं । एक पुराना फटा कटाभी अब गिरजाके घरमें नहीं रहने पाता । एक दिन रेखाने रामप्रसादका पुराना अव्यवहार्य जूता गिरजाके घरमें फेंक दिया था, उसे देखकर चमेली वह महाभारत नाथा कि, बापरे बाप रणविजयिनी रेखाकोभी शिकस्त खाना पडा । इसतरह एक दिन गिरजा ने छतपर अपने कपडे उतारने जाकर रामप्रसादका एक तेलहा कुरता भूलसे अपने कपड़ोंमें धर लारक्खा था । चमेलीने उसे देखकर वह रँडहो पुतहो किया कि उस दिन घरमें चूल्हेको इंधनतक नसीब नहीं हुआ ।

अब इन सब कामोंसे चमेलीको मनाकरने का साहस रामप्रसाद में रत्तीभरभी नहीं है । बरन समय २ चमेलीकी ओर होकर कुछ कहनापडता है । एक दिनकी और एक घटना हमें याद आयी है । एक रविवारको रामप्रसाद के मामा आये थे । उस दिन उनको भोजनके लिये गिरजाही का घर नियत था । उन्होंने भाँजेको साथ भोजन करनेकी बात की इसी कारण मामाके साथ रामप्रसादकोभी गिरजाके घरमें भोजन करना पड़ा ।

और गिरजाही परोसनेवाली हुई । जब मामा भोजन करके बाहर हुए गिरजाने रामप्रसादका पाँव सुयोगपाकर थामलिया और कहा–" थोडा बैठजाव हमको तुमसे कुछ कहना है ।

सामने गिरजाको देखतेही रामप्रसाद सूखकर सोंठ होगये । और मिरकिचही रामतरोई की तरह लिरबिराकर बोले–" अभी नहीं बैठ सकता खानेपर थोडा लेटने जाताहूं । "

गिरजा–" तो यहीं लेटो । "

राम०–" तुम्हारा बिछौना मैलाहै उसपर नींद नहीं आवेगी । "

अब गिरजाकी आँखों का आँसू न रुकसका पोंछकर बोली–"अब मैं साफ बिछौना किसके वास्ते करूँ। तुम तो यहाँ सोते नहीं सोना तो दूर अब इस घरमें कभी कदम भी नहीं रखते । खाली बिछौने की बात क्या इस घरकी ओर एकबार देखो तो जानपडे कि, यही घर पहले क्या था अब क्या होगया यह सब हालतो खाली तुम्हारीही वजहसे है । अच्छा मैं साफ बिछौना कर देतीहूं । लेटरहो । " इतना कहकर साफ चादर लेने चली । रामप्रसादने रोककर कहा–" नहीं तुम अब तकलीफ मत करो मेरे सोने का वक्त नहीं है । मैं बाहर जाऊँगा । "

गिर०–" हमारे पास थोडा बैठनेको हुआ तो बाहर का काम लगगया ! काहे ! क्या मैं तुम्हारी स्त्री नहीं हूं !

रामप्रसाद नाराज होकर बोले–"यह सब बातें तुम्हारी हिंसकेकी हैं तुमको किसीका हिंसका करना किसीपर जलना नहीं चाहिये । "

गिरजा– " हिंसका किसे कहते हैं सो तो मैं जानती ही नहीं । हमारी यह बातें हिंसके की हों तो क्षमा करना हमारा मन अब खराब होगया है सुद्धि बुद्धि सब जाती रही है। तुम हमारा मन ठीक करदो, हमको उपदेश दो, सिखलाओ और सजाकरो । तुम हमारे स्वामी हमारे प्रभु देवताहो । तुम्हारेही बनायेसे मैं बनूंगी, तुम्हारेही उपदेशसे मेरा भला होगा । तुम्हारे पांव पडतीहूं हमको सुधारो । "

इतना कहते २ गिरजाका कण्ठ बन्द होगया । स्वामीके चरणोंमें पडगयी । इतनेमें गर्जन तर्जन करती हुई चमेलीने उसी घर में प्रवेश किया । उसे देखतेही रामप्रसादके हियेका तालाब सूखगया । छाती धड़कने लगी । आगे क्या हुआ सो अब हम कहना नहीं चाहते ।

आठवाँ अध्याय ।

रामप्रसाद के घरमें होते होते अब बडाही गडबड हुआ इतने दिनों तक मा मालकिन थी । वही घरका सब खरचबरच चलाती थी । भांडार से जो कुछ निकालकर देती थीं वही लोग पाते थे । बिना माके जाने एक भिखमंगाभी मुट्ठी भर अन्न नहीं पाताथा लेकिन होते २ माताकी यह मालिकी अब नहीं रही । उनकी श्रद्धाकी पतोहूने सब दखल कर लिया । अब उनके घरमें बडा गड बड मचा। इस गडबडका मूल कारण वही रेखा फुआ उर्फ रामरेखा मिसराइनथी । गडबड कैसे हुआ सो सुनियेः—

एक दिन तीसरे पहरको रेखियाने अकेलेमें चमेलीको बुलाकर कहा— "अरे सुनतो बेटी चमेली ! तू क्या जिन्दगीभर इसीतरह से रहेगी । संसारका कुछ काम धाम नहीं सँभालेगी कुछभी अपना नहीं समझेबूझेगी तो इस बुढ़ियाके मरनेपर तेरी क्या गति होगी ? "

दूसरा कोई चमेलीको ऐसा कहता तो न जाने क्या होता लेकिन रेखियाके मुँहसे इन बातोंको सुनतेही चमेली मुसकुराकर बोली—" काहे फुआ ! काम काज जब सिरपर पडेगा तो क्या करे बिना रुक रहेगा ? "

रेखिया आँख तरेरकर सिर हिलाते २ बोली—" यह तो जहानकी बात है लेकिन तेरे कपार तो बाघिन सोते बैठा है । अभीसे सब बूझ समझकर अपने हाथ में न करोगी तो बेटी हमारी बात गिरहा रक्खो एकदिन पछताओगी । "

इस बातसे मानो चमेली चौंकउठी । उसने सब मतलब समझलिया और बोली–" फूआ ! मैं तो इतना नहीं सोचती थी लेकिन–"

रेखा–(बात काटकर) अभी लेकिनही लगा रहेगा ? "

चमेली-" नहीं, नहीं ! कैसे करना चाहिये सोही पूँछती हूँ । "

रेखा–" पल्लो ! अरे छोटकी ! तू मन करे तो का न होजाय ? "

चमेली यह तो बात है लेकिन–"

रेखा–" फिर लेकिन ? "

चमे०–" नहीं यह कहतीहूँ कि, आजतक तो मैं फूलाफूल भी नहीं लोढती अब यह सब करनेके लिये मेहनत करना चाहिये न ? "

रेखा०–" अरे नहीं बेटी ! अभी तू कलकी छोकडी है नारतो सूखा नहीं है । अबतक अँताडियोंभी तेरे शरीर से महक आती हैं तूक्या मेहनत करेगी ! कहना सब, मैं कर दूंगी उसकी चिन्ता क्याहै जाँगर तोड मेहनत तो मैं करसकती हूँ । "

फिर इधर उधर ताक रेखिया फुसफुस कर के बोली–" सुन सुन ? हाथ में तेरे सब पैसा कौडी रहेगी, तू जिसको दो पैसा देगी सोई पावें गा जिसे नहीं देगी सो नहीं पावेगा । देख तो इसमें कितना सुख है । यही तो मेहनत है और मेनहत क्या कुदारी चलाना है ? "

फिर चारों ओर आँखकर कानमें कहने लगी " आ सुन जिसने तुमको जन्माया है जिसने दस महीना पेट में ढोया है उसकी ओरभी तो देखना चाहिये ! जहान बेटा बेटीको काहे तरसता है इसी दिन के वास्ते तो । तू चाहे राजपर बैठ जा लेकिन यह सब बाप माके भागसे तो हुआ है एकबार उनका हाल भी देखना चाहिये उनकी भी खबर लेना चाहिये । वह लोग खाने बिना मर रहे हैं. जब तेरे हाथ में सब रहेगा तू मालकिन रहेगी तो उनको ऐसा दुःख काहे को होगा ? "

इतना कहते २ रेखाकी आँखें आँसूमें छलछलाने लगीं । चमेलीने समझा दुनियामें रेखाके सिवाय हितचाहनेवाला दूसरा नहीं है । वह

मारे सहानुभूतिके गलगला उठी और बोली—" हो फूआ! हमको बतादो कैसा करनेसे कैसा होगा ? तुम्हारे सिखलाये बिना हमको कौन बतलावेगा ? "

अबकी रेखाकी आँखोंसे सरसर आँसू बहने लगे । अपने अञ्चलसे पोंछकर बोली—" हमारा बहन बेटा तो काशी भेजनेके वास्ते हाय धुनता है अब मैं भी समझतीहूं यहां रहनेसे कुछ लाभ नहीं मरनेका किनारा आया अब काशीमें जाकर मरना चाहिये । लेकिन अब चलती चलाती बेरा तेरी मायामें पड़ीहूँ । नसीबमें होगा तो मनकर्निकामें मट्टी लगेगी नहीं तो तुम्हीं सब घिसियाकर गंगामें फेंकदेना या जो मने आवे सो करना इस वक्त मैं कहतीहूँ सो सुनो—" रामप्रसाद से बोलो जे मा बूढी भयीं उनको दान पुन तीरथ वरत करना चाहिये हमारे तुमारे रहते उनको संसार के कामकाज में लगे रहना अब अच्छा नहीं सो उनका दुःख अब हमसे देखा नहीं जाता । सब घरके काम काजका भार हमें देदो तो फिर माका झंझट सब निकल जायगा । और वह अब परलोकका काम काजभी करसकेंगी । "

चमेलीके आनन्दकी सीमा नहीं रही वह फूआकी सलाहपर चलने को जी जानसे उतारू होगयी और रेखा पूरा २ वास्ता कराकर खुशी मनसे हँसती खेलती घर लौटी ।

उसी दिन रातसे रेखाकी सलाह काममें आने लगी । चमेलीने ऐसी तदबीरकी कि, उसको अपने कामके लिये बहुत मिहनत करना नहीं पड़ी । दूसरे दिन सबेरेही रामप्रसादने माको पुकारकर कहा—" मा तुम अब काहेको इस दुखधन्धेमें मरती है ? अब तो तू अपना दान पुन और खाली परलोकका काम कियाकरे तो अच्छा है अब तुम्हारी उमर संसारी कामकाजमें लगे रहनेकी नहीं है । "

बेटेकी इस बातसे माको बडी खुशी हुई । और आशीर्वाद करके बोली—" अच्छा बचा तू मुझे काशी भेजदे तो अच्छा ! तुमको एक

लडका होजाय तो मैं काशी चलीजाऊं । नातीका मुँह देखे बिना तो मुझे वैकुण्ठ मेंभी सुख नहीं मिलेगा । ”

रामप्रसादने कुछ हँसकर कहा—“अरे काशी काहेको जायगी। यहीं रह,लेकिन पूजापाठ, दान पुन यहीं सब कियाकर संसारका सब काम काज छोड़दे ”

माता अकचकाकर बोली—“ अरे संसारका कौन काम काज दादा ! मैं तो पूजा दानके समइयामें पूजा दान करतीहूँ संसारका काम काज जब पड़ता है तब वहभी करतीहूँ उसके वास्ते क्या मैंने कभी किसीसे कुछ कहाहै ? ”

रामप्रसाद--“ अरे कहनेकी बात नहीं । तुम्हारेही आरामके वास्ते कहताहूं घरका सब काम काज अपनी छोटी पतोहूको देदो और तुम इन सब बातोंसे बेफिक्र होजाव । ”

अकस्मात् मानो माताके सिरपर बिजली गिरी अब उनकी खुशी विशाद में परिणत हुई । तुरंत बेटेके कहनेका मतलब समझगयीं । उनने समझ लिया कि अबसे किसी काममें उनकी मालिकी नहीं रहेगी । और उनको भी अब अपनी साधकी छोटी पतोहूके अधीन होकर रहना होगा दो बरस पहले अगर ऐसी घटना घटती तो मा कोपके मारे प्रलय कर देती लेकिन न जाने क्यों नयी पतोहू के घरमें लानेके दिनसे उनके कोपकी मात्राका घटना शुरूअ हुआ है । इसीकारण कोपके मारे अधीर न होकर छलछलाती आंखें दिखाती हुई बोली—“अच्छा छोटी जो घरका सब काम काज सँभालले तो हमारे यहां रहनेका क्या काम है हमको काशी भेजदे ! ”

राममसाद—“ कुछ दिन तो यहां रहो फिर काशी जाने की बात पीछे देखी जायगी । ” इतना कहकर रामप्रसाद बाहर चले गये । दूसरे दिन चमेलीने लौंडी को पुकारकर कहा—“सुनरे सब घरका काम काज कलसे हमसे पूँछकर कियाकर” मालकिन उस वक्त स्नान जानेकी तैयारी कररहीथीं । लौंडीसे कहते सब सुनकर जैसे रोज नहाने जातींथी उसी भावमें चलीगयी ।

नववाँ अध्याय ।

रामप्रसाद की मा पूरी गृहस्थिनी थी थोडे खर्च से सब काम पूराहो इसकी तदबीर वह सदा जीजानसे करती रहतीथी नौकर चाकरके काम पर विश्वास करके रुपया नहीं खोतीथी इसी कारण झगडे समय अधिक मालकी खरीद विक्री आपही किया करतीथी सदा नहानेसे आते वक्त बहुत सा काम अपने हाथसे कर लातीथीं । जहाँ जो चीज़ सस्ती मिलती मिहनतकी परवा न करके वह चीज वहींसे लातीथीं ! लेकिन बेटे राम प्रसादको वह सब बातें पसन्द नथीं । मा बेटेमें इस बातपर सदा झगडा फसाद हुआ करताथा सांसारिक खरचमेंसे कुछ न कुछ जमाकरनेका भी माता को अभ्यास था इस कारण आज माताके दिलमें इस बातकी बड़ी चोट लगी है । और हियेका वह भाव मुँहतक फूट पड़ा है ।

स्नानके घाटपर जाकर आज माता किसीसे कुछ बात नहीं कहती न उनका गंभीर मुँह देखकर किसी औरको उनसे पूँछ पूँछनेका साहस होता स्नान ध्यानके साथही साथ घाटपर कितनेही बड़े घरके लोगोंकी चालचलनकी समालोचना होती है । कितनेही पतोहू और बहुओंकी कितनेही बालविधवाओंका अपवाद कितनेही कुल कन्याओंकी बेहवाई कितनेही धनियोंके धनका घमण्ड कितनेही इज्जतदारोंकी इज्जत का गरूर कहकहकर आन्दोलन होता है किन्तु जो रामप्रसादकी मा इन आन्दोलनोंका जीवन स्वरूपभी आज वही उस कहासुनीमें चुपचाप खड़ी रही । सबसे निराले होकर आज उनका स्नान खतम हुआ अब घाटकी पक्की सीढीपर पूजा ध्यानमें बैठीं । किन्तु आज उनकी ध्यानपूजा नहीं हुई । मन बड़ाही चञ्चल है पूजा कैसेहो ? वह केवल बेटे और बहू के व्यवहारपर सोच विचार करने लगीं । कभी क्रोधके मारे अधीर होती थीं कभी अभिमानके मारे उनकी छाती फटतीथी किन्तु इन सब अनर्थों की जड़ वह खुद हैं । इसीकारण इसे वह किसीसे कह नहीं सकती थीं ।

धीरे २ स्त्रियां अपने २ घरको जाने लगीं। किन्तु आज रामप्रसादकी माको घर आनेकी इच्छा नहीं होती जब अन्त में देखा कि, रेखियाभी चली जाती है तब उसे पुकारकर कहा--" अरे जरा खड़ी तो रहो ! भागी काहे जातीहो । "

रेखा खड़ी हुई। क्यों उसे खड़ा होनेको कहा गया यहभी वह समझ गयी। अब दोनों साथ घरको चलीं। कई मिनट तक चुपचाप चलीगई किसीने कुछ बात नहीं कही लेकिन फिर रेखाने छेड़ा--" हां बहन ! भला आज तुम्हारा मुँह ऐसा उदास क्यों है ?

रामप्रसादकी मासे अब चुप नहीं रहागया। आँसू पोंछती हुई बोली--" का कहें बहन ! अब हमारे दुःखका पार नहीं है। अब हमको अपने घर में चेरीकी तरहसे लौंडी बनके रहना होगा। बेटा है सो लुगाई के पीछे ऐसा भडुआ होगया है कि, आजसे उसी नयी दुलहनको मालकिन बनाया है मैंने जो उसे दश महीने तक पेटमें ढोया था। गुह मूत करके इतना बड़ा पट्ठा किया सो अब मैं बांदी हुई। अब मुझे उस नयी पतोहूके हाथका दिया खाना होगा।"

रेखा इतना सुनकर अवाक् होगयी और चकित होकर बोली--" अरे बहन! रामप्रसाद तो ऐसा लड़का नहीं था। क्या लहुरीका मुँह देखकर ऐसा बसमें होगया। लेकिन बहन इसके वास्ते दुःख काहेको करतीहो। वेद सासतर की बात झूठी थोडे होगी। कलिकालमें ऐसे बेटा होवेंहीगे "

रेखाने शास्त्रकी दुहाई देकर मीमांसा करदी लेकिन रामप्रसादकी मा का मन इससे नहीं भरा वह कुछ रिसियाकर बोली--" तो क्या सासतरमें यही लिखा है कि, माको लौंडी करके लुगाईको घरकी मालकिन बनावे। "

रेखाने नरमहोकर कहा--"अरे बहन ! सास्तरकी बात आजकलके जमाने में मानता कौन है यह तो कलजुगहै न? "

"ओह कलजुगके मुहँ में लुआठ लगा देने" यह कहकर रामप्रसादकी

माने अञ्चलसे आँसू पोंछा । और रेखा बहुतसी इधर उधर की बातें कहकर उनको प्रबोध देनेलगी ।

रेखिया की मीठी बातोंसे रामप्रसाद की मा पसीजगयीं । और समझ ने लगीं कि उसके ऐसा उनका हितकारी जगत् में दूसरा नहीं है । और उस दिन घर न जाकर साथही साथ रेखाके घर पहुँची । रेखाने बड़े खातिर मानसे उनके भोजनकी तदबीर करदी और कुछ उनको भोजन भी कराया साँपरूपसे काटकर वैद्यरूपसे दवाकरने लगीं ।

दशवाँ अध्याय ।

रामप्रसाद की मा जब घर नहीं गयीं तब जरूर उनकी ढूँढ़ खोज होती लेकिन रेखाकी चतुराई से यह सब बंद रहा।क्योंकि ऐसा होनेसे उनके कोप का कारण ज़ाहिर होजाता इससे शायद रामप्रसाद का दिलफिरे और रखाकी सब सलाह मिट्टी में मिलगयी इसी से उसने चतुराई की और रा… प्रसादके घर कह आयी कि,उसने ब्राह्मण भोजनकी तैयारी कीहै इसकारण उनकी मा आज रेखाहीके घर रोटी पानी बनावेंगी और घर न आसकेंगी। रेखाकी चतुराई से उसदिन किसी ने रामप्रसाद की माको नहीं खोजा । रातको सोते वक्त रेखाने कहा—“ देखो तो बहन ! उन सगोंकी अक्कल तो देखो! मा नहाने गयी है आयी नहीं, वहीं डूब मरी या कहीं चली गयी इसकी कुछ खोज खबर उन सबने नहीं की !”

माके मनमें यह बात दिनसेही हड़बड़ी मचारही थी इसके लिये उनको अन्तःकरणसे दुःखहोरहाथा लेकिन मुँहसे कुछ कह नहीं सकती थीं । अब उसी बातको रेखाके मुहँ से सुनकर उनका दुःख मानो उमड़ उठा । आँसूसे छाती भीजने लगी। कुछ देरतक उनका कण्ठ बन्द होगया।

फिर कुछ स्थिर होकर बोली—“देख बहन बेटे और पतोहूकी अकल तूही देख तुम सब जो कहती हो कि रामप्रसाद बड़ा लायक बेटा है सो कैसा लायक है तू ही देखले ! अब वह हमारी खोज खबर क्यों करेग।

हमारे मरनेसे तो उसकी आफत बलाय टरेगी। हमारा मरना तो वह हाथ जोड़कर मनाता है।" रेखा बोली—"भलारामप्रसाद तो खापीके आठही बजे कामपर चलागया होगा। और छोटी के लच्छन बरें वह तो मानो लड़की है। यह तुम्हारी बड़ी पतोहू बुढ़िया की अकल पर मैं बतलातीहूँ सास रिसियाकर नहाने गयी है। दिन भर नहीं आयी इसकी कुछ खोजखबर नहीं? ऐसी पतोहू कौन कामकी! इसीसे तो कहतीहूँ बहन! तेरी बड़ी बहूके पेट में बड़ी बड़ी अकिल है।"

रामप्रसादकी माने आँसू पोंछकर कहा—"हमारे नसीबसे सब छोटीबडी बराबर मिली है।झूठ काहेको कहें बड़ीका ईमान सुनता है इतने परभी वह हमारा बहुत आदर मान करती है इतना उसका निरादर होता है तिसपरभी वह मुँहसे बात नहीं निकालती। अपनेको मानो माटीका समझती हैं। बहन! न जाने इस छोटीको ऐसे हलके घरकी लडकीको न जाने क्यों घरमें लायी! लड़काका लड़का नहीं हुआ उतरे हमारा सोनेका घर मिट्टीमें मिलगया बेटाभी उसीका गुलाम हो गया!"

रेखा जिस रास्तेपर जारहीथी उधर इस वक्त जानेका सुभीता जानकर सीधी राहपर आयी और एक लंबी सांसलेकर बोली—"क्या जाने बहन कैसा जमानाचढ़ा है भलाईका पहरा नहीं है। तूने सबकिया बेटेको ब्याहदिया इतना करके पतोहू घरमें लाई सो अब तुम्हारी ओर कोई देखता तक नहीं देखना तो दूररहा बात नहीं पूँछे तो इससे और दुःख क्या होगा? फिर सौत सौतमें नहीं बनता यह दुनिया जहान जानता है लेकिन सासकी तो आदर मान करना चाहिये सासको तो खुश रखना चाहिये।"

रामप्रसादकी माने कहा—"अरे बहन! आदर मानकी मैं अब भूखी नहीं घरमें रहने दे सोही बहुत है।"

रेखा एक छोटी साँस फेंकक र बोली—"क्या कहूँ बहन! मैंभी यही

सोचती हूँ ? और कोईतो है नहीं अपनाही बेटा अपनीही पतोहू । कोई जाँघ उघारो अपनीही बदनामीहै ! ”

राम० मा–“ अब यहां नरहूँगी काशी चली जाऊँगी. रेखा–“अरे नहीं बहन ! अभी काशीजानेका समय नहीं हुआ है । पहले नाती का मुख देखले फिर काशी जाना । ”

राम०मा–“ ना बहन अभी नातीका मुँह नहीं देखना चाहती अब हमको नातीसे नेह नहीं है । ”

रेखा–“ क्याकरोगीबहन ! तुम तो घरकी बड़ी सयानीहो तुमको सब सहनापडेगा । ”

रा० मा०–“ घरकी बडी सयानीं या मालकिन वही है । मैं होती तो इसतरह घरघर ठोकर खाती? ।”

रेखा–“ अरे नहीं बहन! राजासे बेटेकी मा होकर ठोकर क्यों खावेगी? थोडा सहकर सब सँभालसक्ती हो । ”

रा० मा–“ तो क्या मेरे नसीबमें यहीथा । ”

रामप्रसादकी मासे रहा नहीं गया फिर रोउठी लेकिन रेखा तो मीठी बातोंका घरहै वह लगी चिकनी चुपडी बातोंसे उसको प्रबोधदेने बहुतसी बातोंके बाद दूसरे दिन सबेरे घर मिटजानेकी बातहै पापी रामप्रसादकी मा अब किसी सांसारिक काम काजमें हाथ नहीं डालेगी । दिनमें एकवार अपने हाथसे बनाकर खावेगी पूजा पाठ और महल्ले २ घूमकर दिनबिता वेगी यही सलाह ठहरी रेखाका उद्देशभी सफल हुआ ।

ग्यारहवाँ अध्याय ।

इधर रामप्रसादके घर बड़ा गड़बड़ हुआ । पहले जितने खर्चेसे काम काज चलता था उसके दूनेसे भी चलना कठिन हुआ । चावल है तो दाल नहीं, दाल है तो नमक नहीं, नमक है तो तेल नहीं । उसी

तरह अनलाव धनलाव भूसन वसन लाव लाव लावही बनी रहती थी। पहले आठ आनेमें जिस सन्तुष्टतासे घर भरका आहार होता था अब रुपयेमें भी वह मोहाल हुआ। कौन जिन्स कब चाहिये उसके पहले से कुछभी जाननेकी तदबीर नहीं रही। इस कारण दूसरे तीसरे दिन बिना-खाये रामप्रसाद को ऑफ़िसमें जाना पड़ताथा। लौंडीका मान तो मुँहको आता था एक दूकानपर दिनभरमें तेरहबार जाना पड़ता था। इस परभी एक सीधी बात नहीं दिनभर गर्ज्जन, तर्ज्जन और तिरछी-बाँकी सुनते २ जानपर आफत आती थी। झूनाका वह गर्जन तर्जन अब भूल गया है। नौकर नौकरानी सब की जानपर आफत है। जो कभी भर पेट अन्न पाते हैं वह तरकारी बिना तरसते हैं जो तरकारी मिली तो भोजन पूरापाते विना भूखे रहजाते हैं। नौकर जो तीन पुस्तसे नौकरी करता है अब सब माया मोह छोड़ देनेको तैयार है। मालकिन मुँहसे कितना ही उनको बकें झकें लेकिन पेट उनका अच्छीतरह भराती थीं लोग कहते हैं पीठ मारना लेकिन पेट नहीं मारना सो मालकिन खूब समझतीथी. इसी कारण मालकिनका बकना झकना नौकर नौकरानियोंको खलता नहीं था। अब उनपर यह बक झक और तिरस्कारकी मात्रा तो दूनी हो गयी है किन्तु दोनोंवक्त पेट भर खानेमें भी खलल हुआ है। अब यह पहलेके समान ईमानदारीसे नहीं चलते। बात सही है वह मालकिन का बकना झकना सह सकते हैं लेकिन एक छोटीसी लड़की जो अभी तीनचार बरससे यहाँ आयी है उसका तिरस्कार कैसे सहेंगे?

इसीसे हमने कहाहै कि, आज रामप्रसादके घरमें बड़ा विभ्राट घटाहै। मालकिनका अब घरके किसी काम काजमें मन नहीं लगता विषहीन साँप दलदलका फँसा हाथी जैसे मनका दुःख पड़ा सहता है मालकिन भी उसी तरह पड़ी दुःख सहरही हैं। जब दुःख बहुतही असह्य हो जाता है तब महल्लेके इस घरसे उस घरको फिरा करती हैं। किन्तु

मनकी बात सदा मनमें नहीं रख सकती बेटे और छोटी पतोहूके व्यौहार और गुनकी बात बहुधा महल्लेवालोंसे कहतीहैं।वह उसे बेटे और पतोहूके कानतक पहुँचाते हैं । बेटा मापर इसके लिये अतिशय कोप करता है । पतोहूके कोपकीभी सीमा नहीं है पतोहूका केवल कोपही नहीं है क्रोधके साथही साथ हिंसा द्वेष और घृणाभी बलवती होती जाती है किन्तु बेटेका कोप बाहिर नहीं होता क्योंकि उन्होंने माके साथ बात करना बन्द कर दिया । किन्तु जब पतोहूका कोपदल बाँध कर सासपर पड़ता है तब सासके निरादरकी सीमा नहीं रहती ।

लेकिन इधर घरमें जैसा गड़बड़ और गोलमाल हुआ उससे अवश्य रामप्रसाद माताके पैर पड़कर माफी माँगते और फिर घरका सब भार माके सिर सौंपते यदि मा धीर धरती और उनकी बदनामी घर २ नहीं करती फिरतीं । लेकिन यहां दोनोंने भूलकी । रामप्रसादने मनमें ठाना कि, जब मा हमारी घर घर बदनामी करती है तब घर चाहे मिट्टीमें मिलजाय मैं उससे बातभी नहीं करूँगा । उधर मा समझती है घर २ कहने सुननेसे बेटेका मन कुछ भी फिरेगा तो वह सब पतोहूके हाथ से निकालकर उसे मालकिन बनादेगा । इसी भावनासे माता घर घर बेटेकी बदनामी करनेलगी छोटी बहू से अधिक कोप बेटे परही निकालने लगी ।

हा! यही भूल अनेक समय हम लोगोंका सर्वनाश करती है । अगर इस संसारमें ऐसी भूल न होती तो यह स्वर्ग समान होजाता । बेटेपर मा का क्या स्नेह नहीं है ? माताके प्रति पुत्रकी क्या भक्ति नहीं है ? सब हैं किन्तु जब यह भूल हमारे घरमें घुसती है तब माताका स्नेह और पुत्रकी मातृभक्ति न जाने कहां चली जाती है और सोनेका घर श्मशान हो उठता है संसार बडाही विषम स्थान है । बड़ी सावधानीसे चलनेकी जगह है । एकबारभी पांव फिसलनेसे सँभलना कठिन है । इस संसारमें एकबार दाँव चूकनेपर फिर रक्षा नहीं है । मालकिनने पहली भूल यहकी

कि, घरमें लक्ष्मीके रहते भी उसे लात मारकर बेटेकी दूसरी शादी की माता इस भूलको क्या सुधार सकतीहैं? इसीकारण इस संसारमें मालकिनसे कोई काम ठीक नहीं होसकता वह सबमें भूल करेंगी रामप्रसादकी भूल देखो घरमें गड़बड़ होरहाहै यह मनमें समझकर भी उसके दूर करने की तद्बीर नहीं करता। मातापर अभिमान करके अपने पाँवमें आप कुल्हाड़ी मारता है।

इसीसे कहते हैं खबरदार रहो! यह संसार बडा बिकट स्थान है। एकबार भूलनेसे भी रक्षानहीं है। खूब सावधान होकर चलना चाहिये।

बारहवाँ अध्याय।

तो क्या रामप्रसाद अपने घर का यह सब गडबड दूर करनेकी कुछ तद्बीर ही नहीं करते! हम लोग रामप्रसाद पर इतना बडा दोष लगाने का साहस नहीं करेंगे। रामप्रसाद समझदार आदमी है। पढे लिखेहैं। परमेश्वर ने उन्हें बिचार दिया है। हिसाब किताब समझते हैं इन सबके विना वह इतने बडे सौदागर के ऑफिसमें ऐसी नौकरी ही कहाँ पासकते थे? और अपना भला बुरा तो पशुभी समझता है। रामप्रसाद ने गड़बड़ मिटाने की क्या तद्बीर की सो सुनिये।

इतना गड़बड़ से बहुतही नाराज होकर एक दिन रामप्रसाद ने चमेली को पुकार कर कहा—"जो काम नहीं करसकती उसमें हाथ क्यों डालती है।"

चमेली ने मुसकुराकर कहा—"ऐसा कौन बडा काम है जो नहीं बनेगा।"

उस मुसकुराहट से ही रामप्रसाद की आधी नाराज़ी दूरहुई कुछ नरम होकर बोले—"अपने ही मनसे तो सब घरका काम काज सिरपर उठा लिया है अब चलाती काहे नहीं?"

चमेली फिर उसी मुसकुराहटके साथ सिर हिलातीहुई बोली "काहे नहीं चलाती ! यही समझते तब तो तुम्हारी यह दशाही नहीं होती ।" कहनेके साथ साथ कुटिल कटाक्ष भी चलरहा था ।

रामप्रसाद उस मनमोहन मुसकान के साथ भौंहोका कटाक्ष देखकर पानी पानी होगये । चमेली फिर बोली "हमको कोई करनेही नहीं देगा तो कैसे करूँगी । यह घर हमारा घर तो है नहीं यह तो आज कल हमारा वैरीका घर होगया है । सब एक ओर हैं और मैं अकेली, भला मैं कैसे पारपाऊँगी ? इतना सहकर सब करतीहूँ तो भी घर घर हमारी निन्दा हमारी बदनामी ही की जाती है । अच्छा जो हमारी ही निन्दा हो तो हो हमारी बलासे तुम तो बेकसूर बेदोस रहते लेकिन साथही साथ तुम्हारी बदनामी से भी गाँवमें कान देना मोताब है । जहां देखो वहीं तुम्हारी निन्दा । यही तो महतारी की अक्ल है ।"

कहते कहते चमेली का वह चन्द्रवदन गम्भीर हो चला मानो कहीं से राहुने आकर पूर्णिमा के चाँद को सहसा ग्रसलिया । प्रकृति का नियम कौन टाल सक्ताहै साथही साथ बिजलीसी हँसी पर एक भयानक मेघदिखाई दिया । फिर टपाटप बूँदें आने लगीं । मोतियोंकी तरह चमेली की आँखोंसे आँसू निकलकर गालोंसे आने लगे । रामप्रसादका सिर चकरा गया ।

रामप्रसाद गरजकर बोले–" मा बड़ी बेसमझ हैं मैं इतना करताहूँ तो भी वह नहीं मानती ! अब क्या करूँ वह मा नहोती तो–"

चमेली भी चटपट आँसू पोंछकर बोली–" अरे मा तो भला माहै उनको अकिल नहीं है अकिल होती तो घर घर हमारी तुम्हारी निन्दा काहे को करती फिरतीं । उनके साथ कई अकिल वाली भी तो मिलीहैं जो बाहर तो मीठे २ बोलती हैं और भीतर छूरी लियेहैं । उनकी करनी तो बेढ़ी बेढ़ी है ।"

रामप्रसादने आग्रहसे पूँछा–"वह कौन कौन हैं ?"

चमेली बुलाक हिलाकर बोली—"अरे आर दूसरी कौन तुम्हारी वही बड़े आदर की बड़ी रानी और उन्हीं की सोहागिनी लौंडी झूनादेई।"

रामप्रसाद को बडा गुस्सा आया। मारे कोपके काँपने लगे। कुछ देरतक मुँहसे बात नहीं निकली। थोड़ी देर बाद जब कुछ शान्त हुए तब बोले—"झुनियाँ का इतना बडा दिमाग! मैं कल्ही उसे झाड़ू मारकर निकालदूँगा।

चमेली-"अच्छा झूनियाको झाडू मारकर निकाल दोगे लेकिन रानी को तो झाडू नहीं मार सकोगे! उनके लिये क्या करोगे"

राम प्र०—" उसको भी ठीक करेंगे।"

चमेली—" अरे रहन दो बड़े ठीक करनेवाले बने।

इतना हिम्मत होती तो तुम्हारा यह हाल काहेको होता। तुममें कुछ मरदानी थोड़े है इस बातमें तो हमाराही भैया है कि, भौजी तनिक गड़बड़ करै तो झोंटा पकड़ पकड़के मारता है!"

राम प्र०—मैं तो जानता था कि, उसका कुछ गुनाह नहीं है। वह सदा तुम्हारी खुशामद में रहती है क्योंकि उसको मैंने तुमसे बाहर होकर कोई काम करते नहीं देखा।"

चमेली—" तुम देखोगे कैसे! तुमको तो उसने भेड़ा बना डाला है। बड़ीका नाम लेते ही तुम नीहाल हो जाते हो। जो वह ऐसी प्यारी थी तो हमको व्याहनेका क्या काम था?"

राम प्र०—" अरे मैं वह बात नहीं कहता। तुम तो नाहक ऐसी बात उभाडती हो। बेकाम काहेको उस बातको छोड़कर गुस्सा करती हो?"

चमेली—" हुआ, हुआ! मैं सब ढङ्ग समझती हूं! तुम्हारा मतलब भी खूब समझगयी हूँ। यही समझते समझते तो मेरी हड्डी पकीं जाती हैं"

अब की विना मेघके पानी बरसना शुरूअ हुआ। बिन्दुपर बिन्दु फिर साथही मूसलाधार आँसू गिरने लगा। रामप्रसाद का सब ज्ञान चूल्हे

में चला गया। वरका गड़बड़ दूर करनेकी चेष्टा उसी घरमें वह गयी। ठीक है चमेली! तुमने ठीक कहा है कि, रामप्रसादमें कुछ मरदानगी नहीं है।

अब रामप्रसाद एक निश्चेष्ट पुरुष नहीं है यह बात यदि हमारे पाठक पाठिकाओंने समझलिया है तब जरूर हम इस अध्यायका अपना परिश्रम सार्थक समझेंगे।

तेरहवाँ अध्याय।

तो क्या रामप्रसादमें सच मुच मरदानगी नहीं है? यह बात अगर हम लोग कहते तो कुछ बहुत नुक़सान नहीं था, लेकिन जब चमेलीके खुद श्रीमुखसे यह बात निकली है तब रामप्रसाद कैसे चुप रह सकते हैं। वह निश्चेष्ट कैसे रहेंगे। बात रामप्रसादको बहुतही कड़ी लगी। अब अपनी मरदान गी दिखानेपर तैयार हुए। मरदानगी की पहली चोट झुनियापर पड़ी। चट झुनियाको बुलाकर रामप्रसाद बोले—काहेरे झुनिया तेरा तो बड़ा दिमाग़ हो गयाहै। हमारा खाती है। हमारा पहनती है और हमारी ही बुराई करती है क्यों?"

बाबूका भाव देखकर पहले झुनियाँ डरी लेकिन तुर्त ही उसको यह बात यादआयी कि, बाबू चमेलीके पाससे चले आरहे हैं। अब बाबूके कोपका कारण भी झुनिया समझगयी। साहसकरके बोली—"काहें बाबू हंमको बुनाई करीं हैं?"

रामप्र०—"नहीं तेरादिमाग बहुत बढ़गया है तू बहुत इधर उधर घूमती है।"

झुनिया—"अंछां घूमती हैं तो घूमनें दों तुंमार बुनाई का करीं हैं।

राम प्र०—"अभी फिर निनिनाती जाती है। मुँह बन्द कर नहीं मारे जुतोंके खोपढी रंगदेंगे बेईमानिन् कहीं की।"

झू०–" काहें तों मारनां एकबेर जूतां मारनेंका मजां बूं झनां हमारं छरींर अच्छांरहें तो तोंहरां अश ढेंरबांबू मिलिहें मेंहरारूकें हांथ मांरनां मुहं कां कहें कें बरांबर नहीं हैं ।"

बाबूतो आगे न बोलसके झूना हाथ मटका मटकाकर निनिनाने लगी। इतनेमें चमेली खुद वहाँ आपहुँची बाबूकी जगहपर होकर आपने झूनासे वह मुर्गलड़ाई नाधी कि, विश्वविजयिनी झूनाको भी नाक बन्दकरके भागनापडा क्योंकि न भागती तो बाबूके जूतेसे बँचना कठिन था आजकी इसी घटनासे झूनाका अन्न पानी इसघरसे उठ गया ।

रामप्रसादका दूसरा काम गिरजाको शासन करना. गिरजाको अब रामप्रसाद ठीक करनेचले । जो गिरजा इस घरमें पहले मालकिनथी अब वह लौंडीकी तरह रहती है । रातदिनकी छतिया फाड़ मिहनतसे गिरजाका शरीर सूखकर हड्डी रहगयीहैं । वह सोनेसा दीप्तमान शरीर, वह सदा प्रफुल्लमुखकमल वह सकरुणदृष्टि इस शरीरकी वह सब नैसर्गिक शोभाही न जाने इस समय कहाँ बिलायगयी है । जिसकी सुन्दरता, जिसकी अनुपम सुघराई डाइ खानेवाली सुन्दरियोंकी तीव्रसमालोचनासे भी बरकरार था वह सौन्दर्य्य आज मानसिक कष्टसे मलीन होगया है । शोभाकी बात तो दूर जाय गिरजाका जीवनभी अब अबतबकी दशामेंहै आज उसी गिरजापर उसका स्वाभी मरदानगी दिखानेको तैयारहै । रामप्रसाद क्रोधके मारे इस वक्त अन्धा है । इस कारण गिरजाकी यह दशा देख दुखीहोनेके बदले दाँतपीसकर बोला–" देख अब तेरे मारे हमको चैन नहीं है अब तेरी करनीसे हमें बड़ी जलन होरही है । आग लगे तेरी पतिभक्तिमें परमेश्वर तुझसे बचावे । अब मैंने तेरी सब बदमाशी समझली है । "

लेकिन रामप्रसाद का यह निरादर यह तिरस्कार वाक्य गिरजाके कानमें अमृतकी वर्षा करनेलगे । साध्वी स्त्री स्वामीके आदरसे तिरस्कारका अधिक मोल समझती है । गिरजा आनन्दके मारे गद्गद स्वरसे

बोली—" अच्छा नाथ ! तुम इतने दिन बाद अभागिनीको दर्शन देने आयेहो आवो । लेकिन इतना चिल्लाकर बात क्यों प्रभू ! कुछ कहना चाहतेहो धीरे २ कहो । मारनाहै धीरे धीरे मारो कोई सुनलेगा तो तुम्हें यहां खड़ाभी नहीं होने देगा । नाथ खड़े क्योंहो ? एक बार हमारे पास आकर बैठो । "

रामप्रसाद का पत्थर दिल अबभी नहीं पसीजा उसीतरह चिल्लाकर बोला—" रहनेदो अब और प्रेम दिखानेकी जरूरत नहीं है । "

गिरजा—नाथ ! मैं तुम्हें प्रेम क्या दिखाऊंगी और क्या बताऊंगी । हमसे जो कुछ अनजानेमें अपराध हुआहो तो प्रभु ! बुझादो हमको समझादो सिखलादो, तुम्हारे बतलाये बिना तुम्हारे सिखलाये समझाये बिना हमको कौन बतलावेगा ! कौन सिखलावेगा ? "

रामप्रसाद—" मैं तुझे सिखाऊँगा ? तू क्या अब वही गिरजा है ? "

गिरजा—" मैं प्रभू ! तुम्हारी बात नहीं समझती । न जाने तुम्हारा दिल किसने हमारी ओर से ऐसा फेरा है ? "

रामप्र०—" कौन कहताहै तू डाह नहीं करती, तुझे हिसका नहीं है कौन कहताहै ? तेरी बात बातमें डाह, ईर्षा, हिंसा, निकलतीहै इसीसे तो तू सर्वनाश करतीहै । "

गिरजा—" तुम स्वामीहो ! देवता अन्तर्यामीहो ! तुमसे मैं क्या छिपाऊँगी । मैं और किसी बातकी हिंसा नहीं रखती हिसका नहीं करती केवल तुम्हारे प्रेमका तुम्हारे प्यारका हिसका करतीहूँ तुम अपने बलसे हमारे हृदयसे इस हिंसाको चाहो निकालदो । तुम जो मन करो सोही करसकते हो । "

रामप्र०—" देखो खबरदारहो ऐसी हिसका मत करो सँभालो । "

गिरजा—" मैं खबरदार होनेकी चेष्टा करूँगी किन्तु नाथ ! तुम्हीं मेरे बलहो तुम बल नहीं दोगे तब तक मैं कुछ नहीं करसकती । मैं अबलाहूँ निर्बलहूँ । "

रामप्र०–"अरे! वह सब फन्देकी बात रहनेदो इस वक्त जो मैं कहता हूँ सो सुनो। अगर नहीं मानोगी तो तुम्हें बहुत दुःख भोगना पड़ैगा।

इतना कहकर रामप्रसाद वहांसे चलते हुए। गिरजा विस्मित नेत्रोंसे कुछ देर तक देखती रही फिर आंसू पोंछकर अपने काममें लगी। क्षमा! तुममें कितनी सहनशीलता है? गिरजाकी सहनशीलताने तो तुम्हें जीत लिया है।

रामप्रसाद का तीसराकाम माताको ठीक करना-माको पुकारकर रामप्रसाद ने कहा–" देखो! तुमको हमने आजतक कुछ नहीं कहा है लेकिन तुम अब इतना सिर चढ़गई हो कि, बिना बोले नहीं बनता तुमको मा समझ कर हमने बहुत सहा लेकिन अब सहा नहीं जाता।"

मा अवाकूहै। आज बहुत दिनों बाद उनका एक मात्र पुत्र उनसे बात करता है। वह क्या जवाब देगी इसका कुछ भी विचार न करसकीं। रामप्रसादने फिर कहा–"तुम अब सदा हमारी बुराईकी चिन्ता करती हो तुम्हारेही मारे हमारा आदर, मान, बड़ाई, घर द्वार सब नाशहुआ।"

मासे अब सुनते नहीं बना रोउठी। बेटेके मुँहसे ऐसी बात सुनकर वह कैसे चुप रहसकती है। किन्तु बेटेने माकी वह वेदना नहीं समझी। मा भी बेटे को समझ न सकी। बेटे ने बहुतसी बातें कहीं मा भी बड़ी देरतक रोती रही। अन्तमें फल यह हुआ कि, बेटेने समझलिया कि, माका उसपर अब पहले का कुछ भी स्नेह नहीं रहा। माने भी समझा कि, बेटेकी पहिली मातृभक्ती अब कुछ भी मापर नहीं है!

चौदहवाँ अध्याय।

अब धीरे २ रामप्रसाद माके गुणों की बात भूलने लगा। अब माके दोषकी बात चारों ओर से बेटे के मनमें अधिकारपाने लगी। गिरजा की बात अब हम क्या कहें? रामप्रसाद इसके पहलेही उस प्रेमप्रतिमाको विसर्जन कर बैठाहै अब जो कुछ है वह भी बहाबैठा।

रामप्रसाद की सांसारिक अवस्था हम पहले बतला चुके हैं। वह दशा अब और शोचनीय हो उठी । रामप्रसाद उसके दुःखसे घबराने लगा हाँ यहाँ एक बार हम भूले जातेथे। रामप्रसाद की दशा ज्यों ज्यों ख़राब होने लगी। चमेली के बाप की दशा उसी तरह सुधरने लगी। इन दोनोंकी दशाका कुछ निकटवर्ती सम्बन्धहै या नहीं सो नहीं जानते किन्तु हम निश्चय कहते हैं हमारी रेखाफुआ से एकान्त में पूँछा जाय तो इसका जवाब वह देसकती है। लेकिन रामप्रसादके मनमें इस बातका कुछ भी ध्यान नहीं है।

रामप्रसाद इतने दिनोंतक माता और गिरजापर नाराज़ होकर चुप चाप पड़े थे। लेकिन होते २ उनकी दशा अब ऐसी ख़राब होगयी कि, अब वह चुपचाप नहीं रहसके तब कोई न कोई तदबीर करने को तैयार हुए लेकिन तदबीर क्या करेंगे? ऐसी हालत में ऐसे आदमियों की जो गति होती है रामप्रसाद की भी वैसीही हुई बहुत कुछ सोच समझकर रामप्रसाद फिर चमेली के शरण में आये। इसबार विनतीकर गिड़ गिड़ाकर चमेली से बोले-"सुनो हो! आज कल जैसा खर्च बढ़ा है वह उतना मैं जुटा नहीं सकता देखताहूँ ऐसाही रहातो थोड़ेही दिनोंमें भूखे मरना पड़ेगा। तुम इसकी कुछ जल्दी तदबीर करो।"

चमेली स्वामीके विषन्न मुखके आगे अपना मुँह लटकाकर वही सर्वनाशिनी हँसी हँसाके बोली-"खर्च तो धीरे धीरे बढ़ताही है लेकिन तुम आमदनी काहे नहीं बढ़ाते?"

रामप्रसाद-"आमदनी बढ़ाना खाली मुँहसे कहदेने का तो काम नहीं है!"

चमेली-"तुम अपने साहबको तलब बढ़ाने के वास्ते कहो काहे नहीं?

रा० प्र०-"आज कल ऑफ़िस की जो दशा है उसमें अगर महीना बढ़ानेकी बात कहें तो तुरंत नौकरी जायगी।"

चमेली-"तो कोई दूसरी नौकरी देखो। खर्च तो बढा ही है और दिन दिन बढ़ेगा। और अब-"इतना कहते २ लज्जितभावसे चमेली

ने शिर नीचा करलिया । रामप्रसादने आग्रहसहित पूँछा क्यों? क्यों ? कहो ! क्या कहती थी ! चुप क्यों रही ? "

एक बातमें रामप्रसाद को भी शक था । उसीको निश्चय करनेके लिये बार बार पूँछने लगे । चमेली पहले तो कुछ न कहसकी लेकिन जब पीछा नहीं छुटते देखा तब स्वामीकी गोदमें सिर रखकर शरमाती शरमाती बोली—" मैं तीन महीनेकी नहायी हूँ । "

रामप्रसादके मानों हाथमें चाँदपाया । मारे आनन्दके नाच उठे । और आनन्दके वेगमें चमेलीका बलपूर्वक आलिङ्गन करके मुखचुम्बन करने लगे । कुछ देरतक रामप्रसाद पर पागलका साया आगया जब होशमें आये तो देखा चमेलीने एक अपूर्व शोभा धारण किया है ।

रामप्रसादकी चमेली इतना सुन्दरी है, उसमें इतने गुण हैं, एकही साथ इतना गुण और ऐसा रूप क्यों हुआ ? विधाताकी सृष्टिका यह अपूर्व कौशल समझना बड़ा कठिन है । क्षणहीमें रामप्रसाद घर द्वार संसार सब भूल गये । घरकी गड़बड़ी, माताका दुःख, गिरजाकी पीड़ा देने पावनेकी चिन्ता सब जाती रही ! रामप्रसाद का दिल नयेउत्साहसे भर गया ।

आनन्दका वेग जब कुछ ठण्ढा हुआ तब रामप्रसाद बोले " तो सुनो अब तुमको खूब सँभलकर चलना चाहिये घरका काम काज बहुत कम करना चाहिये । मेहनतसे बचना चाहिये । लेकिन तदबीर क्या है ? कैसे घरका काम काज चलेगा" ?

चमेली—" कैसे चलेगा इसके वास्ते सोचनेका काम नहीं है हमने सब ठीक कर रक्खा है । "

रामप्रसाद—" क्या ठीक कर रक्खा है ? "

चमेली—" बात यह कि, हमे वैरीके घरमें रहना है । इस घर भरमें हमारे एक तुम्हीं हो और सब हमारे वैरी हैं । एक और अपना आदमी इस वक्त चाहिये । मैं तो कहती हूँ कि, रेखाफुआ को बुलाकर रखना

ठीकहै । वह हमको बहुत चाहती है इस समय जरूर रहना मंजूर करेगी।"

इस वक्त चमेलीकी बात उतराने पाखण्ड न करनेकी ताकत रामप्रसादको थोड़े है । वह विना कुछ सोचे विचारे राजी होगये और चट बोल उठे—" यह सलाह अच्छा हुआ है वह तुम्हारी भी सेवा करेगी । घर सँभालने में बड़ी पक्की है उसके राजी होनेपर तुमको बहुत आराम होगा । अगर वह राज़ी हो जाय तो काम बने । "

चमेली—" राजी होनेके लिये आप चिन्ता न करो इसका भार हमारे ऊपर रहेगा और भी एक बात है हमको लड़का होनेकी बात सुनकर सब जल भुनके खाकहोंगी न जाने क्या क्या करेंगी इससे मैं लड़की अबोध हूँ इन सब बातोंका बचावभी वह खूब करलेगी । "

इतना सुनकर रामप्रसाद उन्मत्तकी तरह बोल उठा—" तुम्हारी जो बुराई चाहेगा वह हाथे हाथ फलभी तुरत पावेगा । वह चाहे कोई हो मा हो तोभी मैं छोडनेवाला नहीं हूँ । "

रामप्रसादकी बात खतम होनेके पहलेही चमेलीके चित्तमें आनन्दकी लहरें झकझूमर खेलने लगीं ।

पंद्रहवाँ अध्याय ।

ठीक समयपर चमेलीकी बात पूरी की गयी रामरेखा मिसराइन अब रामप्रसादके घरकी मालकिनबनी । इस घटनासे रामप्रसादकी माके पेटमें त्रिशूल वेधगया वह मारे दुःखके बेकलहोउठी पहले रामप्रसादकी मा और रेखाकी जो गहरी मिताई थी इस घटनाके बाद सब उड़कर पार हुई। रेखा सब घरकी फुआहै वरके घरकी मौसी और कन्याकी फूआ बनकर रामप्रसादकी माके साथ अपनी मिताई तो बहुत निबाहना चाहती है लेकिन कर्मरेख कौन टारे इधर मालकिन अपनी पतोहू का दरनापा चाहे सहले लेकिन पराये घरकी करकटही आकर उनपर मालिकी करनेलगी यह भला कहां उनसे सहा जाय ?

हाँ एक बात और हम भूले जातेहैं पतोहू का गर्भसंवाद सुनकर सासने कुछ खुशी नहीं की. जो सास पतोहू का पुत्रमुख देखनेके लिये धाम धाम भटकती फिरतीथी जिसने अनेक मठिया और देवी चौरा, हनुमान चौतरा पोताथा वह पतोहू के गर्भसे होनेका सम्बाद पाकर चुप क्यों रही ! हम जानते हैं अब माने समझ लिया है कि, यही पुत्रलालसा उनके दुःखका कारण है । उनके सर्व्वनाशकी जड़ यही है । इसी पुत्रलालसाकी तदबीरमें इन्होंने अपना सोनेका संसार राई छाई कर डाला है । लेकिन यह बात अगर उन्होंने इतना जल्द समझ लिया तो हम समझते हैं वह जल्द अपनी जिन्दगी सुधार सकेंगी उनकी जिन्दगीकी इससे आगेवाली बातोंकी समालोचना करनेसे इस बातकी सत्यतामें सन्देह होता है । हमने रामप्रसादकी माके इस चरित्रको बहुत तरहसे समझना चाहा लेकिन अफसोस समझ न सके जब देवता लोग इनके चरित्र जाननेमें नहीं पेशपाते तो हम साधारण मनुष्य क्यों समझेंगे ! फिर विशेष इन मालकिनोंका मंत्रजानना बड़ीही टेढी खीर है ।

इस मौकेपर गिरजाकी थोड़ीसी बातें कहनेसे हम समझते हैं हमारे पाठक नाखुश न होंगे । गिरजा इस खबरसे बहुत खुशहै । सुनकर हमारे पढनेवाले और पढनेवालियाँ अकचकायँगी कि, गिरजा सौतका गर्भसम्वाद सुनकर अपमान, लांछना सब भूलगयी और मारे खुशीके इतनी अधीरा हुई कि, चमेलीके पास आकर बोली—" काहे बहन ! आज मैं एक खुशीकी खबर सुनके आयी हूँ । तुमने इतने दिन तक हमको काहे नहीं बतलाया बहन ! "

चमेलीका मुँह गम्भीर होउठा सहसा कोई दुर्भावना होनेसे जैसें किसी का मुँह होता है ठीक वैसेही चमेलीका मुँह होआया । जिन दिनोंकी बात हम कहते हैं उन दिनों हमारे पास डिटेक्टिव केमेरा होता तो हम झट चमेली की तसवीर खींच लेते और यहां सबके देखनेको लगादेते लेकिन उसके न होनेपरभी चमेलीकी बातें मौजूद हैं लीजिये सुनिये—

चमेली झटसे बोल उठी–" कौन बात हमने तुमसे छिपाया है जो कमर कसके यहां झगड़ा करने आयी हो ? "

गिरजा–" अरे झगड़ा काहेको करूँगी बहन । तुम तो हमारी छोटी बहन बराबर हो । परमेश्वर करे तुमको एक सुन्दर लड़का हो । "

चमेली–" हमारे नसीबमें होगा तो तुम्हारे असीसनेपरभी होगा और डाह करके कोसने परभी होगा । "

गिरजा–" ना बहन डाह काहेको करें ? तुम्हारे लड़का होनेसे हमारे ससुरका वंश चलेगा हमारे तुम्हारे लड़के में बहन कुछ फरक थोड़े है ?

चमेली–" फरक काहेका । हमको लड़का जहां हुआ कि, तुम्हारी छाती फटने लगेगी । मैं तो साफ बात कहतीहूँ । "

सुनकर गिरजाके आनन्दका वेग बाधा पानेसे रुकगया । वह विस्मित होकर बोली–" बहन चमेली ! तुम्हारी इस बातसे तो अलबत्ते हमारी छाती फट रही है हमने कभी तुम्हारी बुराई नहीं चेती, लेकिन हमारा नसीबही ऐसाहै कि, तुम हमको ऐसा समझ रहीहो । "

चमेली चाहे हजार बुरीहो लेकिन हम सच्ची बात सदा कहेंगे वह रेखा की तरह पेटमें कपट भरकर बाहरसे चिकनाना नहीं जानती । इसी कारण इसकी बातें रेखाकी तरह मीठी नहीं लगतीं रेखा जो मुँहसे निकालती है वह जहर है सही, लेकिन वह उसमें मिश्री लपेटकर रखतीहै । और चमेली का जहर सिरसे पांवतक जहरही जहर है । इस संसारमें शक्कर लिपटा जहरही अच्छा है । खैर इसका हम इस वक्त कुछ बिचार नहीं करते । गिरजाकी बातोंसे चमेली झनककर बोली–" हे, हे, हमारे आगे नसीब नसीब मत करो हमारा नसीब अच्छा इनका नसीब बुरा है । तिसपर कहतीहै हिसका नहीं करती, हिसका और किसको कहते हैं ? "

गिरजा बेचारी अब क्या करे ! उसके मुहँ से और कुछ बात नहीं निकली और धीरे से वहाँसे उठकर चली गयी । गिरजाके जानेपर रेखा फुआ वहाँ पहुँची । उसे देखकर चमेली बोली–" देख तो फुआ !

कसबियाकी अक्किल तो देख ! हमारे लड़का होगा इसीको सुनकर मारे हिसका के मरीजातीहै ! हमारा नसीब अच्छा और अपना नसीब खराब कहकरके इतनी बात करगयी कि फुआ ! हम तुमसे का कहें ?"

रेखा चौंककर बोली–"ऐं ! तुम्हारे मुहँपर ऐसी २ बात कहगयी है?

चमेली–" और क्या ! वह तो इतनी हिसकामें डूबी जातीहै कि कुछ कहा नहीं जाय !"

रेखा–" खब खबरदार बेटी ! खूब खबरदार रहियो ! का बताऊं मुझे तो रातभर नींद नहीं आवे । इन सब वैरिनके बीच से तुम्हारे पेटका बालक कैसे बचेगा इसकी मैं कुछ भी तदबीर नहीं देखती ।"

चमेली–"तो फूआ कैसे बनेगा ? जब तुम नहीं तदबीर करसकती तो का उपाय होगा ?"

रेखा–"बेटी चिन्ता काहे को करो ? तुम्हारा उपाय भगवान् करेगा तुम किसीका अनभल तो चेतती नहीं हो । हे परमेश्वर ! इतना हिसका तुमसे कैसे देखाजाताहै ?',

चमेली–" और सासकी का कहूँ फूआ ! ऐसी सास तो दुनियामें देखी न सुनी. अब देखो दिनमें एकबार झौंकती भी नहीं बस महल्ले महल्ले घर घर हम लोगनकी निन्दा करनाही उनका रोजगार होगया है ।"

रेखा–"बेटी ! पहले तो मैं तुम्हारी सासको बहुत भली आदमिन समझती थी लेकिन अब तो उनका काम देखके कुछ कहते नहीं बनता हमको तो बेटी किसीके भले बुरे से कुछ गरज है नहीं न मैं किसीके अच्छे में न बुरे में । सो मेरे ऊपर भी जब देखो तब गुस्सा. जिसदिन से मैं घरमें आयी उस दिनसे सीधी बातभी नहीं करती । मैं उसकी इतनी सेवा बरदास करतीहूँ वह सदा मेरे ऊपर लाल आँखकिये ही रहती है ।"

चमेली–" करन दो फूआ ! उनके गुस्सासे कुछ आता जाता तो है नहीं न मैं उनकी कुछ परवाह करती ।"

रेखा-(धीरे धीरे)-हाँ बेटी ! तुम्हें एक बात बताती हूँ हमारे सामने सासको चाहे खूब बकोझको गाली गलोज करो कुछ परवा नहीं, लेकिन और किसीके आगे उसको कुछ मत कहियो । और सबके सामने उस की खूबइज्जत करना उससे खूब भलमनसीसे बात करना और अकेलेमें या जब खाली हम हों तब चाहे जो कुछ उसको कहलो कुछ करलो कुछ नहीं होगा । तुम बेटी, अभी सीधी सादी कच्ची अकिल की लड़की हो इसीसे यह बात सिखलाती हूँ यह दुनियाका ढङ्ग है"

चमेली-"मैं तो फूआ ऐसाही करना चाहतीहूँ । लेकिन सहा नहीं जाता । इन सबकी बात खयाल करती हूँ । तब मारे जलनके बिना बोले रहा नहीं जाता । "

रेखा-" अहा रे! अभी हमारी दो दिन की बिटिया जनमतेही सौत का दुःख पड़ा । का करोगी बेटी सब पड़नेपर अंगेजनाही पड़ेगा नहीं तो अभी तुम्हारा कच्चा कलेजा क्या यह सब दुःख देखनेके लायक था ? तुमको तो हमने ऐसे घरमें लगाया था कि, यह सब मुकारिखही ठीक रहती और चाण्डालपना नहीं करती तो तुमको जिन्दगी भर सेजपर पड़ेही पड़े हुकुम करते और राज रजते बीतता । यह सब घरका काम काज कभी न करना पड़ता । लेकिन सुनो बेटी ! इसकी कुछ परवाह मत करो तुमको एक बेटा कुँवर कन्हैया होजाय फिर मैं तुमको ऐसीही रक्खूंगी । सब घरका काम काज तो मैं अपने ऊपर लेही चुकी हूँ और घरका एक तिनका भी टारने न दूँगी । "

यह कहकर रेखा अपने कामको चली गयी चमेली मनमें कहने लगी-" इस दुनियामें हमारी फूआके ऐसा अपना दूसरा कौन है ? "

सोलहवाँ अध्याय ।

इधर गिरजाको एक कठिन रोग हुआ । पहले रातको बुखार आने लगा लेकिन सबेरेही उठकर नहाना धोना और घरका सब काम काज करना

पड़ता था झुनिया घर बरतरफ़ हो चुकी है। मालकिन सास घरका काम काज करना तो दूर रहा घर रहती भी नहीं।

इस कारण मिहनतका जो कुछ काम है। गिरजाको करना पड़ता है। ऐसी हालतमें सख्त मिहनत का जो नतीजा होता है गिरजाके सिरपर भी वही घटा। उसका बुख़ार धीरे २ बढने लगा। और होते २ वह पलङ्गपर पड़गयी अब उसे उठने बैठनेकी ताक़त नहीं रही। अब रामप्रसादके घरमें तहलक़ा पड़गया। काम काज कौन करे। रेखा इस घरकी मालकिन हुई है लेकिन मिहनतका काम उसने जिन्दगी में किया नहीं बातोंका जोड़ तोड़ लगाकर जिसने जिन्दगी काटी है वह मिहनतके पास कब जानेवाली है। और चमेली तो ढींढ़ लिये बैठी है उसीकी सेवा सहायमें रेखाके पाँवका पसीना कपार पर चढ़ता है। इस गड़बड़ाध्यायमें अब रामप्रसादको खुद अपने हाथसे हाँड़ी डाली और तसला कड़ाही करना पड़ी थपोड़ी पीट २ रोटी पकाने और चूतड़ उठा उठाकर चूल्हा फूँकने लगे। न करें तो खायँ कैसे ?

गिरजा अपने दुःखके मारे पलङ्गसे पाँव नहीं उठा सकती, इधर गाँवमें एक बातउड़ीहै कि,उसकी सौतको लड़का होनेवालाहै इस हिसकाके मारे पड़ी है। इस बातको उड़ानेवाली वही रामरेखा मिसराइन है। बात भी ऐसे मौकेसे हुई कि, कोई उसपर अविश्वास नहीं करसका। किसीने घर बैठेही बात सच्ची मानली किसीने रामप्रसादके घरतक आकर गिरजाको देखा। जो गिरजाको देखने आयीं थीं उनमेंसे कइयोंने उसके दुःखमें दुखी होकर हाय किया और इधर उधर झाँककर क्या जानें क्या कुछ सलाह कानमें देगयीं। गिरजाने आँसू पोंछ पोंछ सबका सुना किन्तु अभागिनीके हृदयका दुःख किसीने नहीं समझा। न गिरजाको इतनी ताकतथी कि, वह अपना दुःख किसीको समझा सके इस कारण चुप चाप अपना आँसू पोंछना और सब सहना यही उससे बन सकताथा। इस दशामें इस अभागिनी गिरजाका दुःख और

उसके आँसुओंका मर्म कौन समझेगा ? इस संसारमें न जाने ऐसे कितने आँसू बहा करतेहैं ?

आज गिरजाके पिता बिहारीलाल बेटीकी बीमारी सुनकर देखने आये हैं । अब गिरजाकी बीमारी बड़ी भयानक होगयीहै खाली बुखार नहीं है । बुखारके साथ खाँसी उठती है और मुँहसे खाँसीके साथ खून गिरताहै । बेटीकी यह हालत देखकर बाप बिहारीलाल पलङ्गके पास बैठकर आँसू पोंछ रहेहैं । रामप्रसादकी भाभी आज बहुत दोचितहैं । आजतक उसी उड़ती बातपर विश्वास करके चुपचापथी लेकिन आज जेठी पतोहू की ठीक दशा समझकर बहुत कातरहुई हैं । कुछ देर पीछे बिहारीलालने लम्बी साँसलेकर कहा " दवाई क्या होती है ? "

रोगीके सिवाय दोही आदमी उसघरमें थे रामप्रसादकी माने जबाबमें कहा " दवाई क्या होगी ! अब क्या हमारा घर पहलेहीके ऐसा है ? न जाने कहाँसे एक हलके घरकी लड़कीने घरमें घुसकर हमारा सब सत्यानाश करदिया है । अब मैं तो घरका कुछभी काम काज देखती नहीं । बेटाभी हमारी इस जेठीके नामसे जलउठता है । पिशाचिनीने न जाने हमारे लड़केको क्या खिलाके भेड़ा बना लियाहै । अब दवा दरपन कौन करे करावे ? "

बाप चौंककर बोलउठा—" ऐं ! ऐसी भयङ्कर बीमारीमें दवा कुछ नहीं होती ? "

रामप्रसादकी मा रोकर बोली—" आप जो हमारी पतोहूकी जानबचाना चाहते हैं तो बिना कुछ कहे सुने अभी घर लेजाकर दवा करावो और मैं कुछ नहीं कहूँगी । "

बिहारी लाल—" तो मैं आजही लिये जाता हूँ । "

गिरजा टूटी आवाजसे बोली—" किसको ले जाते हो बाबा ? "

बिहारीलालने आँसू पोंछकर कहा—"तुमको लेजाउंगा बेटी ।"

गिरजा—" ना बाबा, मैं नहीं जाऊंगी । "

बिहारीलाल—" काहे ? "

गिरजा—" बाबा ! मैं तो कभीकी मरगयी होती । खाली तुम लोगोंके देखनेके लिये प्राण नहीं बाहर हुआ । बाबा ! एकबार देवनाथ को देखनेका बहुत जी चाहता है उसको हमारे मरनेके पहले भेजना तो अच्छा होगा । और एक आदमीको मरते समय देखनेकी साधहै जो कोई उपायसे । "

दर दर आँसू गिरनेलगा ! कण्ठ बन्द होगया । गिरजाके मुँहसे कुछ बात नहीं निकली । बापने देखा तो आँसूसे गिरजाका सब वस्त्र भीजा जाताहै । वह एक आदमी कौन है सो जानना भी बापको बाकी नहीं रहा । बिहारीलाल कोपकेमारे काँपते काँपते बोले—" बेटी ! तुम फिर उस पाखण्डी का नाम मुँहपर मत लावो । जो तुमसी सती की इतनी दुर्गति करे वह तुम्हारा पति नहीं चाण्डाल है ।"

बापके मुँहसे यह बात सुनकर मृत्युसेजपर सोई हुई रोगिनी गिरजा भी उत्तेजित होकर बोल उठी—" ना, बाबा ना ! ऐसी बात हमारे सामने न कहो । तुम्हीं ने तो मुझको कहा कि, स्त्रीके लिये पतिके समान देवता जगत्में दूसरा नहीं । उनका कुछ दोष नहीं सब मेरे नसीब की बात है ।"

लड़की को इतना न रह होते देख बाप बिहारीलाल क्रोध छोड़कर बोले—बेटा स्त्रीके लिये पतिके समान गुरू दूसरा नहीं है सही, किन्तु जो स्त्रीके साथ इसतरह व्यौहार करे वह स्वामी नामके योग्य नहीं है । लेकिन दूर करो इस बातको हम इस हालत में तुमको उसके लिये कुछ कहना वा दुखाना नहीं चाहते । इस वक्त तुम हमारे घर चलो । जब समधिन की भी राय है तब मैं आजही तुमको लिवाजाऊगाँ ।"

गिरजा—" ना बाबा इस घड़ी मैं वहाँ नहीं जाऊँगी ।

बि०लाल—बिनागये तुम्हारी जान कैसे बचेगी ?"

गिरजा—"नहीं बाबा अब जान बचाने से क्या काम है । पतिस्वरूप परमेश्वर जिसपर टेढ़ा है उसको जीनेसे क्या काम ?"

पिताने आँसू भरी आँखोंसे एक बार बेटी की ओर देखा । बेटीका उदास मुँह देखकर बापकी छाती फटने लगी । फिर आँसू पोंछकर बापने कहा—"बेटी यहाँ रहनेसे तुम्हारी दवा नहीं होगी । अगर मरनाही...."

बापके मुँहसे और बात नहीं निकली । कण्ठबन्द हो आया । गिरजा आज बापके आगे बात करते नहीं सकुचाती । जब सामने विपत आपड़ती है तब लज्जावती की लज्जा भी साथ छोड़ भागती है गिरजा फिर बोली--" बाबा ! मैं चाहती हूँ कि, मरतीबार तो एकबार देखलूँ, इसी आशासे यहाँ से नहीं जाती ।"

इतने में रामप्रसाद की मा रोती हुई बोली—"बेटी ! मैं ही तुम्हारे सर्वनाशकी जड़ हूं । तू हमारे घरकी लक्ष्मी है । तुम्हारा निरादर करके मैं हाथों हाथ उसका फल पाया है । बेटी तुम अच्छी होजावोगी जिओ जागो । मैंने अब तुम्हारा गुण समझा है । अब कभी तुमको कोई बुरी बात न कहूँगी ।"

गिरजा—" माजी ! क्यों ? उन बातोंको याद करके मनमें दुःख करती हो ! कौन कहता है कि, हमारा आदर नहीं हुआ ! कब हमको तुमने गाली दी और बुरा कहा । तुम जैसी गुणवती सास कौनके नसीब होती है ? माजी ! तुमको पानेसे ही मुझे माका शोक भूलगया है । दुःखकी बात यही रही कि, मैं तुमको सुखी न कर सकी "

सास कुछ स्थिर होकर बोली—ना बेटी मुझे तो तुम अब भी सुखी कर सकती हो ? तुम चलो । तुम्हारे साथ मैं भी तुम्हारे मायके चलती हूँ । वहाँ तुम्हें बचासकूँ तो मैं बहुत सुखी होऊँगी । "

गिरजाकी आँखोंमें आनन्दकी ज्योति दीख पड़ी । वह तुरंत बोल उठी--" माजी ! तुम सुखी होगी । तुमको सुख होगा तो माजी ! चलो अभी चलूँगी । चलो ! लेकिन जाते बार देखलेती ! मा ! एकबार भेट होगी कि, नहीं यदि देखना नसीब न हो माई ! भेट न हो ।"

इतना कहते २ गिरजाकी आँखें बन्द हो गयीं लेकिन इन बन्द पल

कोंसे आँसू नहीं रुकसका छाती तक धार लग गयी । उस अश्रुधारासे पिता बिहारीलाल को बड़ी पीड़ा हुई उसे सह न सके और उसी वक्त उठ कर न जाने कहाँ चले गये।

सत्रहवाँ अध्याय।

बिहारीलाल भीतरसे एकदम बाहर बैठकखानेमें आये यहाँ राम-प्रसादसे भेट हुई दामाद ससुरको प्रणाम करके कुशल मङ्गल पूँछने लगे । ससुर उनका कुछभी जबाब नदेकर बोले—“ यह सब शिष्टाचार इस वक्त रहने दो मैं यह पूँछता हूँ कि, इतने दिनोंतक हमको इसकी ख़बर क्यों नहीं दीगयी। ”

ससुरका आकस्मात् ऐसा कोप देखकर रामप्रसाद अकचकाए और विस्मित होकर बोले—“ किसकी ख़बर ? ”

ससुर—“ बीमारी की ख़बर ”

रामप्र०—“ किसको बीमारी हुई है ? ”

ससुर—क्यों क्या मेरी लड़की को बीमारी हुई है इसकी ख़बर तुमको नहीं है ? ”

रामप्र०—“ ना मैं तो कुछभी नहीं जानता । ”

ससुर—“ यह तो बड़े आश्चर्य्य की बात है तुम्हारी स्त्री तुम्हारे ही घरमें भयानक रोगमें दुःखी होकर मृत्युसेजपर पड़ी मौतके दिन गिन रही है और तुम्हें उसकी कुछभी खबर नहीं है ?।

रामप्र०—“ ना, मैंने तो कुछ नहीं सुना ! ”

ससुर—“ खैर तो तुम्हें सुननेकी कुछ जरूरत भी नहीं हैं । इस वक्त जैसी हालतमें वह पड़ीहै तुम्हारा न सुननाही ठीक है ।

रामप्र०—“ मैंने इतना तो सुना था कि, मेरी छोटी स्त्रीको लडका होने वाला है इसके हिसकामें पड़कर आपकी लड़की पलङ्गपर पड़ी है ।”

ससुर—“ खैर अगर इतना सुना तो अपनी आँख से भी उसे एक बार देखकर ठीक बात क्या है सो जानना उचित है या नहीं ? ”

रामप्र०--“ जिस बात को सनलिया था उसे फिर देखकर ठीखकरने का क्या काम था ?

ससुर—“ अच्छा जो तुमने किया है सो अच्छाही किया है । उसके लिये मैं कुछ भी कहना नहीं चाहता । अब मैं अपनी लड़की को लिवाये जाताहूँ यहाँ उसकी जान नहीं बचेगी । ”

रामप्रसाद--“ हाँ अगर आप चाहें तो लेजाँय लेकिन हमपर नाहक आप नाराज हुए । ”

ससुर—अबकी एकदम क्रोधान्ध होकर बोले-- “ घरमें कुत्ते बिल्ली को भी ऐसी बिमारी होनेपर आदमी दया करता है एक लौंडी पर भी ऐसी हालत में लोग दया करते हैं । लेकिन तुम्हारी खुद स्त्री ऐसी पीड़ामें अब तबकी हालत में पडी है और तुमने कुछ दवाकी तदबीर नहीं की और उलटे हमको नाहक नाराज होनेकी बात कहते हो कुछ शरीर में हया शरम है ? ”

रामप्रसाद थोड़ी देर चुप रहकर बोले जब मैं रोगीका कुछ हालही नहीं जानता तो उसकी दवा का क्या बन्दोबस्त करूँ । ”

ससुर बिहारीलाल पहले से भी अधिक नाराज होकर बोले—“ तो किसी लुच्चेके मुँहसे झूठी बात सुनली उसपर तो यकीन कर लिया ? ”

रामप्रसाद अबके अप्रस्तुत होकर धीरे धीरे बोले—“ एक लुच्चेने नहीं कहा सबके सबने कहा तब विश्वास किया । ”

बिहारीलाल कुछ स्थिर होकर बोले—“ ख़ैर छोड़ो उस बातको मुझे तुमसे एक बात पूँछनाहै । मेरे घरमें कोई ऐसी औरत नहीं है जो उसकी सेवा ठीक करसके । तुम्हारी मा साथ जाना चाहती है, तुम क्या कहते हो ? ”

रामप्र०—" मा अगर जाना चाहती है तो मैं क्यों रोकूँ चली जाँय।"

तो मैं आजही सबको ले लिवाकर चला जाऊँगा " कहकर बिहारीलाल भीतर गये और जानेकी सब तैयारी करने लगे।

ससुरके जानेबाद रामप्रसाद कुछ देरतक न जाने क्या सोचते रहे फिर आप भी भीतर गये। भीतर वह सीधे गिरजाके घरकी ओर जा रहे थे लेकिन दरवाजेपर जाकर आगे बढ़नेकी हिम्मत न हुई। तब वहाँसे लौटकर चमेलीके घर में घुसे उसने उनका मुँह देखकर पूँछा " आज तुम्हारा मुँह इतना उतरा क्यों है ? "

रामप्रसादने इसका जवाब नहीं दिया. फिर चमेलीके दोबारा पूँछने पर उन्होंने कहा--"ससुरजी अपनी लडकी को लेने आयेहैं सुना है ? "

चमेली—" हाँ वह तो सुना है। फिर वह अपने बापके यहाँ जायँतो जाने दो चिन्ता क्या है ! रेखाफुआ भी कहतीहैं कि, कुछ खातानामा हो सो उन्हींके घर होना अच्छा है।"

रामप्रसाद अकचकाकर बोले—" ऐं ! तो क्या वह सचमुच इतना बीमार है ? "

चमेली मुँह बनाकर बोली—" सुनती तो हैं कि, अब उनका बचना कठिन है। "

रामप्रसाद—" तुम्हारे लड़काहोनेके हिसकासे वह पडीहै यह बात जो उडी थी सब झूठीथी ? "

अबकी चमेली बाहरी कोप जाहिर करके बोली—"वह बात झूठ उडी थी यह कौनने कही ? पहले तो उसीमें वह पडीथीं लेकिन भगवान् कहीं गया तो नहीं है। फूआ कहती है कि, जो परायेकी बुराई चेतकर कुछ करता है भगवान् उसकी बुराई पहले करताहै।

इसीसे परमेश्वरने ऐसा किया है पड़ेही पड़े अब ऐसा रोग हुआहै कि, बचनेका भरोसा नहीं है। "

चमेलीकी इन बातोंका मतलब रामप्रसादके मनमें बैठगया उनके

मनसे आत्मग्लानिका भावजातारहा। चित्त प्रसन्नहो आया। तो हमलोगोंने समझनेमें भूल की थी रामप्रसादका उदास मुँह देखकर समझा था कि, गिरजाके भयङ्कर रोगकी खबरसेही उनको इतनी उदासी होरहीहै। लेकिन अब जानपडता है रामप्रसादकी उदासीका और सबबहै। अगर रामप्रसादके निरादरसे गिरजाको महाभयङ्कर रोग हुआ है हो तो बेशक वह उसके लिये दुःखी होसकतेथे लेकिन खुद गिरजाके कसूरसे उसको यह पीडा हुई है तो फिर रामप्रसादको दुःख उठानेकी क्या जरूरतहै ? बल्कि पापका प्रायश्चित्त स्वरूप गिरजाकी यह हालत देखकर रामप्रसाद मारे खुशीके शरीरमें नहीं समाते । जब इन सब बातोंकी कैफियत खुद श्रीमती चमेली देवी देरही हैं तब उसमें रामप्रसादको किसी तरह शकभी नहीं होसकताहै। कहिये पढनेवाले और पढनेवालियो ! रामप्रसादके मनकी अवस्था कुछ समझमें आयी ?

रामप्रसादने प्रसन्न वदन होकर कहा—" अच्छा यहतो सब ठीकहै भला मा क्यों उसके साथ जारहीहै ? "

श्रीमती चमेलीका तुरंत जवाब हुआ—" वह जाती हैं तो जायँ न उनके रहेसे हमारा कौन उआरा होगा। हमारी फूआ तो हई है। "

रामप्रसाद—" अच्छा तो ऐसाही सही। "

चमेली मौका पाकर फिर झगड़ने लगी—" माकी अक्किल तो देखो। आखिर तो उनको वही पियारी है न ? हमारी कुछ भी उनको परवाह नहीं है।"

रामप्रसादने एक बडी साँस फेंककर कहा--"भगवान् तुम्हारी परवा करेगा। इसकी चिन्ता उसीको है जगत् भरकी वह खबर रखता है।"

अठारहवाँ अध्याय।

बिहारीलाल बेटी गिरजाको लेकर अपने घर चुनार में पहुँचे हैं। करचना स्टेशन में रेलपर सवार होते होते उनके साथ बेटी के सिवाय

और तीन आदमी आमिले थे। गिरजाकी सास, नफ़द्बनी झूनादाई और एक नौकर । चुनार रेलस्टेशनसे कोसभरपर बिहारीलाल का पक्का पत्थरका दोतल्ला मकान था जहाँ आजकल कोतवाली है वहाँ से थोड़ी दूर गङ्गाजी की ओर हटकेही उनका सुन्दर सुसज्जित गृह आकाशमण्डल में अपनी छटा दिखारहा था। दस बरस हुए बिहारीलाल की स्त्रीका स्वर्गवास होगया । तबसे उन्होंने दूसरी शादी नहीं की ।' गिरजा के सिवाय उनको एक और लड़का है। उसका नाम रामधनलाल। रामधन गिरजासे बड़ा है । रामधनकी मा बड़ी मुखरा थी । इसकारण बिहारी-लाल बहुत दुःखी थे और उसी दुःखको याद करके फिर शादी करनेको जी नहीं हुआ। केवल रुपया पैदाकरनेके सिवाय उनको और किसी बातका शौक नहीं था । इसीसे उन्होंने जिन्दगी म रुपया पैदाभी खूब किया था। जो कुछ वह पैदा करते थे उसे खर्च करने के बदले बचाकर जमाकरनेमें अधिक आनन्दित होतेथे । और यही कारण है कि, उम्मीद से ज्यादा धन उन्होंने जमाकर लियाथा । वह इस तरह कृपण स्वभावके होने पर भी कभी एक पैसा अनुचितरूपसे नहीं पैदा करते न करनेकी नीयत रखतेथे । और कभी अन्यायरूप से एक पैसा भी उनका कोई ठगलेता था तो वह हद्दसे ज्यादा दुःखी होतेथे । स्त्रीके मरनेपरभी बूढ़ेको सुख नहीं मिला । सुख न मिलनेका कारण वही रामधन था । रामधनको पढ़ाने लिखानेके लिये बिहारीलाल खूब रुपया खर्च करें या न करें लेकिन तद-बीर करनेमें कुछ उठा नहीं रक्खा था । रामधन लड़कपनसेही दुराचा-रियोंकी संगत में पड़कर पढ़ने लिखने से कोसों दूर रहा । उमर के किनारे पहुँचतेही लम्पटोंके लपेटमें पड़कर एक रण्डीके प्रेमकीचमें ऐसा बेतरह फँसा कि, फिर निकल न सका। पिता उसको सुधारनेके लिये बहुतही व्याकुल हुए। यहां तक कि, उसपर सब तरहका शासन करने लगे, लेकिन जब देखा कि, किसीसे कुछ फल नहीं होता तो नाराज होकर एकदम ढील दिया । फिर अन्तमें उससे बात तक करनाभी छोड दिया अब

बेटा रामधन दुर्गतिके खन्देमें नीचे उतरने लगा । रुपया और कुल-मर्यादाके लालच अनेक लोग अपनी लडकीका व्याह रामधनसे करने पर उतारू हुए । व्याह होनेपर चिन्ता करके शायद रामधन घर चेते इस उम्मीदपर बिहारीलालजी व्याह करनेपर राजी हुए लेकिन रामधनने व्याहही करना मंजूर नहीं किया । अन्तमें बापभी नाराज होपड़ा और व्याहकी बात लानेवालोंको बेटेकी सब करनी बताबताकर अपनी लाचारी जाहिर करने लगा । जब रामधनके स्वभावकी कलंकरटना सर्वत्र फैलगयी तब जाकर बापने लडकीवालोंके कुकुरचोंथनसे रिहाई पायी ।

बिहारीलाल अब बेटेका मुँहभी नहीं देखते न उसकी कुछ खोज खबर लेते । बेटा रामधनभी अब बापके सामने मुँह नहीं दिखाता । कभी आता कभी आताभी नहीं. लेकिन जब रुपयेकी जरूरत होतीथी तब बापसे जरूर मिलताथा इस मिलनेका फलभी होता था लेकिन वह बहुत दिनतक नहीं चला क्योंकि जिस रुपयेको उन्होंने घडों पसीना बहाकर पैदा कियाथा उसे इसतरह कुमार्गमें फेंकनेको हरगिज नहीं दे सकते थे । अतन्में अपना मनमाना करनेके लिये वह चोरी करनेपर उतारू हुआ और बापका सन्दूक तोड़कर कभी रुपया निकाललेजाने कभी कोई उनकी चीज लेजाकर बेचने और अपना काम चलाने लगा इसी तरह वह चैन उड़ाता और अपने यारोंमें वाहवाही कमाता था ।

बेटेकी इसकरनीसे बाप बिहारीलालको सुख कहाँ नसीबहो घरमें उनकी विधवा बहनके सिवाय और कोई आत्मीया स्त्री नहीं थी ! उस विधवा बहन का नाम जमुना था ! जमुना बिहारीलालकी छोटी बहन बालविधवा होनेके कारण बापहीके घरमें पलतीथी । उसको कोई लडका बच्चा नहींथा । वह रामधन और गिरजाको प्राणसेभी अधिक प्यार करती थी । जबसे गिरजा सासरे गई तबसे जमुनाको रामधनही अकेला अवलम्बरहा । माताके मरनेपर रामधनको वह और अधिक चाहने लगी थी । और यही अधिक चाहना रामधनके रसातलजानेका कारण था ।

वह रामधनको इतना चाहती थी कि, उसका बहुत बड़ा कुकर्म देखकर भी उसे दोष नहीं समझतीथी । और यहाँ तक कि, उसके यह सब दोष ढाकनेको जीजानसे इतना तैयार रहतीथी कि, इसकेलिये भाई बहनमें बहुधा विवाद हुआ करता था। हमने बिहारीलालकी संसारिक अवस्थाका इतना आभास मात्र दिया है । और बातोंका हाल पाठक आगे जानेंगे।

उन्नीसवाँ अध्याय।

बिहारीलाल ने बेटीको घरलाकर पहले उसकी दवाका बन्दोबस्त किया। कई बडे२ वैद्योंकी दवा शुरू हुई। पहले दिन गिरजाको देखकर वैद्योंने जोराय जाहिरकी उससे किसीको गिरजाके बचनेका भरोसा नहीं हुआ वैद्योंने सिर्फ यही उम्मीद दी कि, एक हफ्ता दवा खानेपर तो बचने और न बचनेकी बात ठीक ठीक मालूम होगी। दवाहोने लगी लेकिन सात दिनकी बात कौन कहे । तीनही दिन दवाखाने पर रोगी की जो दशा बदली उसे देखकर सब लोग बडे अचम्भे में आये। खुद वैद्यराज अपनी दवाका इतना गुण देखकर अकचकागये! पहलेरोजीकी दवा दारू वा सेवा सहाय कुछभी नहीं हुईथी चुनार आनेपर गिरजाकी दवाके साथ सेवाशुश्रूषा भी खूब हुई। रामप्रसादकी मा, जमुना, झुनियाँ और दूसरी नौकर नौकरानियाँ सब गिरजाकी सेवामें लगीथीं। गिरजाकी सेवा करने वालोंमें एक और बडे अचरजकी बात देखी गयी। जो रामधन घरवालों से दो घंटेसे अधिक कभी नसीब नहीं होताथा वह भी बहनके पलङ्कके पाससे हफ्ते भर तक नहीं टला।

जमुनाके आनन्दकीभी सीमा नहीं रही । गिरजाका भी इस बातसे इतना आनन्द हुआ मानों उसका सब रोग दूर होगया । इस मौकेपर जमुनाने रामधनकी चालचलनके बारेमें भाई बिहारीलालसे बहुत कुछ शिफारिशकी। और हफ्तेभर तक घरसे न जानेकी बात सुनकर बिहारी-

लालको भी अचम्भा हुआ । लेकिन जब दश दिन बाद रोगीकी दशा सुधरी और ज्यों२गिरजा पुष्ट होतीगई त्यों२रामधनका वर रहना घटनेलगा और अन्तको रामधन वही रामधन होगया । कभी किसी दिन धीरे २ आकर रोटी खाजाय कभी आयेही नहीं । अन्तमें रामधनकी यह दशा देखकर जमुनाने एक दिन गिरजासे कहा-“ सुनो बेटी ! रामधन तुमको बहुत मानता है । देखो तुम्हारी बीमारीमें सात दिन सात रात तुम्हारे पलंगसे नहीं हटा सो तुम उसको समझा बुझाकर विवाह करनेपर राजी करो तो ठीक है काहे समधिन ? ”

समधिन अर्थात् रामप्रसादकी मा भी वहीं बैठी थीं । वह बोलीं- हां सादी करदेना ठीक है । सादी करे से आदमी वर चेतता है । ”

गिरजा-“ अबतो सात आठ दिनसे भैया नहीं आता ”

राम० मा०-“ नहीं लडका बहुत बेकहा होगया है । रात दिन बाहरही रहता है । “ ख़राब होजायगा । ”

जमुना-“ ना ! खराब नहीं हुआहै । लडकांईसेही उसको गाने बजाने का बडा शौक रहा सो गाने बजानेके मारे घर नहीं आता । तबला ऐसा बजाता है कि, थाप सुनकर बडी बडी भैनातौकी मोहित होजाती हैं गाना बजाना पढ़ने लिखनेसे भी बडा मुसक्कल होता है । ”

राम० मा०-“ हाँ लेकिन जो गाने बजानेमें बहुत रहता है उसका स्वभाव कहाँ ठीक रहता है । उसका मिज़ाज बिगड जाता है । ”

जमुना-“ नहीं समधिन, हमारे रामधनका सुभाव वैसा नहीं है ।

गिरजा-“ काहे फुआ ! सुनत हैं भैया दारू पीता है । ”

जमुना-“अरे आज कल दारू कौन नहीं पीता बेटी ? ”

गिरजा-“ और सुनत हैं कसबी राखे हैं । ”

जमुना-“ अब ऐसे जवान आदमीका व्याह नहीं हो तो कसबी कौन नहीं राखेगा ? ”

गिरजा-“ घरका बहुत माल असबाब खोते हैं । ”

जमुना-" जान पड़ता है तू भी बाप की तरह हुई जाती है । तेरा बाप भी उसको भर आँख नहीं देख सकता । उसको रामधनकी सब बुराई ही देख पड़ती है तूभी वैसी ही है क्या ? "

गिरजा-" ना फूआ, तू नाराज़ काहेको होती है ? मैं उस भावसे नहीं कहती। इन सब बातोंको सुनकर मुझे बड़ा दुःख होता है और विश्वास नहीं होता इसीसे तुमसे पूँछती हूँ । "

जमुना-" तेरे बापहीने तो बेटेको बिगाड़ा है । इतना बड़ा लड़का हुआ हाथमें एक पैसा तक नहीं देते थे । तब घरकी चीज़ वस्तु न ले जाय तो का करे ? पराये घरमें जाके सेंध तो मारेगा नहीं ? "

गिरिजा-" अच्छा देखो फूआ ! अबकी भैया मिलें तो मैं उनको व्याह करने पर ज़िद करके राज़ी करूँगी । "

इतनेमें एक दासीने आकर बाबूके आनेकी ख़बरदी । यह बाबू वही रामधनलाल थे । बिहारीलाल को सब मालिक कहकर पुकारते थे। और रामधनको बाबू । जमुना सुनतेंही उठकर चली गयी । और आधे घंटेके अन्दर रामधनको लेकर फिर आयी । जब रामधन उस घरमें पहुँचा जहाँ गिरजा पड़ी थी तब रामप्रसादकी मां और जमुना दोनों वहाँसे चली गयीं । अकेले पाकर गिरिजा बोली-" काहे भैया । कई दिनसे मैंने तुम्हें नहीं देखा कहाँ रहे ? "

रामधनने उसका जवाब न देकर पूँछा-" अब तू कैसी है ? "

गिरजा-" अब तो भैया अच्छी हूँ । "

रामध० " फिर अब तुम्हें देखनेका क्या काम है ? "

गिरजा-" हमको नहीं देखो न सही, लेकिन भैया घर दुआर तो देखना चाहिये ! "

रामधन-" जब बाबा जीते हैं तबतक हमको घर दुआर देखनेका क्या काम है ? "

गिरजा-"काहे भैया ! बाबाके घरमें तुम्हीं मालिकहो अब सयाने भये

तुम न देखोगे सँभालोगे उनके जीतेजी सब नहीं समझोगे बूझोगे तो कैसे बनेगा ? ”

रामध०—“ बस ! बस ! रहन दे ! बहुत बुजुरगी मत छाँट एककी पीड़ासे मरते थे तू और ऊपरसे जलेपर नमक लगाने चली है । जो समझना बूझना है वह हमको तुम्हें समझानेकी जरूरत नहीं है । ”

गिरजा--“ काहे भैया ! तुम्हें क्या दुःख है ? कौनके दुःखसे मरे जाते हो ? ”

रामधन--“ हमारे दुःखकी बात तूं क्या समझेगी ?

गिरजा अब आग्रह करके बोली–“ नहीं भैया सच कहो तुम्हें कैसे सुख होगा ? ”

भैयाने मुँहही पर चटसे कहा–“बाबाके मरे बिना तुम्हारे भैयाको सुख नहीं है । ”

अब तो बहनकी बोलनी बन्द होगयी । पिताकी मृत्युकामना भैयाके मनमें देखकर गिरजाको बड़ा दुःख हुआ । लेकिन उस भावको छिपाकर उसने कहा–“ भैया ! तुम ब्याह करलो तो तुम्हें सुख मिलेगा ।

“ ब्याह नहीं करेंगे । अपनी श्राद्ध करेंगे यह कहकर रामधन उस घरसे चलता हुआ । गिरजा चुप चाप दरवाज़ेकी ओर देखती रही ।

वीसवाँ अध्याय ।

गिरजाकी चुनारमें क्या दशा है । उसकी दवा दारूका क्या बन्दोबस्त हुआ है । दवासे कुछ लाभ हुआ या नहीं इन सब बातोंकी खबर रामप्रसादने अबतक कुछ नहीं ली । रामप्रसादके व्यौहारसे सब अचम्भित हुए । मनुष्य क्या इतना नीच हो सकता है। ऐसा विश्वास करनेका साहस नहीं होता। करछनासे चुनार बहुत दूर नहीं है मनकरनेसे तीनघंटेमें आदमी पहुँच सकताहै लेकिन रामप्रसाद अपनी वैसीसती

गिरजाको उस भयङ्कर दशामें भेजकर क्यों बेफिक्र बैठे हैं सो हम नहीं समझसकते ! यह हम लोग खूब जानतेहैं कि, रामप्रसाद की निन्दासे गिरजा नाराज होगी इसी कारण हम घटना का प्रारम्भही कहकर चुप रहतेहैं रामप्रसादके स्वभावके बारेमें हम और कुछ नहीं कहते।

गिरजाके शरीरका रोग तो आराम होगया लेकिन उसके मानसिक रोगकी बढतीके सिवाय घटती नहीं होती। तो भी वह अपनी सहनशीलताके प्रतापसे इस रोगका कुछभी चिह्न बाहर नहीं होनेदेती। प्रारब्धपर भरोसा रखकर सब कुछ सह रहीहै ! गिरजाने दिन बितानेकी एक औरभी तदबीर निकाली है। दिनभर स्नान, ध्यान और देवीपूजा आदिमें लगी रहतीहै। इन्हीं बातोंमें वह दुःखजनित अपने अस्थिर शरीरको स्थिर रखतीहै।

इधर मातृस्नेहकी अपार महिमा देखो। जो रामप्रसादकी मा लडके की घरघर निन्दा किये बिना जल नहीं पीतीथी। वही मा आज बेटेकी खबर न पानेसे बडी व्याकुल हैं। जमुना रामप्रसादके व्यवहारकी बात छोड़कर कभी २ समधिनके सामने ही रामप्रसाद की बहुत निन्दा कर जाती है। किंतु रामप्रसादकी माको वह अब सहा नहीं जाता तो रामप्रसादकी मा क्या पराये मुँहसे अपने आत्मीयकी निन्दा नहीं सुनसक्ती ? लेकिन उसपर हम लोग कैसे विश्वास करेंगे ! वही झुनियाँ जो दिनमें पचीस बार चमेली की चरचा छेडकर नाकदबाती और निनिनाकर गाली देती है उससे तो रामप्रसादकी माका हृदय उमड़ान के सिवाय दुःखी नहीं होता। इस समय बेटेकी खबरके लिये माको बहुत दुःखी देखकर गिरजाने एक तदबीर की उसने दूसरे तीसरे दिन एक आदमी अपने सासरे भेजकर स्वामीका हाल लेना शुरूअ किया वह आदमी चुपचाप वहाँ जाकर रामप्रसादका हाल लेता और गिरजासे आकर कहताथा !

एकदिन शामको आकर उसने खबर दी कि, रामप्रसादके लडका

हुआ सौतके लडका होनेका समाचार गिरजाको दुःखदायी होगा ऐसा समझकर उस आदमीने डरते २ यह बात सुनायी। लेकिन गिरजाको इस खबरसे इतनी खुशी हुई कि, उसने अपने हाथका चाँदीका बेरा (पहुआ) उतारकर उस नौकरको इनाम देदिया। किंतु माने उस खबरसे कोई खुशी नहीं जाहिरकी। दूसरेदिन सबेरे उठकरही रामप्रसादकी माने घर जानेकी इच्छा जाहिरकी। वह दिन पश्चिमको दिशाशूल था। सब लोगोंने यात्रा अशुभजान मनाकिया। लेकिन माकी ममता का वेग कहाँ ? मा तो चट रवाना हुई और गाडीपर चढकर करछना पहुँचीं।

इक्कीसवाँ अध्याय।

रामप्रसाद की मा जब घर पहुँची तब नौ बजगयेथे। इसकारण उसदिन रामप्रसाद से भेट नहीं हुई वह इसके पहले ही खापीकर ऑफिसको चलेगयेथे।

घरमें प्रवेशकरते ही रामप्रसाद की माको पहले रेखा मिसराइन मिलीं। उस तरह उनके आने से पहले तो वह बहुत चकराई किन्तु उसभावको गुप्तरखकर बोली-"आव! आव! बहन आव! तुमको नाती हुआ है। आव देख!"

रामप्रसाद की माने रेखा की इन बातों का जबाब कुछ नहीं दिया और भीतर चली। रेखा कहीं कामको जारही थी किन्तु अब नहीं जासकी। रामप्रसादकी माके साथही भीतर यह कहती हुई चली-, घरकी मालकिन बिना सब हँसी खुशी नीरस मालूम होती है और बिना मालकिन के हँसी खुशी हो भी नहीं सकती। अब मालकिन आगयी। अब अलबत्ते हमलोग खूब खुशी मनावेंगी। उधर पतोहू अलगे सास सास करके सूखी जाती थी। भलीकरी बहन अच्छे मौकेपर आगयी। अब शंख बजावो माये लोगे अब शंख बजावो।"

रामप्रसाद की माको रेखाके इस आदर अभ्यर्थना की बड़ी चोटलगी । आज उन्हीं के घरमें रेखा उनका स्वागत करने आयी है यहभला उनसे कब सहा जासकता है ? बिच्छूके डंक मारनेसे जैसे शरीरमें पीड़ा होती है रामप्रसाद की माको भी रेखाकी हरबात से वैसीही पीड़ा होने लगी विश्वेश्वरी की बातोंसे रामप्रसाद की माके जीमें बड़े बड़े विचार उठने लगे । जब लड़का हुआ तब उनको खबर नहीं दीगयी । ऐसी खुसीके मौकेपर भी उनको बुलानेके लिये आदमी नहीं भेजागया इन्हीं सब बातोंको विचारकर रामप्रसाद की माका दुःख उथलपड़ा । लेकिन इस घड़ी आँखों का आँसू गिरनेसे शायद उनके नाती का कुछ अमङ्गल हो इसी डरसे उन्होंने अपने आँसू रोकलिये । वह बिनाकिसी को कुछ कहे सुने सूतिकागृह (सौर) में चली गयीं और बड़ी श्रद्धाके नातीको गोदमें लेकर बैठी । नातीका मुँह देखकर आजीको बड़ा आनन्द हुआ पुत्रका असन्मान, पतोहू का अत्याचार उनके जीसे जातारहा ।

चमेली की प्रकृति कितनी ही नीचहो लेकिन सच्ची बात हम जरूरही कहेंगे । इससमय चमेलीने सासका उचित सन्मान करनेमें उठा नहीं रक्खा । और प्रणाम करके कहा—"माजी ! देखो तुम्हारा नाती हुआ है असीस दो कि, जीएजागे ।"

सासने भी प्रणाम आनन्दसे मंजूर करके कहा—"बेटी तुम्हारी यहबात सदा अचल रहे और यह हमारा नाती जुग जुग जीए । हमारे सिरमें जितने बाल हैं तितने लाख बरस हमारे नाती की उमरहोय ।"

ठीक है सब होसकताहै । बेटाका मुँह देखनेसे सासका सब दुःख भूल चमेली प्रणामकरके आशीर्वाद प्रार्थना कर सकती है । सासभी नातीके आनन्द में पतोहू का सब व्यौहार भूल जा सकती है । लेकिन यह सब होते भी यह कभी नहीं हो सकता कि, यह सुन्दर मुखसम्मीलन रेखा अपनी आँखोंसे देखसके । वह पिशाचिनी मा पतोहूका यह सुख समालाप देख माहुरका घोंट घोंटकर रहगयी । और अभ्यासके अनुसार अपने

हलाहल पूर्ण हृदयसे अंमृत बरसानेके लिये बोली—" हाँ बहिन ! भला तुमने का देकर नातीका मुँह देखा है ? "

इसका जवाब दिये बिना रामप्रसादकी माको रिहाई नहीं मिली इसलिये उन्हें कहना पड़ा—" मैं क्या देकर नातीका मुँह देखूँगी बहन ? "

रेखा फिर बोली—" नहीं बहन ऐसा तो नहीं होगा। जो सुनेगा सो क्या कहेगा ? और समधियानवाले क्या कहेंगे ? कैसे मैं उनके आगे मुँह दिखाऊँगी। "

राम० मा—" अरे तो तू का जानती नहीं हो कि, हमारे पास क्या रक्खा है ! जो था सब तो छोटी पतोहूको दे चुकी हूँ । अब हमारे हाथमें क्या है ? "

रेखा—" वह देना बहन और बात है यह देना और है ऐसा दिन फिर कभी नहीं पाओगी। "

राम० मा—" अच्छा तो हमारे बच्चाको घर आनेदे उससे लेके हम नातीके हाथमें कुछ देदेंगी। "

रेखा—" ना वह देना कौन देना है ? "

रेखाकी बातसे रामप्रसादकी माको बड़ा दुःख हो रहा था किन्तु सब गोपन करके बोली—" हम जो कुछ नातीको दे भी वह सब भी तो हमारी छोटी पतोहूही का है। "

रेखा—" यह तो है लेकिन बेटासे लेकर नातीको देना नहीं कहलाता। "

राम० मा—" काहे लड़केका रुपया क्या हमारा नहीं है ? "

रेखा फिर हँसकर बोली—" नहीं बहन वह बात यहाँ नहीं लगेगी। "

रेखाका कार्य्यसिद्ध हो चुका है । चमेली और रामप्रसाद भी माके आनन्दाकाशमें विवादका चाँद उदय हुआ है । अब सासके प्रति चमेलीके मनका वह भाव नहीं है। लेकिन इस भावको ज़ाहिर करके चमेलीने सासको कुछ नहीं

शाम होनेके पहलेही रामप्रसाद घर आये। माको देखकर पुत्रने प्रणाम किया माने आशीर्वाद देकर कहा—" बचवा मैं तुम्हारा लड़का देखने आयी हूँ।"

बेटेने कहा—" अच्छा किया है मा। वहाँ सब लोग अच्छे तो हैं ?"

राम० मा—" बेटा तुमको उनके अच्छे बुरेसे का काम है। पतोहूको कैसी हालतमें ले गयी सो तुमने मरने जीनेकी कुछ खबर भी नहीं ली।"

पुत्र—" अपनी लड़की को लेजाते समय ससुर जी हमपर बहुत नाराज़ हुए थे इसीसे ख़बर लेनेको आदमी भेजनेको जी नहीं चाहा।"

मा—" अच्छा तो तुमको छः दिन लड़का भये हुआ। हमको खबर काहे नहीं भेजा ?"

पुत्र—" इस खबरसे तुमको खुशी हो सकती थी, लेकिन वहाँ और लोगोंके लिये तो यह खुशीकी खबर नहीं थी।"

हम लोगोंने समझाथा कि, गिरजाकी ओरसे माता बेटेको दो चार बात कहेगी, क्योंकि इनके सामनेही गिरजाने सौतके लड़का होनेकी खबर देनेवालेको हाथका बाला इनाम दिया था। किन्तु माताकी अकल इतनी तेज नहीं वह ऐसी पतोहूकी ओरसे पुत्रका ऐसा कलुषित भाव दूर करनेके लिये एक बातभी नहीं करसकीं। गिरजाकी हितकारिणी होकर भी इतनी अकल नहीं कि, वह कैसे हित करसकती हैं। केवल इतनाही बोलीं—" एक कुटुम्बके घरमें थी तुमको पुत्र हुआ। इसकी खुशीमें मुझे बुलानेके लिये आदमी तक नहीं भेजा। मैं बिना बुलाये चली आयी इससे बेटा भला किसकी बड़वारगी हुई ?"

इतना कहते कहते अब आँखोंका आंसू नहीं रुकसका। शुभ अशुभ का मंगल अमंगलकी बात तक भूलगई। एकाध बूँद आँसू नहीं वही रीतिके मुवाफिक आँसूकी धारा बहचली। लड़केपर जो गुस्सा था वह इसी रोने धोनेमें उतर जाता और बेटेके भी मापर जो ममताथी वह दूर होजाती अगर इसवक्त यहां रेखा मिसराइन नहीं आतीं। रेखाने आड़में

खड़ा होकर मा बेटेकी सब बातें सुनी थी इस वक्त मौका पाकर झट सामने आई और कहने लगी—"अरी काहेरी बहन यही तेरी अक्ल है कि, इस मंगलके बेरा आँसू गिरातीहो ! यह क्या रोनेका समयहै ? इतना दुःख सहके नारायणने एक सन्तान दिया उसकी खुशीके वक्त तू ऐसा करती है ! "

रामप्रसादको रेखाकी बात से जीमें बड़ा अन्तर आया माके ऊपर जो भाव था बदलगया। रेखाकी बात सुननेपर माका रोना घटा नहीं बल्कि दूना बढगया बिसूर २कर आँसू पोंछती रही मुँहसे बात नहीं निकली ।

बाईसवाँ अध्याय ।

इस संसारमें सब कुछ जाना जासकता है लेकिन आदमीका स्वभाव नहीं समझा जासकता जगत्में जितने आदमी हैं उतनेही तरहके उनके स्वभावभी हैं सारी जमीन ढूँढ आने परभी एक स्वभावका दो आदमी नहीं पायाजाता पृथ्वीके सब जीवोंके प्रत्येक श्रेणीमें एक एक भिन्न भिन्न प्रकृति है जैसे बाघका स्वभाव हत्या करना है वैसेही श्रृगालका स्वभाव बडी धूर्तता करना है और कुत्ते की प्रकृति प्रभुभक्ति इत्यादि ।

लेकिन एक आदमीके स्वभावमें सब जीवोंका स्वभाव पाया जाता है इसीकारण आदमी सब जीवोंसे उत्तम है ।

सब आदमियोंका रक्त मांस हड्डी और इन्द्री आदिका काम समान है फिर कोई परायेके दुःखसे दुःखी और कोई दूसरेका दुःख देखकर खुश क्यों होता है ? फिर एक आदमीको विपत्तिमें देखकर दूसरा उसके बचानेके लिये अपनी जानतक देदेता है और तीसरा मुर्देकी खोपडीपर बांस मारनेके लिये मानो मुर्देपर कोदो दरनेके लिये फिरता है अगर तुम्हारे दिन बने हैं तो तुम्हारे कितनेही दोस्त उसमें शामिल होनेके लिये उधार खाये रहते हैं लेकिन कितनेही ऐसेभी दोस्तहैं कि, तुम्हारी यह खुशीका दिन और सुधरा हुआ जमाना उनके आंखोंमें कांटासा

खटकता है इसीसे हम कहते हैं कि, इस संसारमें सब कुछ समझा जा सकता है किन्तु आदमीका स्वभाव नहीं समझा जासकता ।

रामप्रसादकी मा और रेखा मिसराइनकी मिताई गाँवभरमें मशहूर थी और ऐसी कोई बात नहीं हुई जिससे इनके मिलापमें खटाई पडती तौभी रेखा क्यों उससे इतनी दुश्मनी करने लगी यह हम नहीं समझ सकते और जो कुछ समझ सकते हैं उसकोभी हमें समझानेकी शक्ति नहीं है जो लोक इस संसारमें किसी का भला नहीं देख सकते वह अकसर दूसरेकी बुराई करने जाकर अपना भी बुरा कर डालते हैं तोभी उन्हें होश नहीं होता । इस संसारमें अगर सब लोग एकही स्वभावके होते तो क्या कोई दुःख होता ?

रामप्रसादकी माने इतने दिन बाद रेखाको पहँचाना है उनका स्वभाव भी इतना सीधा है कि, रेखाकी कुटिलता पहँचाननेमें इतने दिन लगे हैं जो आदमी जैसा होता है वह दूसरेकोभी अक्सर वैसाही समझता है इसीसे इतना गोलमाल हुआ करता है इस जगत्में आदमी पहँचानना बड़ा कठिन है ।

जो इस कामको जितनी चतुराई से कर सकताहै वह उतनाही बुद्धिमान् है ।

रामप्रसाद की मा वैसी बुद्धिमती नहीं थी इसी कारण उनके घर में इतना गोलमाल हुआ ।

और अगर सब आदमियों का स्वभाव एक सा होता तो गिरजाकी यह हालत क्यों होती गिरजाने ऐसा क्या कसूर किया कि, इसी उमर में इसको दुनियां के सब सुखके विलास को छोड़ देना पड़ा उसका अमानसिक त्याग स्वीकार और अलौकिक सहिष्णुता का अंतमें यही फल हुआ इसीसे हमने कहा था कि, गिरजा में जो सब गुण हैं उसका कुछ अंश भी अगर चमेलीमें होता तो क्या रामप्रसाद के घर में इतनी गड़बड़ होती ?

तेईसवाँ अध्याय ।

हम पहले कह चुके हैं कि, बड़ी बुरी साइत में रामप्रसाद की मा चुनार से चली थीं यह सब उसी बुरी साइत के फल फलने लगेहैं--

इतने दिनतक रेखा जब अपनी चतुराई से रामप्रसाद की माके साथ मितायी निभाहती आती थीं अब उसका भंडा फोर हुआ और खुल्लम खुल्ला रंणहो पुतहो होने लगा यद्यपि रामप्रसाद की माको झगड़ा करने का बहुत कुछ महावरा था तौ भी जगत् जियता रेखा और चमेली दोनों का सामना करना कठिन हुआ निदान बात २ पर रामप्रसाद की मा हारने लगी महीने में अब पन्द्रह दिन भी उनको अन्न मिलना मोहाल हुआ बहुधा अनाहार ही बीतने लगा यहां आने पर उनका एक दिन भी सुख से नहीं बीता रामप्रसाद भी माके ऊपर बहुत नाराज हुए चाहे कसूर किसी का हो रेखा और चमेली मिलके ऐसी चतुराई करती थीं कि, रामप्रसाद को मा ही का सब कसूर मालूम होताथा रामप्रसाद की मा झगड़े में कुछ छल प्रपञ्च तो जानती नहीं थीं इसीसे बेटे के पास गुनहकी बहुत कुछ बेइज्जती होने लगी ।

हम यहभी कह आये हैं कि, रामप्रसाद की गरीबी तो बहुत बढगई है बहुत कुछ कर्जा होचुकाहै आमदनीसे खर्च दूना होगया इससे अब कर्जेकी घटनेकी भी उम्मेद नहीं है आदमियोंको दरिद्र होनेपर हित अनहित का ज्ञान नहीं रहता धीरे २ रामप्रसाद की भी ठीक वही हालत होगई और आफिसका बहुतसा रुपया खागये गवर्नमेंट ऑफिसमें अगर उनकी नौकरी होती तो वह बहुत जल्द पकडे नहीं जा सकते थे लेकिन एक सौदागरके घरका रुपया हजम करना सहज नहीं है तुरंत पकडे गये ऑफिसके बड़े साहेब उनपर बडी मेहरबानी रखते थे इसी कारण रामप्रसादको कुछ और दण्ड नहीं मिला सिर्फ अपनी नौकरीसे छुडा-दिये गये ।

अब रामप्रसाद का दिन और बिगड़ा कर्जा मिटाने और परिवार पालनेके लिये उनको बापदादेकी जगह जमीनभी बेंचने पड़ी. चमेलीके शरीरमें गहना बहुत था रामप्रसादने उनके बेंचनेका नाम तक नहीं लिया इसी हालतमें जब रामप्रसाद का दिन इतना बिगड़ा था। एक आकस्मिक घटना हुई।

एक दिन सबेरे गिरजाकी मायकेसे एक नौकरने आकर कहा कि, गिरजाके बापकी मृत्यु ई है इसी कारण गिरजाने सब लोगोंको बुलानेकेलिये उसे भेजा है रामप्रसाद ससुरके मरनेकी खबर सुनकर दुःखी तो हुए लेकिन एक नौकरके कहनेसे ससुराल जानेको राजी न हुए। नौकर उनके मनका भाव जानकर बोला " पाहुन आप मनमें ऐसा मत समझिये. आप जानते हैं कि, घरमें कोई है नहीं चिट्ठी भी कोई लिखने वाला नहीं है रामप्रसाद नाराज होकर बोलउठे " जिसके बाप मरे हैं वह क्या अपने बहनोईको एक चिट्ठी नहीं लिख सकता है"।

फिर नौकर-" आपको तो मालुम है कि, वह पूत कैसे कुपूत हैं इसी वजहसे वह आपके सालेको त्याजपुत्र करके सब धनसम्पत्ति का मालिक गिरजा बाई को बना गये हैं वही गिरजा उनकी काम क्रिया करेगी। रामधन इस बात से नाराज होकर न जाने घर छोड़कर कहाँ चले गये हैं " रामप्रसाद ने चौंक कर पूँछा " ऐसा क्यों हुआ "? नौकरने जवाब दिया " आप क्या रामधन बाबूका स्वभाव नहीं जानते ? उनके हाथमें रुपया पडनेसे कैदिन रहता है. रकम भी कुछ थोडी नहीं है सात आठ लाख रुपया होगा "।

रामप्रसाद बैठेथे उठके खडे होगये मानों उठाकर सारे शरीरमें बिजली दौड गई इस खबरसे वह खुशहुआ कि, नाराज यह उस वक्त नहीं समझा गया. गम्भीर होकर फिर बोला क्या वह कोई वसीयत लिख गये हैं ? "

नौकर-"हाँ"

रामप्रसाद-"उसमें गवाही किसीकी है"?

नौकर–एक हाईकोर्ट के वकील से वह लिखाया गयाहै और इलाहाबाद के कई बडे २ आदमी उसमें गवाह हैं।

रामप्रसादने कहा तुमको यह सब कैसे मालूम है ?

नौकर–जब वसीयत लिखागया तब मैं वहीं खड़ा था जब लिखकर पढ़ागया तब मैंने अपने कानोंसे सुना।

रामप्रसाद–"रामधन उस वक्त वहां थे" ?

नौकर–"नहीं जबसे मालिक बीमार हुए तबसे रामधन उनके आगे नहीं आये मंगलकी रातको उनकी बीमारी बहुत बढ़गई तब उन्होंने बुलाने के लिये हमको भेजा. हम उनका अड्डा जानते थे वह एक कसबी के घरमें रहते थे मैं बुधवार को सबेरे उनको पुकारने गया लेकिन बाप की बीमारी बतलाने पर भी नहीं आये मैंने बहुत जिद किया और कहा कि, उनके बचने का भरोसा नहीं है तब उन्होंने कहा "जब वह मर जायँगे तभी हम घर आयँगे" इतना सुनकर रंडी ने विन्ध्यवासिनी देवीको भेड़ा चढ़ाने की मन्नत की और वहां जितने यार बैठे थे वह सब मारे खुशी के बग़ल बजाने लगे. मैंने यह सब बातें आकर मालिकसे बताई उन्होंने दश भले आदमियों को बुलाकर सलाह किया बृहस्पतिको वसीयत लिखी गई और रविवार को उनका देहांत हो गया"।

रामप्रसाद–दाह किसने दिया ?

नौकर–गिरजाने।

रामप्रसाद–तो क्या रामधन श्राद्ध भी नहीं करेंगे ?

नौकर–वसीयतमें उनको श्राद्ध करनेसे मना किया गया है इसीसे मैं आप लोगोंको बुलाने आया हूँ सब काम आपहीको करना होगा–और दिन भी बहुत बाकी नहीं हैं–तिवराति करके श्राद्ध करनेका विचार है आज दूसरा दिन है अब देरी मत कीजिये चलिये।

रामप्रसाद–" अच्छा ठहरो हम आते हैं इतना कहकर भीतर चले गये।

चौबीसावाँ अध्याय।

रामप्रसाद घर में और कहाँ जायँगे दौड़कर चमेलीके पास पहुँचे, चमेली जागती तो थी लेकिन सेजसे उठी नहीं थी. रामप्रसादने ताबर तोड़ पहुँचकर कहा " जल्दी उठो बहुत बढ़िया खबर आई है" चमेली सेजसे तो नहीं उठी लेकिन मुँह बनाकर बोली "सबेरे ही सबेरे क्या ढंग करने लगे " रामप्रसाद आग्रह करके बोले ढंग नहीं करते सच्ची बात कहते हैं कल्ह हमारे ससुरजीकी मृत्यु हुई है खबर लेकर आदमी आयाहै।

रामप्रसादकी बात सुनकर चमेली चट उठ बैठी और आग्रह करके बोली—" कौन बड़ी बहिनीके बाबा ? "

रामप्रसाद—" हाँ "।

चमेली खुशीके मारे चौगुनी हो गयी। सौतका एक मात्र अवलम्ब जो पिताजी थे उन्हींके मरने की खबर मिली है! अब मारे खुशीके चमेली शरीरमें कहाँ समा सकती है। उसके ओठोंपर हँसीकी रेखा दीख पड़ी। चट आग्रहके साथ पूँछ उठी—" यह खबर कहाँसे आयी ? "।

रामप्र०—"चुनारसे आदमी खबर लेकर आया है। "

अब चमेलीको शक करनेकी जगह बाक़ी नहीं रही। जिस कारणसे हो रामप्रसादका जी भी इस वक्त उमगा हुआ था। वह चमेली की हँसी देखकर मोहित होगये। वह हँसी मीठी हो या न हो लेकिन चमेलीने साथ ही मिठाई बरसाना शुरूअ कर दिया। वह कहने लगी—" अच्छा हुआ! बड़ी बात हुई। अब सब गलफना भूल जायगा। सब तेज़ी झड़ जायगी। "

बिजली चमकनेके बादही जैसे वज्र बहराताहै। हँसीके बाद वैसी ही मधु वृष्टि हुई। हठात् वज्र टूटनेसे जैसे आदमी चौंक उठता है रामप्रसाद भी वैसेही मुँह, आँख, दाँत देखनेबाद मधु वर्षणसे चमक उठे। कहाँ उस प्रफुल्ल कमलवदनका मधुरहास्य कहाँ, यह हिंसाद्वेष

परिपूर्ण अतिभीषण मुखाकृतिका गरल उद्गीरण, इतना शीघ्र यह विकट परिवर्तन अपनी आँखोंसे देखकर कौन विस्मित नहीं होगा ! किन्तु इसी विस्मयेकेसाथ रामप्रसाद को होश भी हुआ । चमेलीका स्वभाव मानो एकही पलमें वह समझ गये । जिसका एकवार पाँव फस-लता है वह क्या फिर सँभल सकताहै ।

उसको क्या चैतन्य हो सकताहै बहुधा चैतन्य होताहै लेकिन उसपर हमलोग विश्वास नहीं करसकते ।

रामप्रसादने फिर कहा—"एक और खबरआयी है । "

चमेली जो बैठी थी अबके उठ खडी हुई । आज चमेली किसका मुँह देखकर उठीहै कि, सेजपरसेही शुभसम्वाद शुरूअ हुआ सो लगातार शुभसम्वादकी झडीही लगी चली जातीहै । आनन्दमें उल्लसित हो स्वामी के मुँहके पास मुँह लेजाकर बोली—" काहे काहे ! कौन खबर कहो तो !"

रामप्रसाद बोले—" ससुरजी मरते वक्त अपने लडकेको त्याज पुत्र करके सब धन दौलत जगह जमीन लडकीके नाम पक्का करगये है । "

सुनतेही चमेलीके कलेजेपर मानो बिजली चमक पडी । सिरपर वज्र गिरा । जैसे कोई लोहेकी गरम की हुई छड छातीमें घूसेड़दे वह हँसता हुआ मुँह सूखकर सोंठ होगया ? चलता हुआ कल एकदम बन्दहोने पर जैसे होता है हाथपाँव और शिर का हिलना भी सत्र खींच गया । लेकिन चमेलीको इस बातपर यकीन नहीं आया ।

सूखे कण्ठ और बहुत स्वरसे बोली " अब हँसी करने लगे क्या ? "

रामप्रसाद " हँसी नहीं सचबात है । "

चमेली—"कौन कहता है ? "

राम०—"जो मरनेकी खबर लाया है वही कहता है । "

अब भी चमेलीको विश्वास नहीं हुआ फिर बोली—" तुम नींदमें न जाने क्या का क्या सुन आये हो ! नहीं तो बेटाके रहते कोई ऐसा करता है ! "

रामप्रसाद मुसुकुराकर बोले-" नहीं ! नींदमें नहीं सुना ऐसा होनेका कारण है। "

इसके बाद रामप्रसादने रामधनके चालचलनकी सब बात और बापके मरते समय का व्यौहार बयान कर गये । अब चमेली की खुशीमें खटाई पड़ी। वह फिर उसी सेजपर पड़रहीं। रामप्रसाद का वह चैतन्योदय अभी अस्त नहीं हुआथा। इससे चमेली की खुशी और विषाद का कारण वह ठीक २ समझगये । और समझकर दुःखी चित्त से बोले-"अरे अब सोनेसे कैसे बनेगा ? वह सब को लिवानेके लिये आया है। सो क्या कहती हो ?"

चमेलीने कुछ जवाब नहीं दिया रामप्रसाद कुछ कड़े होकर बोले- "वहाँ जानेमें तुमको क्या उज्र है ?"

चमेली अब के गरजकर बोली--"तुमको यह पूँछते शरम नहीं आती इतनाकर घरके इकठो बच्चा हुआ सो उसको लेके मरे का भात खाने जाऊँगी ?"

अन्न की बात कहते २ पासके सोते हुए बालक को उठालिया। और आँसू बहाने लगी।

इधर रामप्रसाद ? रामप्रसाद की क्या गति होगी ? अब रामप्रसाद का चैतन्य लोप हुआ। लड़के के अमङ्गलका डर रहते हुए सामनेही चमेली का रोना देखकर रामप्रसाद कबतक स्थिर रहसकते हैं ? रामप्रसाद के बेकहे आँसू बूँद बूँद होकर गालोंसे टपकने लगे।

रामप्रसादने उन्हें पोंछकर चमेली को सन्तोष देनेके लिये कहा- "हाँ ठीकहै। यह मैंने पहले नहीं समझाथा। तुमको वहाँ जानेकी जरूरत नहीं है। मैं माको लेकर चला जाऊँगा।"

तुरंत वृष्टि बन्द होगयी। फिर चमेली उठ बैठी और गरजकर बोली क्या कहा ? तुम जावोगे ! जावोहीगे ? अच्छा जावो। लेकिन याद रखना फिर लौटकर हमको नहीं पावोगे ?"

अबके गर्जनसे रामप्रसाद डरगये और चमेली से विनती करके बोले--"मैं न जाऊँगा तो श्राद्धमें कौन सँभालेगा ? जो सात आठ लाख रुपया छोड़के मरे हैं उनका श्राद्ध अच्छा होना चाहिये ।"

फिर गरजकर बोली--"ऐं ! सात आठ लाख रुपया ? यह सब बात झूठी है ?"

रामप्र०--"नहीं झूठी नहीं । हमारे ससुर बड़े किरपिन थे इसीसे इतना रुपया जमाकिये थे ।"

"यह बात सच हो तो तुम्हारे जातेही जाते मैं कूए में डूबमरूँगी ।" कहकर चमेली फिर लोट गयी । अबकी ढङ्ग बेढब देखकर रामप्रसाद को कुछ और बात कहनेका साहस नहीं हुआ और धीरे धीरे घरसे बाहर चले गये ।

घरसे निकलकर आँगनमें आतेही माता मिलीं रामप्रसाद जब घरमें गये थे तभी माने बाहर आकर नौकरसे सब बातें सुनली थीं । पहलेही रामप्रसादने कहा--" ससुर मर गये हैं । तुमको बुलानेके लिये आदमी आया है । "

माने पहले विचारा कि, कुछ जबाब नदें क्योंकि रामप्रसादने मा कहके उनको नहीं पुकारा था । इतनी बातें कर कहै भी एक छोटासा " मा " शब्द क्यों नहीं मुँहसे कहा । रामप्रसादको यह बड़ा भारी रोग था ।

न जाने क्या समझकर मा न कहा--" हमारेही अकेले के वास्ते थोड़े आया है । वह तो सबको लेने आया है । "

रामप्रसाद--" हाँ सो तो है, लेकिन यह छोटेसे लड़केको लेकर तो श्राद्धमें नहीं जासकती । आज तुम आदमीके साथ चली जाव कल मैं आऊंगा । "

मा जब बात करनेलगी तब दो चार कहे बिना वह कहाँ चुप रह-सकती हैं फिर बोलउठीं " मैं आगे जाकर वहाँ कौन काम उठाऊँगी ।"

राम--" आज हमको एक जरूरी काम है । कल जरूर आवेंगे । "

चमेलीके हुक्म बिना रामप्रसाद कहाँ जा सकते हैं । फिर और जगह तो और जगह खुद सौतके मायकेमें बिना चमेलीका हुक्म लिये कैसे जायँगे ? रामप्रसादको और क्या जरूरी काम है ? सिर्फ चमेलीका हुक्म लेनेके लिये एक दिनकी मुहलत लेकर ठहर गये । माने यहाँ आनेके दिनसे आजतक एकदिन भी सुख नहीं पाया था । यह मौका वह कब चूक सकती थी । बेटेको और कुछ न कहकर तुरंत उसी नौकरके साथ चुनारको रवाना हुई ।

पच्चीसवाँ अध्याय ।

रामप्रसादकी माके चुनार पहुँचनेपर सब रामप्रसादको पूँछने लगे। सबसे अधिक गिरजा स्वामीके लिये चिन्तित हुई । दूसरे दिन दस बजे तक उनके आने की राह देखी गयी। जब रामप्रसादका दर्शन नहीं हुआ तब फिर एक आदमी वहाँ भेजा गया । उसने रातको लौट आकर कहा—"वह बीमार हैं अब यहाँ नहीं आ सकते।" नौकरसे भितरिया जाना गया कि वह बीमार सीमार कुछ नहीं हैं । चमेलीनेही उन्हें नहीं आने दिया । उन्होंने आनेकी बड़ी बड़ी तदबीरें कीं, लेकिन चमेलीके आगे एक न चली । गिरजा यह सुनकर बहुतही दुःखी हुई । इधर भाई रामधनको भी घर बुलालानेमें गिरजाने उठा नहीं रक्खा । जमुनाको पिताके मरनेका उतना दुःख नहीं हुआ जितना इस मौकेपर रामधनके घर न आने का हुआ । जमुना रामधनके वास्ते सदा रोती थी । लेकिन बिहारीलालकी वसीयतकी बात पिता के मरनेसे पहलेही रामधनके कानों में पहुँच गयी थी वह फिर घर नहीं आसका । गिरजा बापकी उस दीहुई धन सम्पत्तिकी चाह नहीं रखती थी वह सब भाई को सौंपकर उसीके अधीन रहती। और भेट होनेहीपर उनसे यह सब कहने का विचार करती थी। लेकिन रामधन घर नहीं आये तब और क्या करसकती हैं? एक तो

पिताके मरने का शोक ऊपर से स्वामी और भाईका ऐसा व्यौहार गिरजाको इस समय कितना दुःख हुआ सो सहजही समझा जासकता है। श्राद्धमें लगे रहने से इधर कई दिन गिरजाके साधारण तरहपर कट गये।

श्राद्धादि के बाद गिरजा का पहला काम भाई रामधनका पतालगाना था। महल्लेमें मुंशी जिवधनलाल एक बहुत भले आदमी थे रामधनसे उन की बहुत मिताई थी। एक दिन जमुनाने उनको घर बुलाकर कहा भैया! हमारे रामधनका पता लगा दो नहीं हम लोग जहर खाकर मरजायँगी"।

गिरजाने एक नौकरानीसे जिवधनलालके पास कहला भेजा कि, वह सब धन सम्पत्ति भैय्या रामधनको देखकर उन्हीं के अधीन रहना चाहती हैं।

जिवधनलाल दोनोंका कहना टाल न सके निदान रामधनके खोजने को निकले पहले गाँवकी सुन्दर जान नामकी एक रण्डीके घर खोजने गये, लेकिन वहां रामधनको नहीं पाया। सुन्दरजानसे जिवधनलाल की मुलाकात थी वह बहुत दिनतक उसके घर खूशी मना चुके थे। किन्तु आज सुन्दरने उनके साथ परिचितसा व्यौहार नहीं किया। जिवधन बड़े रसिया और चतुर आदमी हैं। अपना काम निकालने के लिये उन्होंने सुन्दरजानसे कहा "क्यों बीबी पहँचानती हो?"

सुन्दर जानने मुरचढ़ाकर जवाब दिया—"जी जनाब! पहँचानती क्यों नहीं लेकिन आप जिसे खोजते हैं वैसे आदमियों को मैं यहां आने नहीं देती"।

जिवधनलालने मुसकुराकर कहा—"खोजेंगे और किसको? हम तो तुम्हीं को खोजते हैं। लेकिन एक बात सुनी है बीबी साहब उसीको पूँछने आया हूँ कि, बात सच्ची है या झूठी?"

इतने में एक बुढ़ियाने आकर कहा—"अरे कौन! जीवधन बाबू! आवो आवो! बैठो। बहुत दिनबाद दरसन मिला कहीं गये थे क्या?"

फिर सुन्दरजानपर नाराज़ होकर बोली–"अरे सुनरी ! यही तेरी अक़िल है ! ऐसे जान पहँचानके आदमी आये हैं और तू बैठनेको नहीं कहती न पान तम्बाकू देती । ऐसा करनेसे तेरे घर कोई भला आदमी कैसे आवेगा ! "

सुन्दर जानने सुर बदलकर कहा–" हां मा यह तो है लेकिन जिवधन बाबू घरके आदमी हैं, घरके आदमीका आदर खातिर क्या करना ? "

सुर बदलनेके साथही साथ सुन्दरने मधुर मुसक्यानभी छोडाथा। फिर एक कटाक्ष फेरकर बोली--" अच्छा आइये बाबू साहेब ! बैठिये आज आपने हमारा घर पवित्र किया । आपकी चरन धूल पाकर मैं धन्य हुई । "

रसिकचूडामणि जीवधन बाबू बोले–"बीबी साहब ! ऐसी बेइज्जती से तो सौ जूता लगादेती तो वही अच्छा था । "

इतना कहते २ गलेका दुपट्टा सुधारने लगे । बीबीने दुपट्टा पकडकर पलङ्गके पास खींच लिया और सेजपर बिठाकर विद्युतहँसीके साथ बोली " अच्छा यह तो बतलावो बाबू साहब ! इतने दिनों तक आये क्यों नहीं ? "

अहा ! ऐसी मधुरहासिनी मायाविनी क्या दुनियामें और होगी ?

जीवधनबाबू अब घरके गुण्डाबनकर बोले–" अच्छा जरा तम्बाकू तो पिलावो । "

नौकर चिलमचीने तुरंत आकर आज्ञा पालन किया । जीवधन बाबू तम्बाकू सुडसुडाते हुए बोले–" क्यों बीबी ! तुमने क्या किया ? चार पाँच बरसतक एक भले आदमीके पास रहकरभी एकघर अच्छा नहीं बनवा सकी ? "

बात सुन्दरजान को चाहे जैसी लगे लेकिन बुढियाके मनमें बहुत अच्छी लगी । वह चट बोली–" लेरे, ले ! देख तो भले आदमीके लडके हैं तुझे क्या समझातेहैं ? बाबूजी ! घरकी बात कहते हो ? अरे घर

दुआर चूल्हेमें जाय जो कुछ पासमें था वहभी इस लौंडेके सङ्गमें खोगया अब जो विपत्त पड़ीहै वह हमी जानतीहैं । ”

जिवधन विस्मित होकर बोले—“अरे क्या कहतीहै ? देना तो दूर तुम्हा-राही सब ढूँच लेगयाहै ? ”

बीबी साहिब यह सब घरकी बातें जाहिर करना नहीं चाहती थीं इसीसे कुछ नाराज होकर बोली—“ हाँ, हाँ ! आज पाँचबरससे वह भले आदमी का लडका आताहै एक पैसाभी नहीं दिया ! मरनेके किनारे आकर इतना झूठ क्यों बोलती है । ”

बीबीकी बात सुनकर बुढिया बहुत बिगडी । मारेकोप के थरथर काँपने लगी । मुँहसे इतनी बात बाहर निकली—“ अरे ! देख तो अबभी उसीकी ओर बह रही है ? क्या उसको फिर बुलावेगी ? अबके आनेपर तो....”

इतनेमें सुन्दरजानने उनके एक मित्रके आगे उनकी बुराई कहने रोकनेका इशारा किया । अब बुढ़िया ख़बरदार हो गयी और बात फेर कर बोली—“ हाँ भई उसका धरम सुनता है मैं नमकहरामी नहीं करूँगी । पहले कुछ अलबत्ते दिया था । लेकिन उसका सूद सहित—अरे मर कहाँकी बात कहने लगी, क्या कह रही थी । हाँ बाबू साहब ! आप उनसे नहीं मिले ? ”

जिवधन—“ वह घर जातेही नहीं मिलें कैसे ? यहाँसे अड्डा कब उठा है ? ”

सुन्दरने धीरेसे लम्बी साँस खींचकर कहा—“आज चार दिन हुआ। ”

बुढ़िया सुन्दर की इस लम्बी सांसका अर्थ समझ सकी या नहीं सो नहीं कह सकते लेकिन तुरंत गरजकर बोली—“ चार दिन हुआ चला गया है कि, मैंने उसे खेदा है सो भी क्या सहजही खेदा गया है । ”

सुन्दरजान बुढ़ियाको वहाँसे हटानेके लिये बोली—“ ऐ मा ! नीचे दूध मैं उघारे छोड़ आयी हूँ । जल्दी जा । ढाक आ, नहीं बिल्ली खा जायगी । ”

" अरे बाप रे ! " कहकर बुढ़िया ताबर तोड नीचे गयी । इधर सुन्दरने आँखोंका आँसू पोंछकर कहा—" काहे जिवधन बाबू ! मैं आपसे एक बात पूँछती हूँ । आप सच बतावोगे ? "

जिवधनने मुसकुराकर कहा—" यह तो तुम्हारी अदालत नहीं है कि, झूठ बोलूँगा । "

सुन्द०—" नहीं बाबू साहब ! मैं दिल्लगी नहीं करती । "

जि०ध०—" अच्छा तुम नहीं तो मैंही करता हूँ । बात तो कहो क्या है ? "

सुन्द०—" आप क्या रामधन बाबूके पाससे आते हो ? "

जि०ध०—" इसीसे मालूम होता है पहले तुमने हमें भी देखनेकी तरकीब की थी ? "

सु०—" तो आप जरूर वहींसे आते हो । "

जि०ध०—" अरे तो अब बुढ़ियाको बुलावेगी या अकेलेही झूँठी झाँटने लगी ! "

सु०—" नहीं बाबू साहब ! सच बतलावो । "

जि०ध०—" नहीं सच कहताहूँ । मैं रामधनके पाससे तो नहीं एक दूसरे आदमीके पाससे आता हूँ ।

सु०—" अरे बापरे ! कौनके पाससे बोलो नहीं "

जि०ध०—" जो बापके मरनेके बादेपर लोगोंको धोखा नहीं देता अपनी कमाईके मारे रुपये पैसे को खाक समझता है उसीके पाससे आता हूँ । "

सु०—" कितना महीना देगा ? "

जि०ध०—" मैं भई कायस्थका लड़का हूँ । कुछ रंडियोंकी दलालीका रोजगार तो करता नहीं । वह हमारे एक दोस्त आदमी हैं तुम्हारे पास आना चाहते हैं । तुमसे भी हमारी जान पहँचान है । इसी से आयाहूँ ! "

जिवधन मनमें कहते हैं कि, भई जिस कामको आते थे उसमेंसे एक पाई भी नहीं हुआ । यहां योंही वक्त गया । अब किसीतरह धोखा देकर जान बचाना चाहिये ।

सु०—" वह आदमी देखनेमें कैसाहै ? उमर कितनी होगी ? "

जि० ध०—" भाई देखनेमें जैसे हैं वह आनेहीपर देख लेना । बाकी रही उमरकी बात सो उनकी कुण्डली देखलीजो इन बातोंकी चरचा तो हमसे करो नहीं । ठीक २ बतलावो उन्हें लावें कि नहीं ? "

सुन्दरीजान कुछ देर बाद लम्बी साँस छोड़कर बोली " लाना " । " तो आज लावेंगे । " कहकर जिवधन बाबू उठ खड़े हुए । और जूता पहनते पहनते फिर बोले—" अगर रामधन मिलेगा तो उससे कुछ कहेंगे ? "

सुन्दरजानने उनकी धोती पकड़कर कहा—" सुनो बाबू साहब ! ऐसी जल्दी क्यों करतेहो । एक चिलम और तम्बाकू पिये बिना न जाव हमारे सिरकी कसम ।"

जिवधन बाबू खडेही खडे बोले—" अरे कसम बसमकी बात जानेदो हमको एक जरूरी कामकी याद आगयी । अब हम नहीं बैठेंगे तुमको जो कहनाहो सो बोलो । "

सुन्दरजान विनती करके बोली—" उनको जिस तरह हो एकबार जरूर जल्दी भेजदेना लेकिन खबरदार मा इस बातको न सुने । "

जिवधन बाबू वहां नहीं ठहरे जल्दीसे बाहर आकर मनहीमन बोले—" यह एक नये ढंगकी मुहब्बत है । दोको बुलाती है एकको जाहिरा और दूसरेको छिपकर आनेको कहती है । "

जिवधन बाबू रास्तेपर आतेही न जाने क्यों दौड़ने लगे ।

छब्बीसवाँ अध्याय ।

दौड़ते दौड़ते वह एक दूसरी रण्डीके घर गये वहां भी रामधन बाबूका पता नहीं लगा । अफसोस करते हुए जिवधन बाबू लौट रहे थे कि, एक

आदमीने उनको खबरदी कि,एक नीच प्रकृति रमणीके घरमें तीन दिनसे रामधन बाबू टिकेहैं। वहीं उनको शराब पीते उसने देखा था। उस रमणीका घरही कई और बदमाश और व्यभिचारिणी स्त्रियोंका अड्डा था जिवधन बाबू चलते चलते वहां पहुँचे।

पास जातेही शोर गुल सुनाई दिया। उस कोलाहलमें रामधनका परिचित कण्ठरवभी जिवधन बाबूको सुनाई दिया। धीरे धीरे वह घर में घुसे पहलेही रामधन बाबू नजर आये। रामधनकी उस समयकी बिकट मूर्ति देखकर जिवधनबाबू बहुत डरे। रामधन उनको देखतेही ठठाकर एक भयावनी हँसी हँसा। और उसके साथी भी उसी के साथ हँसपडे। जिवधन बाबू हालत देखकर काँपगये। यद्यपि रामधनको उन्होंने कई बार इससे पहले शराब पीनेकी हालतमें देखाथा लेकिन आजसी बिकट मूर्त्ति उनको कभी देखनेमें नहीं आयीथी साथी और सङ्गिनीगण का रूपभी बडा डरावनाथा। दो पिशाचिनी रण्डियाँभी वहीं मौजूदथीं। देखनेसे वह साक्षात् पिशाचियोनिकी जानपडतीथीं। सबने जिवधन बाबू की बिकट हँसीसे अभ्यर्थना की। इससे और धूम पडगयी। एकबोर नरकीभी यह दृश्य देखकर डरजाता! जिवधनबाबूभी सहमे खडे रहे। वह जानते कि, रामधन ऐसी हालतमें है तो कभी यहाँ आनेका साहस न करते।

जिवधन बाबू उन्हींमें मिलकर अपने कार्य्य सफल होनेकी इन्तिजारी करनेलगे इधर रामधनका उत्पात पलपलपर बढने लगा। कभी पागलकी तरह ठठाकर हँसता और नाचताथा कभी चिल्लाकर बिना सुरतानके गाने लगताथा। क्षणभरभी स्थिर नहीं रहता।

ऐसी हालत देखकरभी दो स्त्रियोंका अनुरोध रखने के लिये यह नरक यंत्रणा सहकरभी ठहरे रहे। जब क्रमशः रामधनके रूङ्गि और सङ्गिनी-गण अचेत हो पडे तब जिवधन बाबूने मौका पाकर रामधनसे कहा "क्यों भई अब तो तुम्हारी दशा खराब होरही है। नहालो तो अच्छाहै।

रामधनने जवाब दिया-" जबतक शरीरमें प्राण रहेगा। तबतक तो अब स्नान नहीं होगा। बहुत स्नान कर चुका अब स्नानकी क्या जरूरत है? "

जिवधन-" तो अब क्या करोगे? "

रामधन-"जो करता हूँ वही करूँगा। तीन रात तीन दिन बीतगयाहै। अब देखें कैदिन कटते हैं। "

जिवधन-" अब बहुत दिन नहीं कटेंगे। यह हप निश्चय कहतेहैं। फिर इसतरह प्राण देनेसे क्या फायदा! "

रामधन-" भाई हम आपसे जीकी बात कहतेहैं। इस वक्त हमको बडा दुःखहै। बडी ज्वालाहै। अब संसारमें हमको कुछभी आशा भरोसा या सुख नहीं जिसके लिये इतनी ज्वाला सहें।

जिवधन-" तो क्या इसीसे इसतरह प्राण दे रहे हो? "

रामधन हाथ हिला हिलाकर कहने लगा-" प्राण नहीं देते भाई। प्राणकी ज्वाला निकालतेहैं। शराब पीनेसे सब दुःख विसरजाताहै। दुःख भूलनेके लिये इससे बढकर दूसरी दवा नहीं है फिर कइ बातोंकी याद आरहीहै। थोडा और पीनेसे ठीक होगा। "

इतना कहते २ रामधनने एक ग्लास फिर शराब से भरकर खाली कर डाला। जिवधन लाल उसकी हालत देखकर अवाक् होगये। और थोड़ी देरबाद बोले-"सुनो रामधन! तुम शराब और मत पीओ। मैंने तुम्हारे शरीर की ज्वाला दूर करने की तदबीर की है। और वही कहने के वास्ते तुम्हारे पास आये हैं?"

राम०-"कौन तदबीर?"

जिवधन-"तुम घर चलो तुम्हारी बहन सब धन दौलत तुमको देगी और तुम्हारे अधीन रहेगी।"

रामधन पागलकी तरह चिल्लाकर बोला-"मैं बहन की खैरात नहीं चाहता।"

जिवधन—"खैरात कैसे । सब तो तुम्हाराही है ! तुम्हारे रहते तुम्हारी बहन कौन होती है ?"

रामधन फिर अकड़कर चिल्लाया और बोल उठा—"मैं तो बाबाका त्याज पुत्र हूँ ।"

जिवधनने रामधनबाबू के मुँहकी ओर देखा चेहरे से हिंसा फूटी पड़ती थी। इसके सिवाय और कुछ भी दूसरा भाव रामधनके चेहरे पर नहीं देखा । फिर नम्र होकर बोले—"अगर तुम्हारी बहन तुमको दान पत्री लिखदे !"

रामधनने उसी सुरमें जबाबदिया--"मैं उस दानपर मूतदूंगा।"

जिवधन—"ना भई ! मैं और क्या तदबीर कर सकता हूँ ।"रामधन बिकट हँसी हँसकर बोला—"और किसीको तदबीर करने की जरूरत नहीं है । मैं खुद करलूँगा अपनेही हाथसे खून करके अपने प्राणका कष्ट दूर करूँगा।"

जिवधनबाबू अबके डरगये । उस भयङ्करमूर्तिसे ऐसी बिकट प्रतिज्ञा सुनकर कौन नहीं डरेगा ? एक तुच्छ विषयके लिये क्या मनुष्य इतना नीच हो जाताहै? जो रामधन अपनी छोटी बहन गिरजाको उतना चाहता था उसको इसतरह खूनकरने पर उतारू हुआ । बड़े भाई की छोटी बहनपर जो ममता होती है वह क्या हुई! जिवधनने उस बातको छोड़कर अबके कहा—"अच्छा घर नहीं चलते तो सुन्दरजान के पास चलो वह तुम्हारे वास्ते घबरारही है ।"

फिर उसी बिकट हँसीके साथ रामधनने जबाब दिया--"उसको बोलो वह हमारे वास्ते अब न घबरावे मैं वहां भी पहुँचूँगा। लेकिन पहले गिरजाका खून करना पीछे सुन्दरजान की बात है। यही सङ्कल्प करके इस बातको शुरू किया है तीन दिन तीन रात बीत गया अबतक पूर्णाहुति नहीं दे पाया । जिस दिन पूर्णाहुति करूँगा उसी दिन घर जाऊँगा । उसी दिन सुन्दर जानको भी देखूँगा यह देखो यही बलिदानका हथियार है।"

इतना कहते २ पागलकी तरह रामधन दौड़कर एक झोंपड़े में घुसा और तुरंत एक तेजहथियार लेकर बाहर आया । हथियार देखकर जिवधनबाबू का जी सूखगया । और हाँफतेहुए जिवधन बाबू वहां से भागे ।

सताईसवाँ अध्याय ।

गिरजा और जमुना फुआने जिवधन के मुँहसे अपने रामधनका सब हाल सुना । जमुना फुआ रोकर दिन बिताने लगी । किन्तु इस घटनाके बाद गिरजाभी जमुनाकी आँखोंमें खटकने लगी । अब गिरजा पर बड़ी विपद पड़ी । नजाने गिरजाने क्या अपराध किया है ! उसपर लगातार विपत्तिही विपत्ति आरही है ! पहले जब सासरे म थी तभी क्या अपराध किया था कि, सासका रोज गर्जन तर्जन सुनना पड़ता था । क्या अपने हृदयको बलि देकर स्वामीको व्याहपर राजी किया था यही उसका अपराध था ? अगर इसीको अपराध कहें तो आत्मविसर्जन किसको कहेंगे ? गिरजाका कसूर अलबत्ते हमलोग ढूँढने पर भी नहीं पाते, लेकिन कसूरकी सज़ाके लिये हमको खोजना नहीं पड़ेगा । पहली सज़ा–गिरजाकी स्वामीके सुखसे वञ्चित होना । जिस भीत पर गिरजाकी जिन्दगीका महल खड़ा है वही भीत अबकी क्यों खस गयी । फिर ऊपरसे सासका गर्जन तर्जन और तिरस्कार यह किस अपराधका दण्ड है ? खैर क़सूर हो या नहो । बिना गुनाहके भी बडे लोगोंका गर्जन तर्जन और तिरस्कार सहा जा सकता है, लेकिन बिना अपराधके उससे भी सौ गुना सौतिका दुःख वह भयङ्कर लाञ्छना क्यों हो रही है ? क्या गिरजा सौतको अपनी सहोदर बहनसे भी बढ़के मानती चाहती है यही उसका बड़ा भारी गुनाह है, जिसकी यह सज़ा हुई ? यह तो गिरिजाके सासरेकी बात हुई ।

फिर वह कैसी दशामें सासेरेसे बापके घर आयी ! यह भी हम अपनी आँखोंसे देख चुके हैं । मायके आकर गिरजाका प्राण तो बचगया सही. लेकिन प्राण क्या इन्हीं सब दुःखोंको सहनेके लिये बचा ? इसपर भी क्या दुःख कम था जो दुःखदाताने उसे अतुल सम्पत्तिका अधिकारी बनाकर और महान् दुःखमें डाला । इसीसे कहते हैं—हम यह नहीं जान सकते कि, गिरजाका अपराध क्या है ? न गिरजाकी इतनी पीड़ा देखकर ईश्वर की न्यायपरायणता समर्थनके लियेही कुछ मनप्रबोधकी तदबीर देखते ।

हमको सब छोड़कर अब यही समझना चाहिये कि, गिरजाके नसीबमें सुख हैही नहीं । फिर उसे सुखी करे कौन ? गिरजा अब क्या करे ? केवल अकेले बैठकर अपने नसीबपर पछताती है । स्वामीने बेगुनाह इस पूरीउमरमें त्यागदिया, भाईके स्नेहसे वञ्चिता हुई । भाईको सब धन दौलत देकर भी गिरजा भीख माँगके गुज़ारा करनेपर तैयार है । तौभी भईया नहीं आता ! फिर भाईके लिये इससे अधिक और क्या कर सकती है ? सौतको स्वामी दान करके दोनोंकी सेवा करनेपर तैयार है ? किन्तु इसपरभी वह उसे नहीं चाहते । अब सौतके सम्बन्धमें भी गिरजा इससे अधिक क्या करसकती है ? कोई गिरजाका हितचाही हमें बतलावें भाई और सौतको सन्तोष दानके लिये गिरजाको अब क्या करना चाहिये ? कौनसा स्वार्थ त्याग करना शेष है ? मौतकेलिये भी तो गिरजा बहुत कुछ देवी देव मनाती है लेकिन सब निष्फल गया । रही एक आत्म हत्या सो मन में आतेही गिरजा का शरीर सिहर उठता है गिरजाका स्वभाव ऐसा नहीं है । वह आत्मविसर्जन करसकती है लेकिन आत्महत्या नहीं करसकती है। एकदिन आधीरात को अपने पलङ्गपर पड़ी पड़ी गिरजा यही सोच रही थी । गरमीके दिन थे । खुली खिड़कियोंमें चाँदनी आकर घरको उजियाला कर रही थी । उसी उजियालेमें घरकी सब चीज़ें साफ़ नज़र आती थीं । गिरजाको बहुतसी बीती बातें एक एक करके याद आरही थीं । इतनेमें घरके अन्दरही एक स्थानसे कुछ शब्द हुआ ।

गिरजा की आँखें उसी ओर हो रहीं । गिरजाने देखा धीरे धीरे जँगला खोलकर कोई एक आदमी भीतर आरहा है । पहले तो उसे इसतरह आते देख गिरजा डरी, लेकिन थोड़ीही देरमें उसका डर जाता रहा । रोशनीमें गिरजाने देखा वह आदमी दूसरा कोई नहीं उसका वही बड़ाभाई रामधन है । पहलेभी बापके डरसे रामधन को इसतरह आते हुए गिरजाने देखा था इसीसे आज रामधनको देखकर बहुत खुश हुई । लेकिन यह क्या ! आज रामधनके हाथमें चमचमाता हुआ हथियार कैसा है ? गिरजा झटपट उठकर भाईका स्वागत करनेचली, लेकिन उसके हाथमें हथियार देखकर उठ न सकी । गिरजाने देखा उसका भाई रामधन बिकट मूर्ति धारण किये काँपते हाथमें तेज़ हथियार लिये पलङ्गकी ओर आ रहा है गिरजाको बोलनेकी शक्ति नहीं रही । वह चिल्लाभी नहीं सकी । जब रामधनने बायें हाथसे मसहरी उठाकर दहने हाथसे हथियार सँभाला तब गिरजा चिल्लाकर बोली—"अरे भैया हमारा खून ?"

बहनकी बात पूरी होनेके पहलेही रामधनने वह तेज हथियार गिरजाके पेटमें घुसेड़ दिया भयानक आर्तनादके साथही रामधन कूदकर जँगलेसे बाहर होगया । गिरजाके नसीबमें इतना और था ।

अट्ठाईसवाँ अध्याय ।

रामधन यहाँसे दौड़कर रास्तेपर आया । रातके दोबजे थे । कोई आता जाता नहीं था । सूनसानमार्गपर रामधन अकेला चलनेलगा—हाथ वह रक्तरञ्जित हथियार अबतक मौजूद था । इतने बडे शहरमें जहाँ गली २ चौकीदार पहरा देते फिरतेहैं एकआदमी का खून करके हाथमें छूरीलिये रामधन सदर रास्तेसे चला जाताहै पहरेवालोंने नहीं पकड़ा यह बडे अचम्भेकी बातहै । न जाने रामधनसे पहरेवालोंकी जान पहँचानथी या क्या ? जो हो चलते २ रामधन सुन्दरजानके दरवाजेपर आ खड़ाहुआ । सुन्दरजान का प्रवेशद्वार अबतक खुला था । उसीमें होकर रामधन भीतर गया ।

नीचेका मंजिला बहुतही अन्धकारमय था। लेकिन घरके ताक ताक रामधनके देखे हुए हैं कड़ी काठकी गिनती तक मालूम है। अन्धेरेसे रामधनकी गति नहीं रुकी। धीरे २ ऊपर चढ़ा। उसे सुन्दरजान को खोजना नहीं पड़ा ऊपर जातेही देखा बरामदेमें पलंगपर सुन्दरजान पड़ी है सारे शरीरपर चाँदनी छिटकीहै। भूखा बाघ सामनेदी शिकार देखकर जैसे टूटता है वैसेही रामधन भी सुन्दरजानपर पड़ा उसी क्षण एक भयंकर चीत्कार हुआ। घरके और लोगभी जागे और चारों ओरसे कोलाहल करने लगे। उस शोर गुल में सुन्दरजान, रामधन और खून यह तीन शब्द साफ सुनाई देने लगे।

रामधन उस कोलाहलमेंभी खड़े होकर बिकट हँसी हँसताथा। हठात् पकड़े जानेकी बात उसके जीमें समायी और भागनेकी तदबीर करने लगा। लेकिन वह तदबीर व्यर्थ गयी। पड़ोसियों और पुलीसवालोंसे वह इतना घिरा था कि, भाग न सका। पासहीकी एक कोठरीमें दौड़कर घुसगया। भीतरसे किंवाड़ बन्दकरली। इतनेमें बाहरसेभी एक पुलीस कानिस्टेब्लने साँकल बन्दकरके ताला भर दिया जो अबतक रामधनके हाथमें छूरी देखकर दश हाथ दूर महामाया खेलरहा था अब बाघ कठघेर में पड़गया॥

लेकिन थोडीही देर बाद रामधनने अपनी हालत समझली. उसवक्त भी उसकी मुट्ठीमें वह खून लगा हुआ' हथियार मौजूद था। न जाने क्या जीमें आया तुरंत वह हथियार अपने आप अपने पेटमें खोंम दिया। बाहर शोर मचाथा भीतरका यह हाल किसीको मालूम नहीं हुआ। क्योंकि वहाँ सुन्दरजान को अस्पताल में जानेका बन्दोबस्त होरहा था। लेकिन बन्दोबस्त होते होते ही सुन्दर जानका प्राण शरीरसे बाहर होगया। इधर खूनी असामी भी पकडा गया है। अब पुलीसके लोग आनन्दके मारे शरीरमें नहीं समाते। चारों ओर एकत्रित लोगोंसे आते भद्रव्यौहार कररहेथे। इतनेमें रामधन जिस घरमें बन्द था

उसीके नर्दमामेंसे खूनकी धार निकल कर मुंदरकी रक्तनदीमें जा मिली । जब देखते २ उस धारका पाट बढने लगा तब हेड्कानिस्टेब्ल की नज़र उसपर पड़ी। चट चिराग लेकर देखा और हुक्म दिया कि,अब जल्द किवाँड़ तोड़ो अब कोई बड़ा ऑफिसर वहाँ नहीं पहुँच सकाथा । इसकारण जमादार साहबका हुक्म पूराकिया गया. आठ दस लात मारनेपर वह किवाँड टूट पडा, लेकिन उसवक्त भी घरमें घुसनेकी हिम्मत जमादार साहबको नहीं हुई । फिर हुक्मसे काम चलाने लगे। काँपते काँपते रोशनी हाथमें लिये चार कानिस्टेब्ल उसी कोठरीके दरवाजेपर पहुँचे । लेकिन दरवाजेहीसे भीतरका दृश्य देखकर वह इतना डरे कि, हाथसे रोशनी गिरगयी । इतनेमें दो तीन आदमियों सहित एक साहब आ पहुँचे. अब जमादार साहब खुद हाथमें रोशनी लेकर उठे पहले साहबको सुन्दरजानकी लाश दिखायी। और फिर बिना कुछ कहे हुए रामधनकी कोठरीकी ओर चले । भीतर जातेही साहब चिल्लाकर बोल उठे "Double Murder" डबल खून। इतनेमें दो और साहब पहुँचे और साहबकी आवाज सुनकर उसी कोठरी में घुस गये । पुलीसके बडे साहबने कहा–"That's Murder and this is suicide"

उनतीसवाँ अध्याय।

आज चमेलीकी खुशीका हद्द नहीं है । सांसारिक दुःख और रात दिनका कलहविवाद सब भूल गयी है। इतनी खुशीका कारण इतनाही है कि, गिरजा अपने भाईके हाथसे मारीगयी है । एक तौ सौतका मृत्यु-सम्वाद दूसरे मौतसे नहीं भाईके हाथसे । चमेली मारे खुशीके आपेसे बाहर होरही है । इतनेमें रेखा वहाँ आ पहुँची ! अब चमेलीका उससे पहलेकी तरह मिलाप नहीं रहा । तौभी क्या ऐसी खुशीकी खबर चमेली रेखासे कहे बिना रहसकती है । चमेलीने पुकारा–"फूआजी ! ए फुआजी!"

अहा! आज चमेलीकी आवाज कैसी मीठी है ? बहुत दिन बाद इस मीठी आवाजके जवाबमें रेखाने भी मीठी आवाजसे कहा–" काहे बेटी! "

चमेली–" अरे सुनीहो कि, नहीं ? "

रेखा चुप न रहसकी बडे २ पाँचासे दाँत निकालकर ओठ चबुलाती हुई बोली–" हाँ सुनचुकी हूँ। "

चमेली–" तो क्या सच बात है ? "

रेखा–क्या तू बिसवास नहीं करती ? तो भला जो रामप्रसादको बुलाने आया है उसीसे काहे नहीं पूँछलेती ? "

च०–" क्या वहाँसे कोई आया है ? "

रेखा–" हाँ। वही तो हमसे सब बात कहता था। "

च०–" तो फूआजी! काम कब होगा ? अबकी नेवता खाने मैं जाऊँगी। काहे फुआ! खूनहोने पर कामक्रिया होती है कि, नहीं ? "

रेखा–" अरे अभी तो मरी भी नहीं सो तुम कामका भोज खानेकी तैयारी कर रही है। "

चमेली–" क्या अबतक मरी नहीं ? अरे सुनातो है कि, भाईने छूरी से मारडाला है फिर मरी नहीं कैसे ? "

रेखा–" छूरी तो मारा था लेकिन मरी नहीं बचगयीहै। "

च०–" तो क्या खूनकी बात सब झूठी है ? "

नहीं खून की बात झूठी नहीं है " एक रण्डी का खून किया है और आप भी छूरीमारकर मरगयाहै " इतना रेखासे सुनकर चमेली चौंककर बोली–"अरे! रण्डीको मारडाला, आप मरगया और बहन को नहीं मारसका ? "

रेखा चारों ओर देखकर बोली–"क्या करोगी बेटी यह सब हम लोगोंका नसीबन है।"

चमेली अपने नसीबपर कखने पटकने लगी थोडी देरबाद रेखा

बोली—"लेकिन सुनती हूँ बुखार आताहै उससे भी कुछ खातानागा होतो हो सकता है ?"

चमेली अपने कपारपर थप्परमारकर बोली—"अरे फुआजी ! हमारा नसीब इतना बड़ा कहाँ है ?"

रेखा—"देखो तुम्हारे नसीब में अब क्या क्या है ? रामप्रसाद तो जाते ही हैं वहां वह तुम्हारी बैरन सास और झुनिया हई है। हमको बड़ा डरलगता है। वहाँ तुम्हारी याद थोड़े रहेगी। धन दौलत देखकेही रामप्रसाद भूल जायगा।"

च०—"तो क्या उपाय है फुआजी ?"

रेखा०—"उपाय क्या बेटी ! मैं तो सचबात कहती हूँ, आजकल रामप्रसाद उसी ओर ढरा है। मैं तो तुम्हारे डरसे नहीं कहती थी।"

च०—"हाँ फुआजी ? यह तो मैं भी जानती हूँ लेकिन इसवक्त अब कोई उपायहै ?"

रेखा—"उपाय काहे नहीं है ! लेकिन बेटी अब तो तुम वही नहीं हो कि, हमारेही कहनेपर चलोगी नहीं तो अबतक कभी इसकी तदबीर कर चुकी होती।"

चमेली विनती करके बोली—"नहीं फूआजी ! घरके गड़बड़ से हमारा चित्त ठिकाने नहीं रहता। इसीसे कभी २ तुमको भी दो बात कह देती हूँ नहीं तो फुआजी ! सचपूँछो तो इस संसारमें तुम्हारे जैसा हमारा दूसरा कौन है ?"

अन्त की बात कहते २ चमेली की आँखें डबडबा आयीं। बहुरूपिणी रेखाने अपना शिर जालमें फँसाकर मोहिनी मूर्ति धारण की चमेली की डबडबायीं आँखें देख रेखा की आँखें भी छल छलाने लगीं। मानो स्नेह आँसू का रूपधरकर आँखोंमें दीखनेलगा। रेखा स्नेह में बोरे हुए मीठे सुरसे बोली—"हाँ बेटी तो क्या मैं बेफिकिर बैठीहूँ। बेटी आँसू पोंछडालो मैं जानती हूँ कि, तुम ठीक शरीरमें हमसे झगड़ा नहीं

करती मैं जब तुम्हारे वास्ते बेटी जी ! जानसे हाज़िर हूँ तब तुम कैसे नहीं हमको मानोगी ?"

चमेलीका स्वभाव चाहे कितनाही बुराहो लेकिन रेखाके आगे वह सदा पीठही दिखाती रहेगी। अबके चमेली रेखाका पाँवपकड़कर रोने और माफी माँगने लगी. रेखा अपने आँचरसे चमेलीका आँसू पोंछकर बोली-"अरे रोवोमत बेटी, रोवोमत ! मैं तुमको यह चीजदेती हूँ पानके साथ रामप्रसाद को खिलादेना। वह तुरंत तुम्हारे वश होजायगा। और बड़ीको जहरसा देखेगा । उसका धन दौलत सब देखकर भी नहीं भूलेगा। अब बेटी बिना दवाई खिलाये काम नहीं चलेगा।"

चमेलीने मानो डूबतेमें थाह पाया। फिर कुछ देरतक दोनों न जाने क्या सलाह करती रहीं. इतनेमें रामप्रसादने चमेलीको पुकारा। उस वक्त वह रामप्रसादके लिये अधीर हो रही थी । दौड़कर रामप्रसादके पास आयी। रेखाने चारों ओर ताक झौंककर एक भयङ्कर संहारकारिणी मूर्ति धरकर कहा-" अब हमारी मनकामना पूरी होगी।"

तीसवाँ अध्याय।

रेखाका मनोरथ पूरा होनेमें देर नहीं है। उसी दिन उसकी दी हुई चीज़ पानमें डालकर रामप्रसादको खिलाई गयी । रामप्रसादने पहली सुसराल गिरजाके मायके जानेकी बात कही। चमेलीने बहुतकुछ उज्रकिया लेकिन जब उज्र मुआज़रतसे कामहोते नहीं देखा तो चट चमेलीने स्वामी के हाथमें पानमें दवाडालकर देदी। रामप्रसाद पान खागये लेकिन उसमें कुछ दवा है यह उनको मालूम नहीं हुआ न किसी तरहका कुछ शक हुआ। पान खातेही खाते रामप्रसादके शरीरसे पसीना छूटने लगा। सारा अङ्ग शिथिल हो चला। त्रस्त होकर रामप्रसाद बिछौनेपर पड़गये। इसबार भी जो आदमी लेने आया था उसे रामप्रसादने शरीरकी

बीमारी बताकर बिदाकर दिया । और दवाका तत्क्षण गुण देखकर चमेली फूआको मनहीमन सराहने और धन्यवाद करनेलगी ।

सच मुच रामप्रसाद का शरीर बहुत ख़राब हुआ था लेकिन ऐसा क्यों हुआ सो रामप्रसाद कुछ न समझ सके । तीन चार घंटेतक सेजपर पड़े पड़े रामप्रसाद छटपटाते रहे । सिरमें बड़ी पीड़ा होनेलगी। दवाका इस तरह प्रत्यक्ष गुण देखकर चमेली मारे खुशीके घूमरही है । वह रामप्रसादकी कुछ ख़बर भी नहीं लेती । शामको जब हाथमें चिराग लेकर चमेली उस घरमें आयी तब रामप्रसादको अचेत दशामें देखा । उसकी लाल २ आँखें और इकटक निहारना देखकर चमेली पहले बहुत डरी । फिर जल्दी जल्दी पास आकर बोली—"तुम्हारी आँखें लाल क्योंहैं?"

रामप्रसाद चमेलीकी ओर इकटक निहारने लगे । चमेलीको कुछभी जबाब नहीं मिला चमेली रामप्रसाद का शरीर छूतेही चौंक उठी । सारा अङ्ग इतना जलता था कि, उसपर कुछ देरतक हाथ रखते नहीं बना । फिर चमेलीने कहा—" क्यों क्या बुखार आया है ? "

इस बार भी रामप्रसादने कुछ जबाब नहीं दिया । उसीतरह चुप-चाप चमेलीकी ओर देखते रहे । रामप्रसाद बात करना चाहते थे लेकिन उस वक्त बोलनेकी शक्ति नहीं थी । केवल सिर दिखा दिया, लेकिन सिरमें क्या पीड़ा थी सो कह नहीं सके. थोड़ी देरबाद सिरकी पीड़ासे इतने व्याकुल हुए कि, सेजपर पड़े भी नहीं रहसके रामप्रसाद दौड़कर घरसे बाहर आये । चमेली भी पीछे २ आयी । रामप्रसाद बीमार हैं यह बात अब चमेली समझ गयी है । लेकिन उस बीमारीका सबब उसकी वही वश करनेवाली दवा है यह बात अभी उसके मनमें नहीं आयी । रामप्रसादको बाहर भागते देख चमेलीने उसे जाकर पकड़ लिया । लेकिन वह इतना पागल होगये थे कि, चमेली उसे पकड़ नहीं सकी । उसे ठेल पेल कर रामप्रसाद भागगये । रातकी अँधेरी छागयी थी । चमेलीने फिर सँभलकर पकड़ना चाहा । लेकिन रामप्रसाद उस

अँधियारीमें न जाने कहाँ गायब होगये । अब चमेलीको रेखाकी दवापर शक हुआ । लेकिन उसवक्त रेखा उस घरमें नहींथी इसकारण कुछ पूँछ न सकी ।

अब रेखाका मनोरथ सफल होचुका वह इस घरमें क्यों ठहरने लगी थी ? रेखाको वहां न पाकर चमेलीका शक और बढ़ा । अब वह रामप्रसादके लिये बहुत घबराथी । रामप्रसादके मिज़ाज़ बदलनेसे अब घरमें कोई नौकर नौकरानी भी नहीं थी, जिसे उनको खोजनेके लिये चमेली भेजती. थोड़ीदेर बहुतकुछ सोच विचारकर चमेलीने एक पडोसीको बुलाया और इस कामका भार उसीको सौंपा । लेकिन दश बजे रातके आकर उसने जवाब दिया कि, रामप्रसाद का कुछ पता नहीं लगा । अब कोई उपाय न देखकर चमेलीने अपने मायके यह खबर भिजवाई । मायका पासही था उसी रातको उसका भाई तीन चार आदमियोंको साथ लेकर पहुँचा । और सारी रात रामप्रसाद को घर २ ढूँढते रहे । सवेरा होते २ रामप्रसाद मिले और उनको लेकर सब लोग घर आये ।

लेकिन यह रामप्रसाद क्या वही रामप्रसादथे ? जिस हालतमें चार आदमियोंने काँध चढ़ाकर रामप्रसाद को घर पहुँचाया उसे देखतेही चमेलीका जी सूख गया । उसके मनमें जो सन्देह हुआ था, उसपर विश्वास होगया तो क्या रामप्रसाद सचमुच पागल होगये ? उनका काम देखनेसेही यह सुगमतासे समझा जा सकता है । घरमें पहुँचतेही रामप्रसाद ठठाकर हँसे । वह हँसी रुक नहीं सकी. कल शामको जब शिरपीड़ासे व्याकुल होकर रासप्रसाद घरसे भागे थे तब उनको कुछ ज्ञानभी था, लेकिन अब वह भी नहीं है लोगोंने पहले रामप्रसादको स्नान करना चाहा चमेलीसे तेल माँगा तेल लाकर चमेली खड़ी हुई रामप्रसादने उसको इनाममें जोरसे एक लात मारा तेलकी कटोरी अलग जापड़ी । चमेलीभी सख्त चोट खाकर गिरगयी । सिरमें भी बडी चोट लगी ।

रेखाको वशीकरणने क्या यही फललाया ? चमेलीके पापका अब प्रायश्चित्त

शुरूअ हुआ? अब उसके शिरकी चोटसे हृदयमें अधिक चोटलगी इसवक्त चमेलीके चित्तकी दशा क्या है सो सहजही समझा जासकता है तौभी हमको उसे कहनेकी शक्ति नहींहै.कलकी घटनासेही रामप्रसादकी यहदशा हुई है यह बात चमेलीने अच्छी तरह से समझली है । लेकिन उस बात को किसीसे जाहिर नहीं करती । इससे अब चमेलीको और अधिक मानसिक दुःख क्या हो सकता है ? एक बात और है चमेलीको पूरा विश्वास था कि, रेखा की दवासे रामप्रसाद उसके हाथकी कठपुतली होकर रहेंगे । लेकिन जब उस दवाका यह गुण देखा कि, इतने आदमी-योंके सामने इतना जोरसे लात मारनेमें रामप्रसाद नहीं रुके तो अब उसके मनको इससे और अधिक दुःख क्या होगा ? जो सदासे पतिकी आदरिणी थी हजारों कसूरपर जिसे स्वामीने एक रूखी बात नहीं कही. उसे बिना अपराधके स्वामीका इसतरह जोरसे पदाघात कितना दुःख-दायी होगा, यह सहजही समझा जा सकताहै । लेकिन मनुष्य मात्रही कर्म फलके अधीन है । जो जैसा करेगा उसका वैसा फल उसे भोगनाही होगा । आज दिनोंके प्रतापसे चमेली ऐसी दशामेंपड़ी कि, स्वामी पदाघात भी चुपचाप सहना पड़ा । हम लोग चमेलीका स्वभाव अबतक जितना समझ चुके हैं उससे कहसकते हैं कि, अगर ऐसी घटना न होती तो वह इसतरहका पदाघात कभी सह नहीं सकती थी । अपमानका बदला लेसकनेसे उसकी गुरुता घट जाती है, किन्तु चमेलीके इस अपमान के बदलेका भी उपाय नहीं है । हमने चमेलीकी दशाका आभासमात्र दिया है । हमारे पाठक पाठिकाओंमें से कोई चमेलीके लिये दुःखी हो तो वह उसके पापकर्मोंका स्मरण करलें ।

इकतीसवाँ अध्याय ।

सचमुच रामप्रसाद पागल होगये हैं. गाँवके लोग इसका मनमाना कारण बतलाते हैं । कोई कहताहै--रामप्रसाद नौकरी छूटजानेसे पागल

होगया है । कोई कहता है–बापका धन दौलत खोजानेसे उसीके सोचमें पागलहुआ है । कोई तीसरा कहता है–ऐसी घरनी जिसके घरमें है वह पागल न होगा तो होगा कौन ? लेकिन पागल होनेकी सच्ची वजह किसी को मालूम नहीं, मालूम है तो उसी रेखा और चमेलीको। जब वह दोनों इसे छिपाना चाहती हैं तो असल कारण कैसे जाहिर हो ? इस घटनाके बाद रेखा अब रामप्रसादके घर नहीं आती । चमेलीके बहुत कुछ करने पर भी जब वह नहीं आती तब समझलिया कि, रेखाने ही उसका यह सब सत्यानाश किया है । चमेली रामप्रसादके रोगका कारण जानती है लेकिन किस उपायसे उनको आराम होगा इसके बारेमें रेखाके सिवाय वह और किसीसे सलाह करना नहीं चाहती । इस कारण रेखासे एकबार मिलना चमेलीको बहुत जरूर हुआ ।

एक दिन रातको चमेली चुपचाप रेखाके घर जा पहुँची । पहले तो रेखा चमेलीको देखकर डरी. फिर वह भाव छिपाकर आदरपूर्व्वक बैठनेके लिये कहा, कोपके मारे चमेलीका शरीर थर्राता था । ऐसी दशामें रेखाका आदर कहाँ अच्छा लगे. चमेली गरज कर बोली–"काहे रे ! हमने तेरा क्या बिगाडा था जो तूने मेरा ऐसा सर्वनाश किया."

चमेली रङ्ग ढङ्ग देख और सुर सुनकर रेखा बहुत डरी । लेकिन मनका भाव छिपाकर सुर फेरनेका अभ्यास रेखाको सदासेथाही चट रङ्गबदलकर बोली–" हाँ बेटी ! हाँ ! अब तो तू जो चाहे सो कह मुझे सभी सहना चाहिये । तेरा नसीबही देखकर मैं अचेतहोगयी हूँ । जबसे सुना तबसे मरी जाती हूँ । भला ऐसाभी किसीका नसीब देखा है । अच्छाकरने जाय तो बुरा होय । हे भगवान् ! इतना करकराके अब अन्तमें मुझको कलङ्किनी होनापडा !"

अन्तकी बात कहते २ रेखाकी आँखोंमें आँसू आया वह आगमें पानी पडनेके समान फल लाया । उसके आँसू देख चमेली कुछ ठण्ढी हुई । और बोली–" अच्छा और सब जाने दे अब क्या तदबीर है सो बता । "

इस बातका रेखा क्या जवाब देगी सो स्थिर न करसकी । थोडी देर चुप रहकर बोली--" क्या कहूँ बेटी मैं भी तो यही सोच रही हूं रात दिन इसी विचारमें हूं कि, क्या करूं । "

चमेलीका एक मात्र अवलम्ब यही रेखा है । किसी काममें एकदम निराश होनेसे आदमी नयी आशाकी सृष्टि करता है। चमेलीको भरोसा था कि जबरेखाकी दवासे रामप्रसाद पागल हुए हैं तब उसीकी दवासे अच्छे होंगे लेकिन उसके मुँहसे ऐसी बातें सुनकर चमेलीको बडी चोट लगी उसका विषन्न मुख देखकर रेखाबोली " बेटी ! तू इतना सोचती काहेको हो ? रामप्रसादका चित्त दवासे विगड़ा है कि, बहुत सोच फिकर करनेसे बिगडा है सो तो ठीक मालूम नहीं लेकिन वह ठण्डा होनेसेही आराम होजायँगे । बेटी ! तुम उनको ठण्ढा करो ठण्ढा । "

चमेली लंबी सांस लेकर बोली–" मैं उनको ठण्ढा क्या करूंगी । मुझे तो देखतेही वह जलकर खाक होजाते हैं । मार खाते २ तो मेरा शरीर नाहीं हो गया ! कोई चीज खानेको लेजाती हूं तो जहर खिलाकर मारने आयी कहके चिल्ला उठते हैं । हमारे हाथकी कोई चीज नहीं खाते । रात दिन जो मैं भोगरही हूं सो तुमसे क्या कहूँ"

अन्तकी बात कहते २ चमेली रो उठी । रेखा प्रबोध देकर बोली– "ना बेटी रोवो मत ! तेरी आँखमें आँसू देखनेसे मेरी छाती फटी जाती है बेटी रोवो मत ! "

अबकी रेखाभी रोने लगी । इस रोनेका और कुछ फल हो या न हो लेकिन चमेलीका जी पानी होगया । उसके जीमें रेखाकी ओरसे जो गुस्सा, हिंसा और दुःखकी आग भड़क रही थी सो सब बुझ गयी । फिर चमेली रेखाको अपनी हितकारिणी समझने लगी धन्य रेखा मिसराइन धन्य ! धन्य तुम ! धन्य तुम्हारी माया !

चमेली अब रेखाके गलेसे मिलकर जोरसे रोने लगी । बहुत देरतक दोनों गला जोड़कर रोती रहीं । रोनेसे दुःखकी ज्वाला कुछ घटती है ।

इस रोनेसे चमेलीको और कुछ लाभ हो या न हो किन्तु प्राणकी ज्वाला बहुत कुछ घटी। अब चमेलीके वह सुखके दिन नहीं हैं। स्वामीके सोहागसे सुहागिनी और संसारके आदरकी आदरिणी चमेली अब रास्तेकी भिखारिनी है। अब उसका जीवन सङ्कटमय है एक क्षणके लिये भी उसको सुख नहीं है। आज दुःख उसका देखकर उसके लिये भी बड़ा कष्ट होता है। हम लोगोंने उसके पापका अन्दाज़ तो नहीं किया लेकिन उसका प्रायश्चित्त देखकर सहृदय मात्रको करुणा आती है स्वामीके घर आनेपर जिस चमेलीके ऐश्वर्यकी सीमा नहीं थी, वही चमेली आज भोजन वस्त्रके लिये ललायी फिरती है। जो सास छोटी बहू करके मुँह सुखाती थी और जिसके अनुचित आदरसे चमेलीने इतना सत्यानाश किया आज वही सास उस आदरकी बहूका कुछ समाचार नहीं लेती। जो स्वामी वैसी पतिप्राणा गिरजाको भूलकर भी उसका दास गुलाम हो गया था आज उसी स्वामीके जुल्मसे चमेलीके प्राणपर सङ्कट हो रहा है। फिर और इससे अधिक प्रायश्चित्त क्या बाकी है? लेकिन अब भी बाकी है हम ज्योतिष नहीं जानते तौभी लक्षण देखकर कहते हैं कि, अब भी कुछ बाकी है अगर चमेलीका प्रायश्चित्त पुरा होगया होता तो रेखासे फिर मेलही क्यों होता।

बत्तीसवाँ अध्याय।

अब हम इस वक्त गिरजाकी बात कहेंगे जिस हालतमें हम उसको छोड़ आये हैं उसको याद करके हमारा चित्त गिरजाके वास्ते बहुतही व्याकुल हो रहा है यद्यपि रामधनकी छूरीसे गिरजाके प्राण नाश न होनेकी खबर हम पाचुके हैं तौभी उसका हाल क्या है जानना चाहिये अगर गिरजा के बचजानेकी खबर न मिली होती तो हम लोग इतनी देरतक निश्चिन्त न रहते।

रामधन जब गिरजाको मारने गयाथा तब उसकी जो हालतथी वह हम पहले कहचुके हैं बेगुनाह गिरजाको हत्या करने जाकर रामधनका पत्थर हृदय पसीज गया, यह कुछ आश्चर्यकी बात नहीं और गिरजाके पेटमें छूरी मारनेके लिये रामधनकी बलवान भुजायें तेजहीन होगई इस बातपर भी सहजही विश्वास किया जासकता है जो हो रामधनकी छूरीसे चोट खानेपर जब गिरजा चिल्लाउठी और आसपासके बहुतसे लोग चिल्लाहट सुनकर दौडे आये तब " किसने यह सत्यानाश किया है " बार २ ऐसा पूँछनेपरभी गिरजाने पुलीसवालोंके डरसे और भाईको बचानेके लिये मुँह से रामधनका नामतक न लिया लेकिन एक नौकरने रामधनको उस घरसे भागते हुए देखा था. इसलिये गिरजाके छिपाने परभी बात छिपी नहीं रही लेकिन उसवक्त वह बात पुलीसवालोंको मालूम नहो इस बातकी तदबीर करनेके लिये गिरजाने बहुत कोशिशकी और अपनी चोटका दर्द दिलहीमें सह २ के रहगयी. लेकिन जब दूसरे दिन सुन्दर-जानके मारे जाने और रामधनके आत्मघात करनेकी खबर शहर भरमें फैलगई तब यह सब मामिला रामधनके घरवालोंनेभी सुन लिया गिरजा और जमुना फूआ से रामधनके मरनेकी बात छिपाई गई और गिरजाकी ठीक तौरसे दवा होनेलगी दो तीन दिनमें गिरजाको बहुत आराम होगया तब यह खबर पहलेपहल जमुना फूआको पहुँची जमुनाने बात सुनतेही गिरजाके कानमें पहुँचाई गिरजा इस खबरको सुनकर बहुत व्याकुल हुई मानो सिरपर वज्र गिरपड़ा भाईकी छूरीसे घायल होनेपर गिरजाको उतना दुःख नहीं हुआ था जितना भाईके मरनेकी खबरसे हुआ. बहनके हृदयका ऐसा अतुलित प्रेम है कि, अपने हत्या करनेवाले भाईका मरना सुनकर गिरजाकी आँखोंसे आँसूकी नदी बहने लगी धन्य सती गिरजा ! तुम धन्य हो !

गिरजा अब कुछ आराम होचुकी है भाईका शोकभी बहुत कुछ घट-गयाहै यह घर ऐसीही विपत्तिके समय यह भयंकर खबर पहुँची गिरजा

के जीवनसर्वस्व स्वामी पागल होगयेहैं गिरजाका जैसा नसीब है उससे सब कुछ संभव होसकता है जो गिरजा दुःखसे दुर्बल हो सेजपर पड़ी रहती थी उसे स्वामीके पागल होनेकी बात सुनकर न जाने कहांसे बल आगया चटपट उठकर सासके पास पहुँची सासकोभी जब यह खबर मिली तो बहुत दुःखी हुई । हजार हो तो माका प्राणहै बेटेके अमङ्गलकी बात सुनकर कहां स्थिर रह सकतीहै सासको रोते देखकर गिरजाभी रो कर बोली "माजी! अब सब गुस्सा छोडकर हम लोगोंको चलना चाहिये" सासने आँसू पोंछकर कहा " तुम अभी बहुत कमजोर हो इसवक्त तुम्हें कैसे ले चलें तुम यहीं रहो मैं जाती हूं यहीं लाकर उसकी दवा करूंगी"

गिरजा—" नहीं ! मा" मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी अब मैं दुर्बल नहीं हूं अगर वह न आने दें तो मैं यहां कैसे रहूं ।

सास—यहां लाये बिना दवा नहीं होगी ।

गिरजा—वहांभी दवा हो जायगी इलाहाबादसे बडे २ वैद्य और कलकत्ते से कविराज बुलालूंगी रुपयेकी तो कमी है नहीं ।

सास—"मैं समझतीहूं रुपयेही की चिन्तामें उसको हौलदिल हो गया है ।

गिरजा—उनको रुपयेका क्या शोचहै यह सब रुपया तो उनहीका है इतनेमें झुनियां गर्जकर बोली " रुपयेके वास्तें उनकों होंने दिनं नहीं हुआहैं ई सब सर्वनाशीं रेंखां और नहुरींका काम हैं कोंई दवाई खिलानेंके बहानें कुछ खियांकें पांगन कन दियां होंगा " झुनियाँकी बात सुनकर गिरजा चौंक उठी और चकित होकर सास और झुनियाँकी तरफ बार २ देखने लगी सास बोली—"वह सब जो करे सो कठिन नहीं है अब ऐसा करना चाहिये जिससे बच्चेको आराम होजाय "

सीधी साधी गिरजाके मनमें इस बातपर विश्वास न हुआ वह बोली "इस वक्त उस बातको छोडो और जो कुछ लेना देना हो सो लेदो लो मैं गाडी मँगाती हूं अभी चलना होगा "।

झूना--निननिनाकर बोली--एक सिपाई और दो नौकर हम लोगोंको अपने सांथलेजाना चाहिये ।"

गिरजा--"सिपाही और नौकर लेजानेसे लोग समझेंगे कि, बड़वारगी दिखाने आई हैं उन सब बातों से कुछ काम नहीं हैं ।"

झूना--इस बार झझककर बोली--"हं हों हं मैं बड़वारगीं दिखाने के वास्ते करती हूं सिंपाहीं और नौकर बिना उनकी दवा कैसें होंगी ।"

एक नीच जाति की झूनियाकी ऐसी अक्ल देखकर गिरजा को बड़ा अचम्भा हुआ सचमुच उस करकसा झूनियां का स्वभाव अब बहुत कुछ बदल गयाहै लेकिन यह सब बदलना सिर्फ गिरजाके गुणसे हुआ है ।

एक घंटे में सब तैय्यारी होगई जाते समय सब घर और माल असबाब जमुना फूआ को सौंपने लगी लेकिन जमुना को रामधनका शोक अभी भूला नहीं था इसलिये कुछ भी अपने हाथ में नहीं लिया. अंतमें सबभार एक नौकर के ऊपर रखकर गिरजा सास और झुनिया के साथ चुनारसे रवाना हुई. तीनही चार घंटे में गिरजा सबको साथ लिये हुए सासरे पहुँची. स्टेशन से गाँव तक जाने में सबको उसकी आने की खबर होगई जो लोग रामप्रसाद के ससुरका बहुतसा धन छोड़के मरजाना जानते थे वह सब दलके दल देखनेको आने लगे "धन की अपारमहिमाहै " ।

इधर आकस्मात् गिरजा को देखकर चमेली बहुत चकराई चकराने का कारण और कुछ नहीं. उसको यह सब बातें असम्भव जान पडती थीं. लेकिन अबके सास को और सवतको देखकर चमेली बहुत खुश हुई. चमेली जो रोज दुःख सहती थी अब इनके आनेसे घटेगा इसी उम्मेद में वह सबकी खातिर करने लगी--सास और गिरजा की आँखों में भी आँसू आया तीनों गला मिलाकर रोने लगीं । पड़ोसियोंने भी रोनेमें योगदिया । उनमें से रेखा की रुदनमात्राही सबसे अधिक थी ।

सब तो देखने आये लेकिन् रामप्रसाद् कहाँ है ? रामप्रसाद् भी देखने आये हैं । आकर माको प्रणाम किया । मा उनका उदास मुँह और दुबला शरीर देखकर रोने लगीं । माता को रोते देख रामप्रसाद हँसने लगा । मा जितना रोती थी बेटा उतनाहीं हँसता था । वह हँसी देख आर भी एक आदमी रोताथा । लेकिन उसके रोनेपर किसीने जवाब नहीं दिया । हँसी का जवाब रोना और रोनेका जवाब हँसना जगत् का यह रहस्य कौन हम लोगों को बत लावेगा ?

तेतीसवाँ अध्याय ।

पहलेही रामप्रसाद् की दवा का बन्दोबस्त हुआ इन दिनों उनके घर नौकर की कमी नहीं हैं । गाँवके सब छोटे बड़ेने रामप्रसादकी बड़ी स्त्री गिरजाके धन दौलतकी बात सुनी थी । फिर अब रामप्रसादको आदमियोंकी क्या कमी होगी ? उपाध्या, तिवारी और दुबे, चौबे, लाला-सिंह सबसे रामप्रसाद का आज घर भरा हुआ है । सबने मानों रामप्र-सादके हितके लिये अपना प्राण दे रक्खा है । सबकी सल्लाहसे तीन वैद्य लगाये गये और तीनोंकी सल्लाहसे बड़ी सावधानीपूर्वक दवा होने लगी। खर्च आदिको भी कुछ कमी नहीं थी । कमी कैसे हो ? रामप्रसादके लिये गिरजा अपना सब कुछ दे देनेको तैयार है ।

फिर गिरजा चमेलीके सन्तोषको भी कुछ उठा नहीं रखती । राम-प्रसादकी दुरवस्थामें चमेलीका प्राण सब गहना नष्ट हो गया था । गिरजा जानती थी कि, वह अतिशय अलङ्कारप्रिय है । इसी कारण गिरजाने बापका दिया हुआ अपना सब गहना चमेलीको पहना दिया । वस्तुतः गिरजाके ऐसे व्यौहारसे चमेलीका द्वेष बहुत कुछ कम हुआ । किन्तु इन्हीं दिनों रेखाने उसको अकेलेमें बुलाकर कहा—“ अरे बेटी । तू अभी लड़की है यह सब खेड़ा तुम समझती नहीं हो । सब शरीरका गहना उतार करके दे दिया सो जानती हो काहे दिया है ?”

चमेली आग्रह करके बोली—" काहे फूआजी! काहे दिया है?"

रेखा—" तू अभी लड़की है गहना पानेहीसे खुशी होकर चुप चाप बैठ जायगी।"

चमेली—" तो फुआजी! गहना पहननेसे दोष क्या है?"

रेखा—" तू समझती तो है नहीं। इस वक्त तुझे गहना पहननेका मौका है भला तुझे गहना पहने देखकर दुनिया क्या कहेगी? यह तुम गहना नहीं पहनती, सारे देहमें निन्दा पहनती हो।"

चमेली—" हाँ फुआ! ठीक कहती हो। सच बात है। मैं फूआ! सीधी सादी मैं इतना तीन पाँच क्या जानूं?"

रेखा—" यही तो कहती हैं बेटी कि, तुम दो चार गहना पानेसेही फूल-कर सब भूल जाती हो। लेकिन भीतरही भीतर क्या हो रहा है सो तुमको ख़बर नहीं है।"

चमेली—" मैं क्या जानूँ फुआ कि, इसके भीतर इतना पेंच घुसा है?"

रेखा—" और कुछ बेटी चाहे समझो या न समझो लेकिन हमारी यह बात गाँठमें रक्खो कि, सौत कभी अपनी नहीं हो सकती। वह कुछ भलाई भी करे तो उसे बुराई ही समझियो।"

चमेलीके मनमें रेखा की सब बातें फिर दृढ़रूप से बैठगयीं। जब ऐसी मंत्र देनेवाली मौजूद हैं तब गिरजा चाहे जितनी कोशिश करो सौतका द्वेष कहाँ दूरहोसकताहै? रामप्रसाद की मा रेखाको खूब पहँचान चुकी थीं। फिर घरमें रेखाको देखकर बहुत नाराज थीं रेखा भी रामप्र-साद की माकी यह नाराजी समझती थी, लेकिन बाहर कोई जाहिर नहीं करसकती थी।

रामप्रसाद की मा मुँहपर रेखा को कुछ नहीं कहसकती थीं इसी कारण झुनियासे उसे अपने यहां आनेको मना करना विचारा. झुनिया भी मना करनेको तैयार थी। लेकिन गिरजाने जब हाल सुना तब सासका चरन

धरकर विनती करके कहने लगी। "माजी! आजकल हमारा दिन खराब है किसीको नाराज करना अच्छा नहीं है।"

गिरजाने अपने गुणोंसे सासको बहुत प्रसन्न करलिया था। और सास भी गिरजा को बहुत कुछ मानती थीं। इसीकारण गिरजाके अनुरोधसे रेखाका रामप्रसादके घर, आना जाना नहीं रोकागया। लेकिन यह बात झुनिया को बहुत बुरी लगी। घरमें कुछ और अधिकार दखल न रहते भी रेखाका आना जाना पहलेहीकी तरह बना रहा।

रामप्रसादकी एक दिनकी बात सुनने लायकहै। इन दिनों अब वह सदा पागलही नहीं रहते। कभी २ ऐसी बातें वह कहते हैं कि, उन्हें पागल समझने का साहस नहीं होता। रामप्रसादमें पागलपनेकी दोही बाते हैं एक तो खूब हँसना दूसरे सब आहारी पदार्थोंमें विषका सन्देह भाव। कभी किसीसे बात करनेकी इच्छा नहीं है। सदा निर्जन स्थानमें बैठकर न जाने क्या सोचते रहतेहैं। इन दिनों कोई उन्हें कुछ कहे तो वह नाराज हो उठते हैं। वैद्योंने कहाहै कि, रोग जरूर आराम हो जायगा लेकिन कितने दिनमें आराम होगा सो ठीक नहीं बतलाया है।

सबेरे वैद्योंका दिया हुआ तेल तीन चार घंटे तक चार नौकर मिलकर रामप्रसाद के सारे शरीर में लगाते हैं। एक दिन रामप्रसाद के मनमें आया कि, अब नौकरों के हाथसे तेल नहीं लगवावेंगे बात अभी अन्तःपुर हीमें थी। माताने चमेलीकोही बेटेकी प्यारी स्त्री समझकर तेल लगानेके लिये कहा "डरती डरती चमेली तेल लगाने आयी। रामप्रसादने पहले कुछ नहीं कहा चमेलीनेभी साहस करके तेल लगाना शुरूअ किया रामप्रसाद कुछ देरतक चमेलीकी ओर स्थिर दृष्टिसे देखते रहे।

फिर लाल लाल आँख करके बोले—" काहेरे अब जहर मलरही है। जहर खिलाकर मनसा पूरी नहीं हुई अब जहर बदनमें मलने आयी है?

चमेली इतनी बात कहाँ सह सकतीहै। ऐसी आदरकी स्त्री चमेली

इतने आदमियोंके सामने विशेषकर सौतके सामने पतिके मुँहसे ऐसी बात सुनकर बहुत बिगड़ी और रामप्रसादको कुवाक्य कहा । चमेली की बात सुनकर रामप्रसाद को इतना कोप हुआ कि,मारे गुस्सेके थर थर काँपने लगे। और चमेलीका झोंटा पकड़के घसीट २ इतना मारा कि, बेदम करदिया । तीन चार आदमियोंने बडी कठिनाईसे छुड़ाकर चमेलीको अलग किया। मा तेल लगाने चली। तब रामप्रसादने मना करके कहा—" काहे मा ! क्या कोई दूसरा तेल लगानेवाला नहीं है कि, तू तेल लगाने आतीहै ? "

रामप्रसाद का गुस्सा अभी गया नहीं था । ऐसी दशा में गिरजाके सिवाय किसको तेल लगाने जाने की हिम्मत होगी ? गिरजा डरके मारे बहुधा स्वामीके आगे नहीं जातीथी लेकिन इस समय उससे नहीं रहा गया। तेल लेकर धीरे २ मलने लगी । गिरजाको देखकर रामप्रसादने कुछ नहीं कहा। चुप चाप बैठे २ दो तीन घंटे तक तेल लगवाते रहे। बहुतसे लोग यह घटना देखरहेथे । उनमें रेखाभी खड़ी थी । शान्तभावसे अब तेल लगवाते देखकर रेखा चमेली के पास दौड़ी हुई गयी । चमेली अपने आँसूसे छाती भिगोरहीथी । रेखाने उसे खुदका कर कहा—" अरे ! छोटी ! उठ उठ ! जल्दी उठ ! एक मज़ेकी बात देख लो ! "

चमेली चोटके मारे उस वक्तभी दुःखी थी। इस कारण रोती हुई बोली " मैं अपनीही विपत्तिसे मरती हूँ मज़ा क्या देखूँगी ? "

रेखा—" इस मज़ाके देखनेसे तू मरजायगी तोभी अफ़सोसकी बात नहीं है। "

अब भला चमेली कहाँ पडी रह सकती है ? चट उठ बैठी और आँसू पोंछकर बोली—" क्या दिखाती हो ? "

रेखा लम्बी साँस लेकर बोली—"कहीं जाना नहीं होगा इसी घरमें बैठे २ इसी सामनेके जंगलेमेंसे देखलो। "

चमेली ताबरतोड़ उसी बंगलेके पास जा खड़ी हुई । लेकिन कुछ देर तक खड़ी न रह सकी । चमेली क्या स्वप्न देखती है ? या सच है ? पहले उसने स्वप्नही समझा । लेकिन जहाँसे मारखाकर आयीहै वहाँ सब लोग अभी न्योंकि त्यों खडेहैं जो बैठेथे वह बैठे हैं। या भगवान् ! ऐसी घटना दिखानेके पहले तुमने चमेलीको अन्धा क्यों नहीं करदिया । वह क्या रामप्रसाद हैं और वह गिरजा ? चमेलीको तो विश्वासही नहीं होता रेखाका काम इतनेहीसे होगया।

और एक दिनकी बात सुनो ; रामप्रसाद भोजनको बैठे हैं । सामने मा बैठी भोजन करारही हैं । इतनेमें एक ग्लास पानीकी जरूरत पड़ी माको पुकारकर पानी मांगा । पासही चमेली खड़ी थी । चटपट ग्लासमें पानी लायी । और रामप्रसादके आगे रक्खा । रामप्रसादने उसे देखते ही जहर जहर करके ग्लास उठाया और चमेलीके शिरपर खींचकर मारा । चमेली चक्कर खाकर वहीं गिरपडी । गिरजाने दूसरे ग्लासमें पानी लादिया । रामप्रसाद उसे पीकर शान्त हुए । चमेलीने पड़े २ वह दृश्यभी अपनी आँखोंसे देखा। अब यहाँ चमेली दो चोटमें पडी है । एक तो सिरकी चोट दूसरी हृदयकी चोट. पाठक ! आप विचारलें कौनसी चोट अधिक है ?

चौंतीसवाँ अध्याय ।

उसी दिन शामको चमेलीने अकेले में रेखाको पुकारा और रो रोकर बोली–" अब तो सहा नहीं जाता फुआजी ! इसकी कोई तदबीर करो । नहीं मैं जहर खाकर मरजाऊँगी । "

चमेलीकी ऐसी बात सुनकर रेखियाकी आँखें कबतक सुखी रह सकती हैं वह मनहीमन हँसी, फिर बाहरसे रोकर बोली–" हां बेटी हां ! तुम्हें तो बडा दुःख है यह दुःख सहनेका नहीं है मसल कहते हैं कि, भात

बाँटा जाता है, लेकिन भतार नहीं बाँटा जाता । तेरा दुःख देखके बेटी हमारी छाती फटीजाती है ! "

इतना कहकर रेखा बडी व्याकुलता दिखाने लगी चमेली फिर रोकर बोली—" फुआजी ! हमको माहुर लादो खाकर मरजायँ । "

रेखाने चमेलीका आँसू पोंछकर कहा—" अब मत रो बेटी अब मत रो ! माहुर खाके तेरा बैरी मरे तू काहे को मरेगी ? ऐसा सोनेसा लड़का इसको सौतके हाथमें सौंपकर तू मरजायगी ? "

चमेली लम्बी साँस लेकर बोली—" अब सहा नहीं जाता । "

रेखाने भी चारों ओर देखा और दाँतपर दाँत पीसकर बोली " माहुर खाके मरनेसे बेटी ! माहुर खिलाकर बेखटके होना अच्छा है । "

क्याही भयङ्कर बात है ? कैसी भयावनी सल्लाह ? चमेली रेखाके मुँह की ओर देखकर सिहर उठी ।

रेखाने फिर मोहिनी मूर्तिधरकर कहा—" देखती क्याहै बेटी बैरीके मारने से पाप नहीं होता ! वैद्य लोग कहतेहैं इसही पन्द्रह दिनमें रामप्रसादको आराम हो जायगा । ऐसेही अवसरपर बैरी मारनेसे तेरा दुःख दूर हो सकताहै । "

चमेली की छाती धडक रहीथी तोभी उसके मुँहसे यह बात एकदम निकल पडी—" मैं माहुर पाऊँगी कहाँ । "

इस दुःखके समय भी रेखाके मनकी हँसी बाहर होपड़ी । रेखा उस हँसीको रोककर बोली—" इसके वास्ते तू फिकिर काहेको करती है ? मेरे घरमें माहुर रक्खा है । मैं लाये देती हूँ । "

इतना कहकर रेखा एकसाँस दौड़कर घर चली । चमेलीके मुँहसे जबाब भी नहीं पाया था कि, आधे घंटे बाद हाँफती हुई रेखा फिर पहुँची पहुँचतेही एक डिबिया चमेलीके हाथमें देकर बोली—" ले बेटी ! इसी डिबियामें जहर है । दूधके साथ खिलादेनेसे काम बन जायगा । आजही

रातको खिला देते अच्छा होगा। तूही तो सबको दूध बाँटती है आजही दूधमें डालकर दे देना।"

जब चारों ओर ताकझाँक कर रेखा चमेलीके कानमें यह बातें कह-रही थी तब न जाने क्यों चमेलीके जीमें धड़क न पड़ी थी। चमेलीके मुँहसे बात नहीं निकलती थी। थोड़ी देर बाद बोली—"फूआजी! हमको बहुत डर लगता है।"

रेखा मनमें बहुत नाराज़ हुई, लेकिन वह नाराज़ी छिपाकर बोली—"नहीं बेटी! डरनेसे काम नहीं चलेगा। यही एक काम कर दो फिर जिन्दगी भर सुख भोगो कुछ बहुत देरका काम नहीं है।"

अहा! रेखाकी बातें क्याही मीठी हैं, लेकिन इन मीठी बातोंसे भी चमेलीका कलेजा तक सूखा जाता है। मुँहसे बात नहीं निकलती। बड़े दुःखसे चमेलीने इतना कहा—"फूआजी! हमसे तो यह नहीं बनेगा?"

फूआकी आशापर पत्थर पड़ा घबराकर बोली "अच्छा तो हमारे आगे तू दूध बाँटके बड़ीका कटोरा बतादे मैं आप करलूँगी।"

रेखा जरूर कुछ जादू जानती है नहीं तो उसकी बातोंमें पड़कर वह दूधका भाग लगाने क्यों जाती? हररोज़ जैसे अपने लड़केके लिये बड़े कटोरेमें दूध रखकर बाकीमें सबका भाग लगाती थी आज भी वैसाही किया। और रेखाको गिरजाका कटोरा बतादिया।

रेखाने चारों ओर झाँककर गिरजाकी कटोरीमें डिबियाका ज़हर मिला दिया इतनेमें झुनियाने आकर कहा—"बहूजी! बड़ी बहूको दूध दो और रसोई घरमें तनक चलो।"

यहाँ चमेलीके मुँहसे बात नहीं निकली। रेखाकी बातसेही वह डर गयी थी। अब वह थर थराने लगी। लेकिन रेखाका मुँह बन्द नहीं था। चट जहर मिला हुआ दूध झूनाको दिखा दिया। झूनाने दूध लाकर गिरजाकी थालीके पास रक्खा। झूनाको उस वख्त कछ शक नहीं हुआ,

क्योंकि उसका ख़याल केवल इसी बातपर था कि, दूध कम तो नहीं है । उस वक्त भी गिरजाके खानेमें देर थी इस कारण दूधकी कटोरी उसकी थालीके पासही रही ! इतनेमें रोते हुए नातीको गोदमें लिये हुए रामप्रसाद की मा वहीं आपहुँची उसका रोना सुनकर गिरजा बोली– माजी ! "हमारे दूधमें से बच्चाको खवादो मैं उतना दूध नहीं खाऊँगी ।"

रामप्रसाद की माभी रोते हुए नातीको चुपकराने के लिये उसी दूधमें से खिलाने लगी । एक दो तीन चार करके छः घोट दूध पिलादिया गया । लेकिन तौ भी लड़के का रोना नहीं रुका । आजी सोचने लगी कि, क्या लड़के को भूख नहीं है ! थोड़ी ही देर में लड़के का रोना तो थम्ह गया लेकिन साथही यह क्या सर्वनाश हुआ उसकी दोनों आँखे कपारपर क्यों चढ़गयीं ! आजी अकचकाकर बोली "ए बड़ी ! अरे यह क्या हुआ ! दू खिलातेही बच्चा ऐसा काहे करता है ?"

सुनकर गिरजा वहाँ आयी । लड़केकी दशा देखतेही चिल्ला उठी चिल्लाना सुनकर घरके और लोग भी दौड़े आये । चमेली भी आयी लड़केकी हालतदेखी । उसी दूधमेंसे लड़के का दूध खाना सुनकर बाकी दूध झट उठाकर पीगयी। पीनेके साथही जमीनमें गिरपड़ी लेकिन उसवक्त सब लड़के में लगे थे किसीने इधर खयाल नहीं . केवल रेखानेही बचा हुआ दूध चमेलीको पीते देखाथा । रेखाकी गति खराब देखकर वहाँसे सरकी और एकही साँसमें घर पहुँची । चमेली वहीं पड़ीरही ।

घरमें हड़कम्प मचगया । कोई डॉक्टर बुलाने गया कोई वैद्यको दौड़ा कोई और लोगोंको बुलानेलगा । रामप्रसाद की मा रोते २ आकाश फाड़- लगी । और "झुनियाके मनमें ऐसाथा" कहकर उसे गाली देने लगीं । झुनियाके मुँहसे बात नहीं निकलती । उसने दो एक थप्पड़तक खाये हैं । तो भी उसने कुछ नहीं कहा । गिरजाने इस वक्त बड़ी बुद्धिमानीका

काम किया बच्चे को पानीमें नमक खिला दिया । इसीकारण डॉक्टरके आनेसे पहलेही बच्चेको कय होने लगी । डॉक्टरने आकर देखा और कहा "कुछ डर नहीं है । "

इतने में डॉक्टरने बचा हुआ दूध देखनेकी इच्छा जाहिर की । तब सब की नज़र उस कटोरेकी ओर गयी लेकिन कटोरा तो उसवक्त खाली था । न जाने कौन सब चाट गया । अब सब की आँख चमेलीपर पड़ी डॉक्टरने चमेलीकी हालत देखकर कहा—"अरे ! यह क्या ? इसनेभी ज़हर खाया है ! "

अब वह बचा हुआ दूध कहाँ गया सो सब की समझ में आगया । बेटेका अमङ्गल जान उसका अमङ्गल होनेके पहलेही माने भी जहर खालिया है । पुत्रस्नेह का ऐसा उज्वल दृष्टान्त अपनी आँखोंसे देखकर सबके आँसू आगये । पहले लड़केही को दवा खिलायी गयी । उससे लड़केको बहुत लाभ हुआ । इतनेमें माको भी दवा आपहुँची । डॉक्टर उसे भी खिलाने चले तब चमेली बोली "मैं दवा नहीं खाऊँगी जिसतरह बने हमारे बच्चेको दवा देकर बचावो मैंने जैसा कामकिया उसका ठीक २ फल भी पाया है । "

चमेलीकी बात सुनकर सब एक दूसरेका मुँह निहारनेलगे । किसीके कुछ कहते नहीं बना. इतनेमें रामप्रसादकी माने कहा—" तो क्या तू बडीके दूधमें जहर देकर उसे मारना चाहतीथी । "

इतना सुनकर सब विस्मित हुए । चमेली फिर कहने लगी—" मैं तो नहीं । मैं तो जहर खाकर मरना चाहतीथी सो रेखा फुआने मेरी सौतको मारडालनेके वास्ते उनके दूधमें जहर मिला दिया इसीसे यह सब सर्वनाश हुआ है । इसीने हमारे स्वामीकोभी दवा खिलाकर पागल किया था । "

सबलोग चमेलीकी बात सुनकर अवाक् होगये । उसवक्त रेखाकी खोज

होनेलगी चारों ओर आदमी छूटे लेकिन कहीं उसका पता नहीं मिला। झूना उस रातको रेखाके घरतक गयीथी। डॉक्टरने कहा—"खैर लड़केकी कोई चिन्ता नहीं वह तो अब जानो आराम होगया। लेकिन तुम दवा खाव नहीं तो हमलोग तुम्हें बचानहीं सकेंगे।"

इतना कहकर डॉक्टरने जबरदस्ती करके दवा खिलादी। लेकिन रोगी बारबार बेहोश होने लगा तब डॉक्टर बाबूने एकआदमीको लक्ष्य करके कहा—"बाबू साहेब! आप तहसीलदार साहबको बुलालीजिये मरीज़की हालत अच्छी नहीं है। मरनेके वक्त का इजहार "dying declaration." लिख लेना ठीकहै।

रोगीकी दशा ऐसीहीथी कि, फिर बात दुहराही नहीं गयी आदमी भेजा गया तहसीलदार साहब आये। और बडी कठिनतासे इजहार लिखलिया गया। इसके बाद चमेलीने गिरजाको बुलाकर माफी माँगी। और अपने बच्चेको उसकी गोदमें देकर रोती हुई जन्मभरके लिये बिदा हुई। एकबार रामप्रसाद को भी देखनेका इरादा किया। लेकिन जब रामप्रसाद उसके आगे आकर खड़े हुए तब चमेली जीतीथी या नहीं सो कोई पहँचान नहीं सका।

पैंतीसवाँ अध्याय।

गाँवमें तहलका पड़गया। पुलीसके छोटे और बडे हुजूर रामप्रसादके घर पहुँच गये। लालपगडीवालोंसे घर घिरगया। पहले थाने वालोंने रेखाको गिरफ्तार किया पुलीसवाले इतनी सुगमतासे रेखाको नहीं पकड़ पाते अगर उसी रातको झूना उसके घर न पहुँचती। झुनियाने रातको रेखाके घर जाकर देखा तो आधी रातको भी चिराग जल रहा था। इतनी रातको चिराग जलाकर वह क्या कररहीहै! झुनियाने जँगलेके पास जाकर देखा। जो कुछ अच्छी और मूल्यवान् चीजे हैं उन्हें एक

गठरीमें बाँधकर रखरही है । वह भागनेकी फिकरमें है, यह बात जानना झुनियाको बाक़ी नहीं रहा । उस वक्त झुनियाने बड़ी चालाकी की, धीरेसें दरवाज़ेकी साँकल बन्द करदी । ऊपरसे ताला भी लगा दिया था ।

अब जङ्गलेके पास मुँह करके बोली–" अरे काहे हो ? इतनी रातको चिराग जलाके क्या कर रही हो ?

झुनियाकी आवाज़ सुनकर रेखा चौंक उठी । पहले बहुत डरी फिर माया छिपाकर बोली–" का करूं बेटी दाँतकी व्यथा से बहुत दुःखी हूँ । कहीं गूलरका दूध नहीं मिलता इसीसे बैठी २ दवा लगा रही हूँ "

रेखाकी बात सुनकर झुनिया हँसपड़ी । उसका वह यंत्रणा सूचक स्वर सुनकर कोई बिना हँसे नहीं रहेगा । झुनियाँ हँसकर बोली–" और वह गंठरीं काहेकें बन्हातां ? "

रेखाने मलीन बदन होकर कहा–" इसी गठरीमें तो बेटी दवा रक्खी थी । "

झुनिया फिर हँसकर बोली–" अंच्छां तों बैठीं २ दवाई लगावों पुंआं! में घरं जांतीं हूँ । "

झुनियाका हँसना रेखाको अच्छा नहीं लगा तो भी विषन्न मुँह एक बार प्रसन्न करके बोली–" बेटी इतनी रातको कहाँ आयी थी ? "

खिल खिलाकर झुनिया हँसपड़ी और बोली " जों मनमें सोंचकर आई थीं फुंआजीं ! सों कांम होंगें आं । अंब जांतीं हूँ । "

रेखाने फिर पूँछा–" क्या सोचकर आयी थी ? "

झुनिया अब नहीं हँसती । हुँकड़कर बोली–" कांम ? यहीं थां तेरा संराध कंरना । "

रेखाका प्राण उड़गया लेकिन फिर सँभलकर बोली–" काहे ? मैंने क्या किया है ? "

झूना अबके गरजकर बोली–" अरे तूने ज़हर खवाके आदमीको मार डाला है । सीधे सादे आदमीको दवाई खिलाकर पागल किया है। अभी करनेको बाक़ीही है ? "

रेखाने रास्ता नहीं छोड़ा फिर करुणास्वरसे बोली–" परमेश्वर जानता है मैं एकमें भी दोसी नहीं हूँ । "

झुनियाँ फिर गरजी । " अरे तू भगवानका नाम किस मुँहसे लेती है । तेरे ऐसी कुकर्मी दुनियामें कौन होगी । जिसका खाती है उसीका सर्वनाश करती है । तेरी ही कुमंत्रणासे तो हमारे मालिक का घर मिट्टी हुआ है ? "

थोड़ी देरतक रेखा जाने क्या सोचती रही । अबतक उसने समझा नहीं था कि, दरवाज़े पर ताला बन्द है । न जाने एक व एक उसके मन में क्या आया ? चिल्लाकर बोली–" अरे विपत मारी ! इतनी रातको तू हमसे झगड़ा करने आयी है रे ! दूर हो हमारे दरवाजेसे नहीं अभी झाडू मारके सब जहर उतार दूँगी ।"

रेखाने अब अपना रूप प्रगट किया है । लेकिन झुनिया डरनेवाली नहीं है । वह मीठी भाषामें भूत झाड़नेका जोगाड़करने लगी । कोपके मारे काँपती हुई रेखा बाहर होनेको चली । देखा तो दरवाजा बाहर से बन्द था । अब रेखा को होश आया । मारे डरके जीव सूख गया । अपनेको विकट जालमें फँसा देख झूनियासे विनती करके कहने लगी–"जान दे बेटी जान दे ! मेरा मुँह जरे ! न जाने कैसी जीभ है बेकाम गुस्सेमें आके तुम्हें कितनी बातें कह गयी । बेटी अब माफकर । दरवाजा खोलकर भीतर आ । इतनी रातको कहाँ जायगी ? बेटी यहीं आके सो रह ?"

झुनिया जब कोपमें आयी है तब भला वह जल्द कहा ठण्ढा होने वाली है । उसीतरह दाँत पीसकर बोली–"मैं काहे को दरवाजा खोलूँ थानेवाले आके दरवाजा खोलेंगे । आज तूने बड़ा ढङ्गकिया था मेरे

हाथमें हथकड़ी डलवाना चाहतीथी । दूधमें जहर देकर हमारेही हाथसे बड़ी को खिलाकर मारनेका मतलब था ! काहे ? सो अब चमेली ने सब बात जाहिरकर दी है । अब जा । फाँसीके काठपर लटक । बड़ी २ बातें मारती फिरती थी और इतना करके भीतरही भीतर सबको हैरान करती थी । अब भी देखो बदमाशी की बात नहीं भूलती, कहती है दरवाजा खोलकर बाहरआ । हम दरवाजा खोलकर बाहर आवें और यह धोखादेकर भागजाय कि, सब बोझा हम पर पड़े ।।"

यह कहकर झूनिया वहाँसे चली गयी । रेखा अब निराश हो गयी । उसकी सब चालाकी भूलगयी । कठघरे में बन्द बाघिनकी तरह घरही में इधर उधर छटपटाने लगी । अब उसके भागने की तदबीर नहीं है रेखा अपना शिर अपने हाथसे पीटती है ।

रेखाने लात मारकर दरवाजा तोड़ना चाहा लेकिन तोड़ न सकी । जङ्गला पकड़कर खींचना चाहा वह भी नहीं बना । अब कोई उपाय बाकी नहीं रहा. थोड़ीही देरमें पुलीसवाले पकडलेंगे इस चिन्तासे वह मरीजाने लगी । अब के रेखा चिल्ला उठी ।

इस सूनसान रातमें रेखाका वह बिकट गर्जन वह बिकट चीत्कार बड़ाही भयङ्कर था । लेकिन इस अवस्थामें वह बहुत देरतक न रहसकी. इतने में पुलीसवालोंने आकर दरवाजा खोला और रेखाको पकड़ा । उसकी हालत देखकर सबने उसके अपराधकी गम्भीरता समझली । सबेरे जब पुलीसवालोंसे पकड़ी जाकर रेखा गाँवसे होकर थानेमें जारहीथी सब गाँवके छोटे बडे बूढे जवान मर्द औरत सब उसको धिक्कारने लगे । अबतक रेखा से सब डरते थे। कोई उसको एक बात कहनेका साहस नहीं करता था। लेकिन आज अब उसे कोई नहीं डरता । रेखा विषदन्तहीन साँपकी तरह फुफुआती जारही थी ॥

पुलीसने मुकद्दमेकी चालान इलाहाबादको करदी । रामप्रसाद अबतक

अच्छीतरह आराम नहीं हुए थे। इस कारण पडोसियोंकी पैरवी होने लगी सरकार मुद्दई हुई । रामप्रसादका लड़का आराम होगया, इस कारण खून करनेके उद्योगका अपराध लगाकर मुकद्दमेका विचार होने लगा। गवाहोंके इजहारपर मुकद्दमा सेशन में गया । बयानसे रेखा का अपराध साबित हुआ । जजने जिन्दगी भरको कालेपानीकी आज्ञादी. इस पिशाचिनीका मुकद्दमा देखनेके लिये हर पेशीको कचहरीमें भीड लगी रहती थी। हम लोगभी आज रेखाको पहँचान नहीं सके । मुकद्दमें के विचारके समय उसको दो महीने तक हाजत् में रहना पड़ा था । इससे उसका चेहरा बहुत कुछ बदल गया था । ब्राह्मणकन्या रेखाकी हाजतूहीमें मृत्यु क्यों न होगयी ? लेकिन हो कैसे ? अभी उसके पापका प्रायश्चित्त थोडे पूरा हुआहै ! उसका अवशेष जीवन कैदमें काटे बिना धर्म-पथभ्रष्ट होगा। और उसको दूसरे जन्ममें क्या होगा ? अनन्त नरक।

छत्तीसवाँ अध्याय।

रामप्रसाद अब अच्छीतरह आराम होचुके हैं । लेकिन और तेलका अबतक वैसेही व्यौहार होता जाता है । वैद्य लोग कहते हैं कि, अभी एकवर्ष तक उन्हें इसी नियमसे रहना चाहिये ! चमेलीकी अकाल मृत्यु के साथ रामप्रसादकी आरोग्यता का कुछ सम्बन्ध है या नहीं सो हम नहीं जानते । लेकिन चमेलीके मरते समय जब रामप्रसाद उसके पास आकर खडे हुए थे तभीसे उनका चित्त ठिकाने होने लगा था । कुछ देर तक खड़े रहकर रामप्रसाद चमेली का मृत शरीर देखते रहे और मरने की कथा उसकी आदिसे अन्त तक सुनी फिर धीरे धीरे वहांसे बाहर आये ।

बाहर आकर रामप्रसादने पुलीसवालोंसे जो जो बातें की वह सुनकर सब लोग अचम्भित हुए थानेके दारोगाने जब पूँछा-" आपकी छोटी स्त्री

जहर खाकर मरनेका समाचार आप कुछ जानते हैं ?" तब रामप्रसादने उसीवक्त कहा–"दूध में जहर देकर हमारी बडी स्त्रीको मारडालने के लिये रेखाने तदबीर की थी लेकिन संयोगकी बातहै कि, वह उसे नहीं खासकी छोटीके लडकेने उसमें से थोड़ासा खाया और अचेतहो पड़ा। इस दूधमें जहर डालनेकी बात हमारी छोटी स्त्रीके सिवाय और किसी को मालूम नथी. जब छोटीस्त्रीने वहाँ जाकर सब हाल सुना और लड़केके बचनेका भरोसा नहीं देखा तब बचाहुआ दूध आपभी पीगयी लड़का डॉक्टर की दवासे बचगया। वह उसी जहरसे मरगयी। जो दूसरेकी बुराई करताहै उसकी बुराई पहले होतीहै। किसीने कहा भी तो है। "खाड़ खनै जो औरको ताको कूप तैयार।"

रामप्रसाद को पागलपनमें भी कभी कभी होश आजाताथा। लेकिन इस घटनाके बाद वह पुलीसके सामने इतनी बातें कहसकेंगे यह किसी को भरोसा नहीं था। इस समय थानेदार साहबने कहा कि" इस लाशको हम चालान करेंगे। बिना डॉक्टरकी जाँच हुए आपलोग इसका सत्कार नहीं करने पावेंगे।"

रामप्रसाद–" आप इस लाशको लेकर जो चाहें करें हमको कुछ उज्र नहीं है।"

लेकिन गाँवके लोगोंने लाशकी चालान नहीं होनेदी। जरूर इसके लिये पुलीस को खुश करना पडा था। लाश जलानेका हुक्म होने पीछे और लोगोंके साथ रामप्रसादभी श्मशानमें गयेथे। वहाँ खुद उन्हींके हाथसे दाहकर्म हुआ लेकिन कोई पागलपन का चिह्न नहीं देखा गया।"

दाह कर्म समाप्त हुआ। सबके साथ रामप्रसाद घर आये। आनेपर एक पडोसीने रामप्रसाद को समझाना शुरूअ किया–" नसीब में जिसके जो होता है उसको वह भोगनाही पडता है। तुम इसके वास्ते कुछ सोच मत करना"।

रामप्रसाद मुसकुराकर बोले–" मैं उसके लिये कुछ नहीं सोचता। अब अपने बारेमें सोचता हूँ । मैं किस गुणसे भूला था यही मुझे सोचहै किसकारणसे घरकी लक्ष्मीको लात मारकर मैंने आजतक पिशाचिनी की पूजा की यही विचारता हूँ । "

जब रामप्रसाद को अपने बारेमें इतना सोचने विचारनेकी चिन्ता हुई तब सबने समझ लिया कि, रामप्रसाद अब आराम होगये । इसीलिे हमने कहाथा कि, चमेलीकी अकालमृत्युके साथ रामप्रसादके आराम होनेका कुछ सम्बन्धहै या नहीं.जो हो लेकिन उसकी दूसरी रातको गिरजा और रामप्रसादसे जो बातें हुई थीं सो सुनिये ।

रामप्रसादने पहलेही कहा–प्यारी ! "मैं इतनेदिनतक पिशाचिनीकी मायामें भूलाहुआ था। मेरी सुधि बुद्धि जाती रही थी। अब वह पिशाचिनी नहीं है न उसकी माया है । अब मुझे ज्ञान हुआ है "।

गिरजा लम्बी साँस लेकर बोली–" वह तो सती लक्ष्मी भाग्यवान थी उसको पिशाचिनी न कहो । नाथ ! जो तुम्हारे जैसे स्वामी और एक मात्र पुत्रको रखके मरी है उसके ऐसा भाग्यवान् कौन होगा ? "

रामप्र०–" उसका व्यौहार ऐसा था कि,उसे पिशाचिनी कहना चाहिये। उसने तुम्हारे साथ क्या क्या किया सो विचारो तो ? "

गिरजा–" वह अब स्वर्गको गयी है। हमारी बात सुनने नहीं आवेगी लेकिन मैंने आजतक उसका कुछ कुसूर नहीं देखा । वह अभी अबोध लड़की थी । जिसने जो बताया उसने वैसाही किया, इसमें उनका कुछ दोष नहीं है । "

राम०–"अगर इसमें उसका दोष नहीं है तो सब दोष हमारा है । "

गिरजा अबकी गरज उठी और बोली–" तुम्हारा दोष ! कौन कहताहै ? ऐसा जो कहेगा, उसको नरकमें भी जगह नहीं मिलेगी । तुम्हारे समान स्वामीका कुछ दोष होही नहीं सकता । "

धन्य गिरजा ! तुम धन्यहो ! !

रामप्रसाद स्थिरदृष्टिसे गिरजाके मुँहकी शोभा देखते थे । हठात् उनके मुँहसे निकल गया—" तो फिर किस का दोष था ? "

गिरजा बोली—" सब हमारे नसीब का दोष था। नसीब बिगड़े बिना तुम्हारे समान स्वामी पाकर भी स्वामीके सुखसे वञ्चित कैसे हो सकती थी ? "

रामप्रसादने लम्बी साँस लेकर कहा—" तुम नसीबका दोष देकर हमको सन्तोष देना चाहती हो, लेकिन ऐसा नहीं होगा । अब मैं पागल नहीं हूँ । मैंने सब समझ लिया है । सबके पापकी सजा तो हो चुकी लेकिन हमारे पापका अभी कुछभी प्रायश्चित्त नहीं हुआ है । "

गिरजा विस्मित होकर बोली—" तुम्हारा पाप क्या ? "

"अगर प्यारी तुम माफ़ करो । हमको माफ़ करो" कहते कहते रामप्रसाद रो उठे. गिरजा अपने अञ्चलसे रामप्रसादकी आँखें पूँछकर बोली—" नाथ ! अगर तुमपर हमारे विश्वासमें जराभी कमी हुई हो तो भगवान् करे मैं दूसरे जन्ममें तुमसे वञ्चित होऊँ । इससे भला और क़सम क्या होगा ? "

इतना कहते कहते गिरजाके गालोंपर भी आँसू दीखपड़ा । रामप्रसादने तुरंत अपने हाथसे आँसू पोंछ दिया गिरजा फिर बोली—"नाथ ! इसमें तुम्हारा क्या दोष है ? मैंनेही तो तुमको दूसरा व्याह करनेको कहाथा क्या मुझको वह बातें याद नहीं हैं । मैंने ही तो कहाथा कि, तुम्हारी सैकड़ों में मैं एक दासी होनेपर भी अपनेको धन्यमानूँगा । इसमें तुम्हारा क्या पाप है ? मैं ही इसमें तो पापिनी हूँ । नहीं तो उस समय तुम्हें सुख होनेसे मैं भी सुखी क्यों न हुई ?"

रामप्रसादने लम्बी साँस लेकर कहा—"तुम को भूलकर प्यारी मैं क्या सुखी हुआथा ? मैं तो एक दिनभी सुखसे नहीं बितासका । हमको

तो वह सब बातें सपनेसी याद आरही हैं । माने लड़का लड़का करके यह सब सत्यानाश किया था. अब लड़का पाकरही मैं चतुर्भुज हुआहूँ ”

गिरजा–“माका कुछ दोष नहीं है सब मा ऐसाही करती हैं और सुनते भी हैं कि, व्याह लड़केही बच्चेके लिये कियाजा है ”

राम०–“और रेखियाने सच पूँछो तो हमारा सब घर मिट्टी करदिया। अब की वह अपने कर्मका खूब फल भोगेगी !!

गिरजा–“मैं तो प्रभू ! किसीको दोष नहीं देती प्रारब्धही सबकी जड़ है जो नसीबमें लिखा है उसको कोई मिटा नहीं सकता. फुआका भी कुछ कसूर नहीं है. वह बेचारी इस वक्त बड़ी विपत्ति में पड़ी है परमेश्वर उसकी रक्षाकरे । ”

रामप्रसाद मानो पागलकी तरह बोल उठे अरे ! तुममें इतना गुण है ! दुश्मनपर भी इतनी दया ! मैं बड़ानराधम हूँ । नहीं तो उस कुलाङ्गारिनीकी मायामें कैसे भूलता ! और तुम जैसी लक्ष्मीको क्यों भुलादेता ! मैं तुम्हारा इतना अनादर करता ? अब मैं यही आशिर्वाद करताहूँ–”

रामप्रसाद वेगवान हृदयका वेग नहीं रोकसके आशिर्वाद के बदले गिरजाको आलिङ्गन करके उसका मुँह चूमनेलगे और गिरजा स्वामी के आदरसे गद्गद होकर प्रार्थना करने लगी–“नाथ ! तुम मुझे यही आसीस दो कि, मैं जैसे तुम्हारे आदरसे सुखी होती हूँ वैसेही तुम्हारे निरादर करनेसे भी सुखी होऊं. इससे बढ़कर हमारे लिये और आशिर्वाद नहीं है।”

रामप्रसादने मनहींमन क्या आशिर्वाद किया सो हम नहीं जानते। लेकिन फिर गिरजा का मुखचुम्बन करते हमने अलबत्ते देखा था।

सैंतीसवाँ अध्याय।

रामप्रसाद के लड़के का नाम सुबोधसिंह है. सुबोध इस समय पाँच बरस का है, लेकिन सुबोध यथार्थ में सुबोध है। ऐसा धीर और शान्त

लड़का देखने में नहीं आता । सुबोध मा बाप और पितामहीं का जीवन स्वरूपथा । विशेषतः गिरजा यदि क्षणभर भी सुबोध को नहीं देखती तो चारों ओर अन्धेरा छा जाताथा । सुबोध भी "मा मा" कहकर अज्ञान होपड़ता था । पुत्रपर माता का स्नेह जो सब से अधिक होता है उसके अनेक उदाहरण मिलेहैं । लेकिन सौतेली मा (मयमा) सौत के लड़के को इतना प्यार करती हुई नहीं देखी गयी ।

रामप्रसाद के घरमें अब आनन्दकी सीमा नहीं है. गिरजा के बाप की दी हुई धन सम्पति सब अब रामप्रसाद के हाथ आयी है । रामप्रसादने उसकी आमदनीसे और जगत् जमीन खरीद ली है । अब रामप्रसाद धन में एक बहुत बड़े आदमी होगये हैं । फिर जिसघर में गिरजा सी लक्ष्मी घरनी है उस घरमें लक्ष्मीका टिकना तो अवश्यही है रामप्रसादकी माका स्वभावभी अब बदल गया है. अब वह पहलेकी तरह झगड़ा कलह और क्रोध नहीं करती. अब वह जिसतरह अपने घरकी मालिकी करती हैं उसी तरह अपने वैरी परभी कर्तृत्व करती हैं और रामप्रसादके घरमें आनन्दका एकमात्र आधार सुबोधसिंहहै सुखमें जिस बातका अभाव होता है उसकी पूर्ति यही सुबोध करता है. धन्य शिशु सुबोध ! धन्य तुम्हारी क्षमता !!

एक दिन रामप्रसादने गिरजासे कहा—" क्यों प्यारी ! आजकल तो तुम्हें नौकर नौकरानीकी कमी नहीं है फिर तुम खुद इतना मिहनत करके अपना शरीर क्यों मिट्टी कररहीहो ? "

गिरजाने मुसकुराकर जवाब दिया—" मिहनत करनेसे तो शरीर मिट्टी नहीं होता शरीर और अच्छा रहताहै । "

रामप्रसाद फिर कहने लगे—" इतनी मिहनत करनेसे शरीर अच्छा थोड़े रहता है तुमको इतनी मिहनत का क्या जरूर है ? "

गिरजा फिर हँसकर बोली—" मुझे सब काम अपने हाथसे देखे बिना सन्तोषही नहीं होता " ।

रामप्रसाद–" यह ठीक है, लेकिन रोज रोज इतनी मिहनत ठीक नहीं है उसपरसे रोटी पानी करनेकी मिहनत ...."

गिरजा–" दूसरे के हाथका बनाया भोजन तुम्हें खिलाना हमें अच्छा नहीं लगता इसीसे अपने हाथसे बनाती हूं फिर तुमको भोजन कराने से जो मुझे आनन्द मिलता है उससे अधिक सुबोधको खिलानेसे मिलता है। मैं अपने सिवाय किसीके हाथसे सुबोधको खिलाना पसन्द नहीं करती और तो औरहीहैं मैं माजीका भी विश्वास नहीं करती ॥ "

इतनेमें रामप्रसाद के मनमें कौनसी बात याद आयी मुसकुराकर बोले "अच्छा यह तो बतावो ! तुम हमको अधिक प्यार करती हो कि, सुबोध को ? "

गिरजा इसका तुरंत कुछ जवाब न देसकी लेकिन कुछ देरतक सोचकर बोली–" दोनों आदमियोंको बराबर प्यार करती हूँ "।

राम०–" बराबर ! कुछभी कमवेस नहीं ? "

रामप्रसादकी मुसकुराहटके साथ इस बातको सुनकर गिरजा बड़े अस-मञ्जसमें पड़ी एक बातके विचार करनेसे रामप्रसाद का प्यार अधिक होता है दूसरी बातसे सुबोधका पलड़ा भारी होता है । अब गिरजा क्या जवाब देगी ? लेकिन रामप्रसाद किसी तरह माननेवाले नहीं है । वह बिना जवाब लिये नहीं छोड़ते लाचार होकर गिरजाको जवाब देनाही पड़ा । " तुम्हींसे तो सुबोध मिले हैं इस कारण तुम जड़हो और सुबोध डाढ़ (टहनी) हैं । अगर तुम्हारा खानापीना एक दिन मैं न देखूं तो दुःख नहीं होगा । लेकिन सुबोधको एक वक्तभी अगर अपने हाथसे मैं न खिलाऊं तो जानपड़ताहै आज मेरे बच्चाका भोजनही नहीं हुआ । तुम बहुतसे काम काजमें बाहर बहुत रहतेहो । तुमको देखने के लिये हमारा मन बहुत व्याकुल होता है सही, लेकिन जब सुबोध बाहर खेलने जाता है और आने में कुछ देर होतीहै तो मेरा कलेजा फटने लगता है अकुलाहटके मारे कुछ सूझता नहीं है।

गिरजाका जवाब सुनकर रामप्रसादके आनन्दकी सीमा नहीं रही। इस जगत्में मनुष्य सबकी हिंसा करताहै, किन्तु पुत्रकी हिंसा कोई नहीं करता. सब लोग चाहते हैं कि, हमारा लड़का हमसे भी बुद्धिमान्, विद्वान् और बड़ा हो । रामप्रसाद आनन्दके मारे अधीर होकर मुख-चुम्बन करने लगे । गिरजाका आनन्दसागर और उथल उठा । दोनों आनन्द वेग थम्हनेके पहलेही सुबोध वहाँ आ पहुँचा । गिरजाने दौड़-कर सुबोधको गोदमें लेलिया । और स्वामीका मुँह चुम्बन करके स्वामी के चुम्बन का पलटा लेने लगी । लेकिन यह क्या ! आज सुबोधका मुँह इतना उदास क्योंहै ? जो सुबोध माकी गोदमें आतेही आनन्दके मारे बड़े शत्रुकोभी मोहित करलेताथा । आज उसकी हँसी कहां गयी ? आँखें क्यों डबडबायीं हैं । गालों से आँसू क्यों ढरकरहे हैं ! ऐसी हालतमें गिरजा क्या स्थिर रहसकतीहै ?

पुत्रका यह हाल देखकर गिरजा का प्राण सूखगया उसके मुहँसे बात नहीं निकली । रामप्रसादने व्यग्र होकर पूँछा—“ क्यों बेटा ! क्या हुआ ?

सुबोध बापकी बातका जवाब न देसका । माता का गलापकड़कर रोने लगा । रामप्रसाद और व्यग्र हुए । अपने हाथसे सुबोधका आँसू पों-छकर बोले—“क्यों बेटा ! क्या हुआ है ? बोलो क्यों नहीं ? किसीने तुम को मारा है या गाली दिया है ? ”

अबके बडे दुःखसे गिरजा बोली—“ नहीं, नहीं ! हमारा सुबोध ऐसा नहीं है किसीने सुबोध को मारा नहीं न गाली दिया है ! हमारा जी बहुत घबराता है न जाने बच्चाको क्या हुआ है ? ”

बापके मनमें इसतरहकी कुछ शंका नहीं थी किन्तु माका प्राण पुत्रकी पीड़ासे सदा शंकित रहता है गिरजाकी बात सुनकर रामप्रसाद का चित्त और व्याकुल हुआ । घबराकर बोले- “काहे बेटा ! तुम्हारा शरीर कैसाहै?”

मा बापके बाह्याकार से उनके मनकी दशा बालकको भी समझने

से बाकी नहीं रहा । सुबोध रोकर बोला—"नहीं मा ! रोवो मत मेरा शरीर अच्छा है ।"

बेटेकी बातसे मा बापका चित्त कुछ स्थिर हुआ गिरजा सुबोधका मुँह चूमकर बोली—"तो क्या किसीने तुमको कुछ कहा है ?"

मा की बात सुनकर बालककी आँखे फिर डबडबा आयीं । रामप्रसादने आग्रहकरके कहा—"काहे बेटा ! किसने तुमको क्या कहाहै ?" सुबोधने अबके आँसू पोंछते २ कहा—"नहीं बाबू ! रामनेवाज और गोपाल के साथ मैं खेलरहाथा । न जाने माके वास्ते कैसाजी होने लगा मैं खेल छोड़कर चलाआताथा । वह सब बोले कि, अभी मतजाव । मैंने कहा अब मैं नहीं खेलूँगा । माके वास्ते न जाने कैसाजी हो रहा है ! तब वह बोले कि, तेरी मा तो मरगयी । जिसको मा कहता है वह तो तेरी मयमा है । काहे मा ! तू मेरी मा नहीं है मयमा है ?"

अन्त की बात कहकर सुबोध डबडबायीं आँखोंसे माकी ओर देखने लगा. गिरजा का सिर इस बातसे चक्कर खाने लगा. रामप्रसादने चट बेटेकी बातका जवाब दिया—" नहीं बेटा ! नेवाज और गोपाल झूठ कहते हैं । जो मरगयी वह तुम्हारी मा नहीं वही मयमाथी यही तुम्हारी माहै" ।

बालकका मुँह प्रफूल्ल हो आया । हँसते मुँहसे बोला—" बाबूजी ! मयमा कौन कहाती है ? "

रामप्रसादने कहा—" माके वैरीको मयमा कहते हैं"

बालक का आनन्द चौगुना बढ़गया । अबके सुबोध हँसकर बोला—तो मा ! मैं नेवाज और गोपालको यह बात कहआऊँ ? "

किन्तु माने बालकको नहीं जाने दिया ! स्नेहपूर्व्वक पुत्रका मुख चुम्बन किया ।

रामप्रसाद का दिन सुखसे बीतने लगा घर से कुमति और विपत्ति

दूर हुई । आनन्दही आनन्द चारों ओर बरसने लगा । गिरजा स्वामी और पुत्रके प्यार तथा सासकी सेवामें दिन बिताने लगी । रामप्रसाद की माका समय नित्य स्नान ध्यान पूजापाठ और व्रतादि शुभकर्म्मों में बीतने लगा । रामप्रसाद का उजड़ा हुआ घर फिर बसा ! गयी हुई शोभा फिर पलट आयी और पहलेसे भी यह गहगहा उठी । परमेश्वने जैसे उनका दिन फेरा वैसे सब का फेरे ।

डबल बीबी समाप्त.